स्वर्गीय साम्य रतनचन्दजी जैन

पिताजी,

भगवान महावीरकी वाणी के अनुसार*
आप का ऋण चुका नहीं सकता।

मम पुत्र
प्यारीलाल

*"तिण्हं दुप्पडियारं समणाउसो! अम्मापिउणो भट्टिस्स धम्मायरियस्स"
हे चिरंजीव शिष्य! मातपिता पोषक और धर्माचार्य—इन तीनोंके
उपकारका बदला देना असंभवप्राय है। —(स्थानांगसूत्र, सूत्र ११५)

स्वर्गीय
लाला रतनचन्दजी
का
संक्षिप्त परिचय

लाला रतनचन्दजी का जनम चैत्र शुक्ल अष्टमी विक्रम संवत् १९४५ को अमृतसर में हुआ। जिनके पिता का नाम लाला जगन्नाथजी था और माता का नाम जीवनदेवी है। बचपन से ही आप बहुत होनहार और प्रतिभाशाली बालक थे। १२ साल की छोटी सी अवस्था में ही आप अपने पिताजी के साथ मूंगा के कारोबार में शामिल हो गये। १७ वर्ष की आयु में ही कलकत्ता जैसे बड़े शहर में अकेले जाकर पारिवारिक कारोबार की उन्नति की।

आपने न केवल व्यवसाय में ही बल्कि अनेक सामाजिक और धार्मिक कार्यों में भी सदा बढ़चढ़ कर हिस्सा लिया और हर जगह पूर्ण सफलता प्राप्त की। पंजाब की समस्त जैन सम्प्रदाय में आप सर्वप्रिय थे। पंजाब एस एस जैन सभा में आपने बहुत काम किया और अपने साथियों की सहायता से बहुतसी सामाजिक कुरीतियों को जड़ से उखाड़ने में सफलता प्राप्त की। जिस वर्ष आप की मृत्यु हुई आप सभा के प्रधान थे।

आप अपने धर्म के पक्के विशाल हृदय और प्रगतिशील विचार के आदमी थे। आप कभी किसी का बुरा न सोचते। कई बार विचारधारा की भिन्नता के कारण अपने साथियों से गुस्सा हो जाते, परन्तु जल्दी ही उसे भूल जाते और कभी बदले की भावना मन में न रखते थे।

सन् १९११ में All India S. S. Jain's Conference ने जब अजमेर में साधु सम्मेलन करने का विचार किया था तो उस सिलसिले में कमेटी साधुओं को संमेलन में एकत्रित करने के लिये व उस को सफलता देने के लिये भ्रमण में गई थी पंजाब की ओर से चुने गये उस कमेटी के मेम्बरों में एक अग्रणी आप भी थे। जिन्होंने सारे भारतवर्ष में भ्रमण कर के उस साधु–संमेलन की सफलता के लिये काम किया।

व्यापार में आप हमेशा सत्यवादी थे और अपने सद्गुणों के कारण अपने कार्यों को बहुत तरक्की दी। जिस को उन के सब से छोटे भाई लाला हंसराजजी के नेतृत्व में सारा परिवार तरक्की पर ले जा रहा है।

पूज्य सोहनलाल जैन धर्म प्रचारक समिति–वाराणसी के आप स्थापकों में से थे और जीवनभर समिति के हर काम में पूरा पूरा हिस्सा लेते रहे। आप के इसी प्रेम के कारण आप के सारे परिवार को समिति के साथ विशेष अनुराग है और उन के भाई लाला हरजसरायजी के नेतृत्व में वे सब समिति के काम में पूरा सहयोग दे रहे हैं।

लाला रतनचन्दजी का स्वर्गवास १६ फरवरी १९४१ ईसवी को अमृतसर में हृदय की गति रुक जाने से हुआ।

प्रस्तुत पुस्तकमें महाकवि धनपालका जीवन वृत्तान्त दिया गया है। उसकी हिन्दीभाषाकी शुद्धिके लिये एम. बी. आर्ट्स् कोलेज के हिन्दी के प्रधान अध्यापक भाई रणधीरभाईने जो सहायता दी है उसके लिये मैं उनका सविशेष आभारी हूँ।

बेचरदास

पाइअ–लच्छीनाममाला

प्राकृतकोश का प्रकाशन

१

आजकल प्राकृतभाषाओं का अभ्यास बढ़ रहा है. जिनधर्ममंदिरों महाविद्यालयों तथा विद्यापीठों तक प्राकृतभाषाके अभ्यासकी व्याप्ति हो चुकी है. उसके कई छोटे बड़े प्राचीन व्याकरण भी प्रकाशित हो गए हैं, ये सब व्याकरण संस्कृत के माध्यमसे लिखे गए हैं, अतः सबको सुगम नहीं होते, इसी कारण से कई संस्थाओंने तथा पंडितोंने लोकभाषा गुजराती, हिन्दी तथा बंगाली में भी प्राकृतभाषाओंके छोटे मोटे व्याकरण सबको सुगम हो इसके लिए रच कर प्रकाशित किए हैं. हमारे सहाध्यायी और प्रियमित्र स्व. पंडित हरगोविंददासजी सेठने 'पाइअसद्दमहण्णवो' (प्राकृतशब्द महार्णव) नामका एक अच्छा बड़ा कोश भी हिंदी में बनाकर प्रकाशित किया है। यद्यपि यह कोश आजकल महंगा है और दुर्लभ—दुर्लभ भी है। फिर भी यह कोश विद्यार्थियों का तथा विद्वानों को प्राकृतभाषाके अध्ययनके लिए बड़ा सहायक बना है.

इस प्रकार प्राकृतभाषाके अभ्यासके लिए वर्तमान में अच्छी साधन-सामग्री उपलब्ध है। फिर भी छोटे व्याकरण की तरह प्राकृत भाषाके एक छोटे कोशकी अपेक्षा बनी रहती है, जिसको सब विद्यार्थी व अध्यापक खरीद सकें. यह कोश हिंदीमें भी हो और अंग्रेजी में भी हो यह भी अपेक्षित है इस अपेक्षा को ध्यानमें रख कर यह एक छोटा प्राचीन प्राकृत शब्दकोश प्रकाशित किया जा रहा है. कागज तथा छपाई वगैरह का व्यय अत्यधिक बढ़ जाने पर भी इस कोश को अधिक उपयोगी बनानेका विचार किया है, जिससे सब छात्र व अध्यापक इसका उपयोग कर सकें तथा वे अपने प्राकृतभाषाके अभ्यासमें समुत्साहित होकर आगे बढ़ सकें.

प्राकृतकोश के प्रकाशन का इतिहास

२

यद्यपि भारतीय जनता विद्याप्रेमी नहीं है ऐसा नहीं, 'विषयाऽमृत-मस्तुत न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते पढमं नाणं तओ दया' (प्रथम ज्ञानम् तत दया) इस प्रकारकी घोषणाएं भी भारतीय जनता आज हजारों वर्षों से सुनती आइ है, फिर भी पूर्व की अपेक्षा आज कल पश्चिममें जिस प्रकार ज्ञानभानु वा विज्ञानभानु उदित होकर अधिकाधिक चमकता रहा है इसका वर्णन करना कठिन है पश्चिमके पंडितोंने बडी बडी कठिनाइयों को सहकर भी पूर्व के विविध शास्त्रोंके अतिशय सुंदर संपादन व प्रकाशन किये हैं तथा वर्तमान में भी करते हैं ये संपादन व प्रकाशन इतनी उत्तम कोटिके होते हैं जिनको पढकर हम तो आनंदविभोर हो जाते हैं और लज्जासे अधोमुख भी.

ये पश्चिमके लोग हमारी परिभाषामें अनार्य हैं या म्लेच्छ हैं तो भी उनकी ज्ञानपिपासा कितनी उत्कटतम है, यह सोचकर आनंद होता है और हम आर्य–आर्यत्वके बडे अभिमानी होकर भी हमारे ही ग्रन्थों के उत्तमोत्तम प्रकार के प्रकाशनमें व संपादनमें कितने मंदतम है, इस सोचसे अधोमुख ही होना पडता है

देखिए पश्चिम के पंडितोंका कितना बडा पुरुषार्थ है कि आजसे करा-बर अस्सी वर्ष पूर्व अर्थात् ईसवीसन् १८७९ में डॉ. बुल्हर महाशयने बडे प्रयत्नसे पाइयलच्छीनाममाला (प्राकृतलक्ष्मीनाममाला) नामका महाकवि धनपालविरचित एक छोटा कोश मूलसहित पाठांतरसहित अपने देशमें छपा और उसमें अंग्रेजीमें अर्थोंके साथ एक अकारादि शब्दानुक्रम भी लगा दिया

अधिक आश्चर्य की बात तो यह है कि जब हमारे देशके पंडितगण प्राकृत किस चिडिया का नाम है यह जानते थे या नहीं यह विचारा-स्पद है और जो जानते थे वे जैन मुनिमहाराज तो बिलकुल इस प्रकाशनके

शोस सर्वथा अनभिज्ञ थे और जैन श्रावक तो शास्त्रको पढ़ते ही नहीं थे. ऐसी परिस्थितिमें एक जर्मन पण्डितने इस प्राकृत कोशका अच्छेसे अच्छा संपादन व प्रकाशन किया है. दुःखी तो यह है कि भारतीय पंडित व मुनिजन सदाकाल सरस्वती पूजनमें और ज्ञानपंचमी के पूजनमें बड़ा रस रखते आए हैं. फिर भी उनको अपने शास्त्रों का अच्छा प्रकाशन व संपादन का कार्य नहीं सूझा, इतना ही नहीं कुछ पंडित तो ऐसे भी विद्यमान थे जो प्रकाशन प्रवृत्ति के ही खिलाफ थे ऐसी भारी अज्ञानदशामें हो सुन्दर महात्मने इस कोशको छाप कर हम पर बड़ा ही उपकार किया है ऐसा कहने में व मानने में अवश्य भी अयुक्ति नहीं है

आजसे चमालीस साल पहिले अर्थात् विक्रमसंवत् १९७१ में हमने ही पी. बी. एम् महाशयोंकी मंडलीके नामसे फिर उस कोशको अच्छी तरहसे संशोधित करके और साथमें प्राकृत शब्दों के संस्कृत समानरूपोंको तथा गुजरातीमें अर्थ को दे कर और शब्दोंका अकारादि अनुक्रम लगाकर के छपवाया था. यह हमारा प्रकाशन अभी सर्वथा अप्राप्त है.

उसके बाद विक्रम संवत् २००३ में इस कोश को श्रीकेसरबाई जैन ज्ञान मंदिर पाटण (उत्तर गुजरात) ने फिर छपवाया उसमें संपादकने संस्कृत के समानशब्दों के साथ कारादिक्रम प्राकृत शब्दों का अनुक्रम नहीं दिया है इस प्रकारके संपादनसे पुस्तक तो तैयार हो जाती है परंतु कौन शब्द किस जगह है इसका पता कोई विद्यार्थी व अन्य जिज्ञासु कैसे लगा सके! बिना शब्दानुक्रम दिये यह कठिनाई दूर नहीं होती.

भाई शांतिलालजी जैन का सत्कार

(१)

अब हम फिरसे इस कोश का प्रकाशन कर रहे हैं. हमारे परममित्र और जैनधर्म के यथार्थ प्रेमी तथा जैनसमाज के प्रसिद्ध भाई शांतिलालजी जैन (अमृतसर वाला—संचालक मा. मि. एम. बरड एंड कं० बंबई) की संपूर्ण आर्थिक सहायता पाकर हम इस प्रकाशनको तैयार करनेमें समर्थ

हुए हैं इस काममें उनकी प्रेरणा तथा सहायता न होती तो हम इस कामको नहीं ही कर पाते. अतः कोशके उपयोग करनेवाले विद्यार्थी व जिज्ञासु गण तथा हम भी मान्य शार्दूलमलजी बैनके बडे आभारी हैं और हम आशा करते हैं कि सानुवाद प्राकृतव्याकरण (आ हेमचंद्र कृत) इत्यादि और भी ऐसे उपयोगी ग्रंथोंके प्रकाशन करने में वे जरूर इस प्रकारकी अपनी सहायता देनेकी परंपरा चालू रखेंगे.

प्रस्तुत संपादन का परिचय

४

इस संपादन को हमने अपने प्रथम संपादनके ढंगसे प्रकाशित किया है. शब्दों के अर्थ प्रत्येक पन्नेमें हिंदीमें दिये हैं तथा पीछे कोशमें आए हुए सभी शब्दोंका अकारादि क्रमसे अनुक्रम तथा हिंदी और अंग्रेजी इन दो भाषाओंमें अर्थ बताया है. अब कोई विद्यार्थी हिंदी नहीं जानता ऐसी बात नहीं है– गुजरातके क्या और महाराष्ट्रके क्या सभी विद्यार्थी हिंदी अनिवार्य रीतिसे पढते हैं अतः हिंदीमें अर्थ बताना समुचित है और जो विद्यार्थी व जिज्ञासु हिंदी नहीं जानते परंतु नागरी लिपि जानते हैं और प्राकृतभाषाके अभ्यासमें रस रखते हैं ऐसे दाक्षिणात्य प्रांत के तथा पश्चिम के जिज्ञासुओं के लिए हमने अंग्रेजीमें भी अर्थ बताना समुचित समझा है. अंग्रेजीके अर्थ के लिए हमने जो पुस्तककी शाब्दिक सहारा लिया है उसकर्म साहत जो पुस्तकके हम सविशेष आभारी हैं. हम खुद इतना अच्छा अंग्रेजी नहीं जानते हैं, इससे अंग्रेजीके द्वारा अर्थप्रदर्शन में हमारी अनेक गलतियाँ जरूर हुई होंगी, इसके लिए हम सब जिज्ञासुओंसे क्षमा मांगते हैं तथा इस संबंधमें सूचन करने की भी उनको सविनय विनंति करते हैं.

मुनि श्रीजिनविजयजी का सूचन

५

पहिले तो हमारा विचार केवल हिंदीमें ही अर्थ देनेका था, परंतु जो

एक फारम कोशके छप चुके तब हम हमारे स्नेही और माननीय मुनिश्री जिनविजयजीके पास वे फारम लेकर उनके अनेकांत विहारमें (अमदावाद) पहुंचे मुनिजीने फारम को देख कर प्रसन्नता प्रकट की और हिंदी के साथ अंग्रेजीमें भी अर्थ देनेकी खास प्रेरणा की. उनकी यह प्रेरणा हमको भी समुचित जंची अत छपे हुए उन दो फारमों को हमने रद कर दिये और शुरूसे अंग्रेजी में अर्थ लगाकर कोश का प्रकाशन किया श्रीमुनिजी के उक्त सूचनके लिए हम इधर उनका सादर स्मरण करते हैं

सहायक

१

कोशकी सारी प्रेसकॉपी तथा शब्दानुक्रमकी भी सारी प्रेसकॉपी हमारी छोटी पुत्रवधू चि. पुष्पा परिवन बड़े उत्साहसे कर दी है तथा हमारे विद्यार्थी भाई कानजी मथुराराम पटेल (बी. ए. अर्धमागधी ओनर्स) ने कोशके अंग्रेजी अर्थवाले भागकी सारी प्रेसकॉपी करने में तथा उसके संशोधनमें पूरी मेहनत की है एतदर्थ हम उक्त दोनों महानुभावोंका इधर सस्नेह स्मरण करना खास समुचित समझते हैं छपने के लिए शारदामुद्रणालय के मालिक और हमारे स्नेही भाई गोविंदभाई शाह तथा सुप्रसिद्ध लेखक भाई बालाभाई (जयभिक्खु) देसाईने वसंतप्रेसमें प्रबंध कर दिया है. वे प्रबंध न कर देते तो हमसे कोश का प्रकाशन नहीं हो सकता यह निश्चित हकीकत है अतः एतदर्थ उन दोनों महाशयों के भी हम सविशेष ऋणी हैं। वसंतप्रेसके फोरमेन भाई शांतिभाईने भी हमारे इस काममें दिलचस्पी लेकर यथाशक्य कामको अच्छी तरहसे संपन्न करने में योग दिया है अत इन भाई का भी नामस्मरण इधर अवश्य करना चाहिए.

१२ ब भारतीनिवास
अमदावाद ६
सप्टेंबर १९५९

संपादक

प्राकृत भाषा का संक्षिप्त परिचय

१

प्रकृति शब्दका अर्थ स्वभाव है अर्थात् जो भाषा मनुष्यकी स्वाभाविक है उसका नाम प्राकृत भाषा–तात्पर्य यह हुआ कि जो भाषा जिनकी मातृभाषा है– जन्मते ही जो भाषा जिनको अपनी माताओंसे प्राप्त है– जिस भाषाको बोलने के लिए किसी भी प्रकार की किताबों का अभ्यास जरूरी नहीं है उस भाषाका नाम प्राकृत भाषा प्राकृत शब्दका ऊपर जो अर्थ बताया गया है वह उसका यौगिक अर्थ है– नामानुरूप अर्थ है

इस अर्थको लेकर जगतकी सब मातृभाषायें प्राकृत के अर्थमें आ जाती हैं– क्या गुजराती, क्या मराठी, क्या बंगाली, क्या अंग्रेजी और क्या रूसी वगैरह सब भाषाएं जिन जिनकी मातृभाषारूप हैं वे उन उनके लिए प्राकृतरूप हैं

प्रस्तुत में जिस भाषाका संक्षिप्त परिचय देना है वह एक समय में भारतीय आमजनताकी बोलचालकी–जन्मजात–भाषा थी, अतः यद्यपि वह भाषा वर्तमान में किसीकी भी मातृभाषा नहीं है–जन्मजात भाषा नहीं है तो भी उसके पूर्वके स्वरूपको लक्षकर वह वर्तमानमें जन्मजात भाषा न होकर भी 'प्राकृत' शब्दसे प्रसिद्धि पा चुकी है—

यह भाषा वर्तमानमें केवल साहित्यिकरूप में विद्यमान है– नाटकोंमें, जैनग्रंथोंमें तथा बौद्ध पिटकग्रंथोंमें विशेषत प्राकृतभाषा का व्यवहार हुआ है.

वर्तमानमें हमारी भारतीय आर्यभाषानुसार सब भाषाओंके विकासके मूलमें यह ही भाषा है–गुजराती मराठी सिंधी पंजाबी बंगाली वगैरह भाषाओंमें द्विवचनका कोई अलग रूप नहीं है– प्राकृत में भी द्विवचनका कोई अलग रूप

नहीं हैं भूतकालके तथा भविष्यकालके विविध प्रकार उक्त भाषाओंमें नहीं हैं— प्राकृत में भी भूत भविष्यके कोई विविध प्रकार नहीं हैं उक्त भाषाओंमें निसर्गत संयुक्तव्यंजन युक्त शब्द अत्यंत कम हैं— जो अभी अधिकाधिक दृष्टिगत होते हैं वे संस्कृतके संसर्गसे आये हुए हैं— प्राकृत भाषामें भी संयुक्तव्यंजन युक्त शब्द अत्यंत कम हैं. क्रियापदों के प्रयोगोंमें उक्त भाषाओं में कोइ अटपटी व्यवस्था नहीं है—सरल समान व्यवस्था है— प्राकृत भाषामें भी क्रियापदोंके सब प्रयोग एकदम सरल सुगम हैं नामोंके रूप तथा प्रत्यय उक्त भाषाओंमें करीब करीब समान होते हैं—प्राकृत भाषामें भी नामोंके रूप तथा प्रत्यय करीब करीब समान—सुगम होते हैं. हमारी वर्तमान उक्त सब भाषाओं के साथ प्राकृतभाषाका तुलनात्मक अन्वेषण व परीक्षण करनेसे उन भाषाओंके साथ प्राकृत भाषाका विशेष अनन्तर संबंध स्थापित हो चुका है. अत उक्त भाषाओंके इतिहासको बराबर समझने के लिए, हमारे पूर्वजों के साहित्य को समझनेके लिए और हमारी संस्कृतिके स्वरूपको समझने के लिए भी प्राकृतभाषाका अभ्यास अनिवार्य है.

इसी हेतुसे जिनमंदिरोंसे लेकर विद्यापीठों तक के अभ्यासक्रममें प्राकृत भाषाका अभ्यासक्रम नियत किया गया है गहराइसे तुलनात्मक परीक्षण द्वारा भाषाशास्त्रके अन्वेषकोंने भी वेदोंकी भाषाके साथ प्राकृतभाषा का घनिष्ठ संबंध सिद्ध कर बताया है इससे स्पष्ट प्रतीत होता है कि प्राकृतभाषा कितनी प्राचीन है.

देखिए —

वैदिकरूप		प्राकृतरूप
	क्रियापद	
१ हनति		हनति हणति हणइ
२ शमते		समते, समए
३ भेदति		भेदति—भेदइ

४ मरते	मरते, मरति
५ याति	याति—याइ
६ वाति	वाति—वाइ
७ मोमते	मोमते—मोमए
८ वर्धन्तु	वड्ढंतु
९ वर्धते	वड्ढते, वड्ढए
१० कृणोति	कुणति
११ भिन् (धातु)	भिण्
१२ मथीत्	मथीअ
१३ दुहे	दुहिरे
१४ कर्त्वे	कत्तवे कातवे करिणए

नामरूप

१५ पनिना	पनिना पइणा
१६ गोनाम्	गाणं, गुणं गोणं
१७ युष्मे	तुम्हे
१८ अस्मे	अम्हे
१९ ग्रीवाम्	गिवाइ, गिवं
२० नावया	नावाम नावाए
२१ देवेभिः	देवेहि
२२ इमाम्	इमं, इमं
२३ आसर्वभिः	आसाहिं
२४ मासम्	मांसं
२५ सा चित्	सो चि

उक्त वैदिकरूपों का व्यवहार मात्र वेदमें होता है. प्राकृतों का कालकी कैसे कोई सामरीय साहित्यमें नहीं होता है. उक्त वैदिक क्रियापदोंके तथा

नामरूपों के स्थानमें कालिदास या बाणभट्ट जिन रूपोंका प्रयोग करते हैं वे अनुक्रमसे इस प्रकार हैं—

१ हन्ति
२ शेते
३ भिनत्ति
४ म्रियते
५ दधाति
६ ददाति
७ मुञ्चते
८ वर्धन्तु
९ कर्ति

१० करोति
११ जि (धातु)
१२ अमम्नात्
१३ दुहन्ति
१४ कर्तुम्
१५ पथ्या
१६ गवाम्
१७ यूयम्

१८ वयम्
१९ ग्रावाणम्
२ भाषा
२१ देवै
२२ इतरत्
२३ मौपर्यामि
२४ मांसम्
२५ सं चित्

महावैयाकरण श्री पाणिनि तथा अन्य पतञ्जलि महाभाष्यकार, कालिदास बाण वगैरह पण्डितगण इन शब्दप्रयोगों को लौकिक प्रयोगरूप या संस्कृतरूप कहते हैं

ऊपर जो वैदिकरूप प्राकृतरूप तथा संस्कृतरूप दिए गए हैं वे परस्पर अत्यधिक समान हैं, भेद है तो थोड़ा बहुत उच्चारण की शैलीका भेद है, इस प्रकार थोड़ा बहुत शैली भेद से इन रूपोंको लौकिक या संस्कृत कहना तथा वैदिक व प्राकृत रूपों को अलौकिक या असंस्कृत कहना क्या ठीक प्रतीत होता है ? इस प्रकार भेद करनेसे मानवके चित्तमें भाषाविषयक एकता के स्थान में भेद आता है और यह भेद बढ़ते बढ़ते विषमता का रूप लेता है और वर्तमान में इस भेदका नतीजा यह हुआ है कि एक समाज अमुक भाषा को देवभाषा व उत्तम भाषा समझता है और अन्य भाषाको अनुत्तम भाषा समझता है– नीच भाषा समझता है– परिणाम यह हुआ है कि हमारे वर्तमान पण्डित लोग अपने ग्रामीण बंधुओं की भाषा से सर्वथा अनभिज्ञ होनेसे उनसे एकदम विच्छिन्न हो गए हैं और उनको अज्ञानी समझने तक लग गए हैं– यह पाप, कोई कम अनर्थ नहीं माना जा सकता–

यह तो एक प्रकारका देशद्रोह है व आत्मघात है.

दूसरा परिणाम यह हुआ है कि जिन जिन नाटकों में प्राकृतभाषा का प्रयोग हुआ है, संपादक लोग उन प्रयोगों की तरफ उपेक्षित भाव रखकर उनको बराबर समझनेकी कोशिश नहीं कर पाते, अत नाटकों में आए हुए प्राकृत गद्य भाग के प्रयोग तथा पद्य भाग के प्रयोग प्राय आजतक अशुद्ध ही छपते आए हैं और अभी भी अशुद्ध ही छप रहे हैं। इतना ही नहीं बल्कि उन उन नाटकों के इतिकार भी किया ही समझ बुसे प्राकृतप्रयोगों की मनमानी वृत्ति लिख गए हैं जो व्याकरण की दृष्टि अधिकतर शुद्ध नहीं हैं

मेरी समझमें तो ऐसा भाता है कि प्राचीन भाषाओं के प्राकृत संस्कृत अपभ्रंश ऐसे नाम न देकर देशभाषा लोकभाषा जनपदभाषा शास्त्रीयभाषा ऐसे ही नाम प्रचारित करना जरूरी हैं, जिससे प्राचीन भाषा विषयक हमारी मिथ्या अस्मिता व सीमावाली कम हो जाय भाषाका प्रयोजन अर्थबोधन है विचारों को व्यक्त देखें व प्राचीन लोगों के विचार समझने में भाषा एक माध्यमरूप है और भाषाकी सार्थकता इसीमें ही है, इससे ज्यादा किसी भी भाषाका मूल्य ही नहीं है चाहे वह भाषा वेदकी हो जैन व बौद्ध शास्त्रोंकी हो अथवा किसी भी आदिवासीकी हो या किसी ग्रामीण जनकी हो.

प्राकृत का एक व्यापक अन्य अर्थ भी इस प्रकार है पुरानी वैदिक भाषा और शास्त्रीय आर्षशास्त्रानुगत कोई भी हमारी वर्तमान अर्वाचीन भाषा—इन दो भाषाओं के बीच की संक्रमणारूप—अनुसंधानात्मक—जो भाषा है इसको भी प्राकृत नाम दे सकते है

प्राचीन पंडितों के बनाए हुए जो जो प्राकृत व्याकरण वर्तमानमें उपलब्ध हैं वे सब संस्कृत के माध्यमसे किये गए हैं और उन सबमें अमुक अमुक परिवर्तन की प्रक्रिया संस्कृत शब्दों को माध्यम रखकर बताई गई है. अत उन प्राचीन पंडितोंने प्रकृति संस्कृतम् ऐसा भी निर्देश किया है. यह निर्देश केवल माध्यम सापेक्ष है.

किसी अंग्रेज को संस्कृत समझाना हो तो अंग्रेजी शब्दों को माध्यम करके 'काउ' के स्थानमें 'गो' 'कैमल' के स्थानमें 'क्रमेलक', 'स्वेट' के स्थानमें 'स्वेद' त्रि' के स्थानमें 'थ्री' 'फाधर' के स्थानमें 'पितर' इत्यादि बताके समझाना सुगम होता है, इसी प्रकार संस्कृत जानने वालोंको प्राकृतभाषा समझाने के लिए संस्कृत का माध्यम सुगम रहता है इसी हेतु से उन उन प्राकृत व्याकरणोंमें संस्कृतको माध्यम बनाया गया है बाकी प्रकृति प्रयोगका संस्कृतम् अर्थ कभी भी घटता नहीं और किसी भी कोशमें वा ग्रंथमें उसका ऐसा अर्थ निर्दिष्ट भी नहीं. अतः ऊपर कहा गया है कि प्रकृति का संस्कृतम् अर्थ माध्यम सापेक्ष है स्वत नहीं. स्वतः तो प्रकृति का अर्थ स्वभाव ही प्रसिद्ध है और प्रचलित भी है.

प्राकृत शब्दों के प्रकार

२

हरेक भाषामें यौगिक शब्द होते हैं और रूढ तथा मिश्र भी होते हैं. यौगिक का अर्थ है कि जिन शब्दो की व्युत्पत्तिका हमको पता है रूढ का अर्थ है कि जिन शब्दोंकी व्युत्पत्तिका हमको पता नहीं है. मिश्र शब्द वे हैं जिनकी व्युत्पत्तिका हमको कुछ अंशमें तो पता है और कुछ अंशमें पता नहीं है. वैदिक भाषा, प्राकृत भाषा तथा संस्कृत भाषा इन तीनो भाषाओं में भी इन तीनो प्रकारके शब्द हैं रूढ शब्दका दूसरा नाम देश्य शब्द है. प्रस्तुत कोशमें इन तीनों प्रकारके शब्द पाए जाते हैं शब्दकोशमें अनुक्रममें जहां* ऐसा निशान किया है वे सब देश्य शब्द हैं बाकी के शब्दों में से कई शब्द संस्कृत शब्दों के साथ सर्वथा समान हैं और कई शब्द अक्षरांशमें ही समान हैं उन सब शब्दों का एक नाम इधर संस्कृतसम वा तत्सम रक्खा गया है. शब्दानुक्रममें प्रत्येक शब्द के साथ संस्कृतरूप सर्वत्र बताए गए हैं, इसको देखने से इन सब तत्सम शब्दों का पूरा परिचय हो सकेगा

कोश की रचनाशैली

१

कोशकार धनपाल महाकविने प्रारंभकी दूसरी गाथासे लेकर १८॥—साढ़ अठारह गाथा तक सारी—पूरी—गाथा द्वारा अमुक अमुक अर्थके पर्याय शब्द बताए हैं. बादमें २ वीं गाथा से लेकर ९३॥—साढ़ तेरानवीं—गाथा तक गाथा के आधे आधे चरण द्वारा अर्थात् पूर्वार्ध द्वारा और उत्तरार्ध द्वारा अमुक अमुक अर्थके पर्याय शब्द सूचित किए हैं फिर ९५—पंचानवीं गाथासे लेकर २७५वीं गाथा तक प्रत्येक गाथाके एक एक चरण द्वारा—एक एक चरणद्वारा अमुक अमुक अर्थके पर्याय शब्द बताए हैं. इस बातकी सूचना कोशकारने स्वयं कोशमें ही दी है. यह बात पृ० २ में तथा पृ० ११ में *इस निशान का जो टिप्पण दिया गया है उसको देखने से अधिक स्पष्ट हो जायगी.

अमुक अर्थके कितने नाम कोशकारने दिए हैं इस बातकी सूचना करने के लिए कोशके टिप्पणमें हमने सर्वत्र पर्यायोंकी संख्या के निर्देशके साथ एक शब्द को स्पष्टरूपसे बताया है. जैसे १ पृ० २ ब्रह्मा १ अर्थात् ब्रह्मा के दस नाम पर्यायरूप बताए है १ पृ० ११ मुक्ति ९—मुक्ति के ९ पर्याय बताए हैं. ११ पृ० १६८ अमरावती २—अमरावती के दो पर्याय सूचित किए है

जहां समूची गाथा पर्याय वाचक शब्दों को दरसाती है वहां हमने गाथा पर शुरू शुरूमें अंक लगाए हैं, जहां आधी गाथा पर्यायवाचक शब्दों का सूचन करती है वहां आधी गाथाके आदिमें अंक लगाए है तथा जहां गाथा का एक चरण मात्र पर्यायसूचक शब्दों को बताता है वहां सर्वत्र गाथाके प्रत्येक चरणके आदिमें अंक दे दिये गए है. ऐसे सब अंकोंकी संख्या ९९८ होती है.

कोशकारकी व्यापक मनोवृत्ति

४

कोशकार धनपालने प्रथम गाथामें (पृ १) नाभिसंभवं शब्दसे जैन तीर्थंकर श्री ऋषभदेवका या ऋषभदेवका जो नाभिराजा के पुत्र थे-- स्मरण किया है तथा पुरुषोत्तम नाभिजन्मा ब्रह्माका भी स्मरण किया है. कोशग्रंथ सर्व व्यापक है, इसको सब कोइ पसंद हैं अत इस सर्व व्यापी दृष्टि को लेकर जैनधर्मानुयायी होने पर भी कोशकारने दोनों देवोंका जो समादर भावसे स्मरण किया है वह सर्वथा समुचित ही है. और साथमें पुरिसुत्तम (पुरुषोत्तम) शब्द से श्रीकृष्ण भगवानका स्मरण करना भी चतुर कोशकार नहीं चुके हैं. यही तो इनकी विशाल मनोवृत्तिका पोषक है. अर्थात् प्रथम पद्य मंगलरूप है.

अंतके २७६ से २७९ तक के पद्योंमें ग्रंथकारने अपना समय, अपना नाम तथा यह कोश किसके लिए बनाया है इत्यादिका सूचन किया है

कोशमें सब मिलकर शब्दपर्यायसूचक २७५ पद्य हैं.

क्षमाप्रार्थना

५

हमने टिप्पणमें अर्थ बताया है और अकारादि क्रमयुक्त शब्दकोशमें भी अर्थ बताया है. इसमें कहीं कहीं कोई विसंवाद भी हो गया है तथा किसी प्रकार की हिन्दी भाषा की तथा अन्य भूलें रह गइ हों तो उससे हमारे हमसमान समझवाले विद्यार्थी गणको व सब जिज्ञासुओं को थोडी बहुत तकलीफ जरूर होगी परंतु "सहमूर्भर्मिरदुर्बोधा" न्यायसे ऐसा होजाना अनिवार्य सा है, तो इस तकलीफ को वे सहन करनेकी जरूर कृपा करें और जरूरत लगे तो सुधारने के लिए संपादकको सूचित करने की भी क्षमा करें

नम्र

बेचरदास दोशी

कोशकार महाकवि
धनपाल

धनपाल महाकविने स्वयं ही इस कोश के प्रांत भाग में अपने नामका समयका तथा कोश के आदि श्लोक में कोश के नामका जो सूचन किया है वह इस प्रकार है —

> विक्कमकालस्स गए अउणत्तीसुत्तरे सहस्सम्मि ।
> मालवनरिंदधाडीए लूडिए मन्नखेडम्मि ॥
> धारानयरीए परिट्ठिएण[1] मग्गे ठियाए अणवज्जे ।
> कज्जे कणिट्ठबहिणीए 'सुंदरी' नामधिज्जाए ॥
> कइणो अं ध ज ण कि वा कुस ल त्ति पयाणमंतिमा वण्णा ।
> नामम्मि जस्स कमसो तेणेसा विरइया देसी ॥
>
> —(पाइअलच्छीनाममाला गा. २७६-२७८)

तथा

शुरू की प्रथम गाथामें लिखा है कि —

> वुच्छं 'पाइअलच्छि' त्ति नाममालं निसामेह ॥

अर्थात् विक्रमसंवत् १ २९ में जिस समय मालवराजने लूट करके मन्नखेड-मान्यखेट (मलखेड. नि. नासिक या पैठ) नगर पर हमला करके उस नगरको नष्ट किया तब कोशकार धनपाल धारा नगरी में प्रतिष्ठितरूपसे

---

१ अणवज्जे मग्गे परिट्ठिएण इस प्रकार भी अन्वय कर सकते हैं अर्थात् निर्दोष मार्ग पर प्रतिष्ठा पाये हुए धनपालने ऐसा भी अर्थ बराबर है

२ कोश के अन्तमें इन गाथाओं का अर्थ सूचित किया है उसको इस अर्थके अनुसार समझ लेना तथा संशय करना चाहिए. (संपा)

रहत थे और निर्दोष मार्ग पर प्रतिज्ञा के साथ स्थित थे उसकी छोटी बहन सुंदरी निरवद्य मार्ग पर यानि धर्ममार्ग पर रही हुई थी, उस समय अपनी छोटी बहन सुंदरी के लिए धं प व ल प कि वा कुल म इन शब्दों के अन्तिम अंतिम वर्ण अनुक्रमसे जिस कवि के नाममें लगे हुए हैं उसने अर्थात् धनपाल-धनपालने इस देशी (भाषाके कोश) की रचना की.

पूर्वोक्त प्रथम गाथामें ही " पाइअलच्छी का कहूंगा " ऐसा कह कर के कोशकारने ही इस कोश का पाइअलच्छी (प्राकृतलक्ष्मी) नाम सूचित किया है इस कोशमें देशी या देश्य शब्द भी दिए गए हैं अत इसका दूसरा देशी नाम भी ग्रंथकारने ग्रंथ के अन्त भागमें बताया है अथवा प्राकृतभाषा देशकी—जनपदकी—भाषा है ऐसा सूचन करने के लिए भी ग्रंथकारने 'देशी' नाम बताया हो यह असंभवित नहीं.

उक्त पद्योसे-धनपालने ग्यारहवीं सदी में इस कोश की रचना की—ऐसा सुनिश्चित रूपसे प्रतीत होता है तथा उसकी छोटी बहनका नाम 'सुंदरी' था यह भी निश्चित होता है. उस समय मालव नरेशने मान्यखेट नगर पर छापा आक्रमण किया था ऐसी भी सूचना मिल जाती है.

क्योंकि धनपालने इस कोश को १ २९ में रचा है इसलिए उसका जन्मसमय दसवीं सदीमें माननेमें कोई बाधक प्रमाणका होना संभव नहीं जान पड़ता. कोशकार धारानगरी के प्रतिष्ठित पुरुष हैं और निर्दोष मार्ग पर चलनेवाले हैं ऐसा भी परिट्ठिएण तथा अगवज्जे मग्गे परिट्ठिएण पद से सूचित होता है और कोश की रचना धारानगरी में हुई है यह बात भी धारानयरीए पदसे सूचित होती है.

धनपालकी छोटी बहन प्राकृत भाषाकी विद्यार्थिनी थी, संभव है वह संस्कृत भाषाको अच्छी तरह जान चुकी होगी. तथा धनपालकी पुत्रीने धनपालरचित तिलकमंजरी नामक कथाकी अपनी स्मृति के बलसे रक्षा की थी. इससे मालूम होता है कि धनपालका कुटुंब एक प्रकारका सारस्वती

मेरुस्वरूप बना हुआ था.

श्रीप्रभाचन्द्रसूरि द्वारा विक्रमसंवत् १३३४ में किए गए प्रभावकचरित्र में *श्रीमहेन्द्रसूरिजीका सविस्तार प्रबंध दिया गया है* उस प्रबंध में महाकवि धनपाल के जीवनका वृत्तांत जिस प्रकार दिया गया है उसका सार इस प्रकार है

मध्यदेश में संकाश्य नाम के स्थानमें (गांवमें) रहनेवाला देवर्षि नामका एक ब्राह्मण था वह किसी प्रकार के व्यावहारिक कारणसे मालवदेशकी राजधानी धारा नगरीमें आकर रहता था उसके पुत्रका नाम सर्वदेव था. सर्वदेवके दो पुत्र थे। एक धनपाल और दूसरा शोभन.

एक समय चैत्रगच्छ के आचार्य श्रीमहेन्द्रसूरि ग्रामानुग्राम विहार करते करते सर्वदेव के स्थान में अर्थात् धारानगरी में आए. सर्वदेव ब्राह्मणने श्रीमहेन्द्रसूरिकी प्रतिष्ठा तथा व्याख्यान शक्तिका प्रभाव सुना वह ब्राह्मण आचार्य के समागम के लिए उपाश्रयमें गया. और तीन दिन तथा तीन रात्रि तक उपाश्रयमें ही समाधिमग्न होकर रहा तब आचार्यने उससे पूछा कि क्या आप हमारा परीक्षण करने आए हैं या और किसी कार्यसे आए हैं?

सर्वदेवने कहा — महात्माओं के दर्शनसे सुकृतकी प्राप्ति होती है तथा मेरा निजका कार्य भी है इस लिए मैं आपके दर्शनके लिए आया हूं.

सर्वदेवने अपने कार्यका वृत्तांत कहते हुए आचार्य को कहा कि मेरा यह कार्य गुप्त है. मेरे पिता राजमान्य थे और लाखों की दक्षिणा पाते थे. अतः मेरे घरमें किसी भी जगह उस धनकी निधि गाड़ी हुई होनी चाहिए, मुझे उसका पता नहीं लगता, अतः आप कृपा कर के उस को बतलाइए.

आप परोपकारी हैं अतः इतना मेरा कार्य कर दें. आप धननिधिको बतलाएंगे तो इस दरिद्र ब्राह्मण के सारे कुटुंब को बड़ा आनंद होगा तथा हमारा दारिद्र्य भी दूर हो जायगा

आचार्य ज्योतिष शास्त्र तथा निमित्त शास्त्र के भी ज्ञाता थे, उनको यह मालूम हुआ कि मेरे प्रताप से इस ब्राह्मण द्वारा उत्तम शिष्यका लाभ होना संभव है

आचार्यने कहा कि आपका कार्य जरूर कर देंगे, परंतु आप हमको क्या देंगे? सर्वदेवने कहा कि उस सारी निधिका आधा भाग मैं आपको भेंट दूंगा तब आचार्यने कहा कि मैं आपकी वस्तुका आधा भाग मेरी इच्छासे पसंद करके लूंगा सर्वदेवने आचार्यकी बात को मान लिया और साक्षी भी नियत किये

आचार्यने सर्वदेव के मकान पर आकर जहां धननिधि गडी हुई थी उस जगह को बता दिया और वहां खोदन से चालीस लाख सुवर्णमुद्रा उस धननिधिसे निकली.

सर्वदेवने अपने वचन के अनुसार बीस लाख सुवर्ण मुद्रा आचार्य को देनी चाही. पर आचार्यने कहा कि मैं अपने वचन के अनुसार मुझे पसंद होगी ऐसी आपकी वस्तुका आधा भाग लूंगा इस विवाद में काफी समय बीत गया आखिर आचार्यने कहा कि आपके दो पुत्रों में से एक को मुझको दे दें.

आपकी देनेकी प्रतिज्ञा सच्ची हो तो जिस वस्तुको मैं मांगता हूं उस को दे दें यदि नहीं देना हो तो आप अपने घर चले जायें

सर्वदेव ब्राह्मण आचार्य की यह मांग सुनकर किंकर्तव्यमूढ हो गया और बडा चिंतित हो कर कहा आपको आपकी मांग के अनुसार आधा भाग दूंगा ऐसा कह कर अपने घर पहुंचा.

घर आकर चिंतातुर ब्राह्मण टूटीफूटी खटिया में पडकर सो गया जहां चिंता हो वहां निद्रा कैसे आवे? जब बडा लडका धनपाल राजप्रासादसे लौटकर घर पर आया तब पिताको चिंतातुर देखकर बोला पिताजी! मेरे

कैसे भाग्यान्वित पुत्र के होने पर भी आप चिंतित क्यों हैं? अपने विषादका कारण बताइए.

पिताने धननिधिकी तथा उसके संकेत वगैरह की सब बात कह दी और कहा कि धननिधिको लानेवाले जैनाचार्य तुम दो भाइयोंमें से एक भाईको मांग रहे हैं और मैंने ऐसा उनको वचन भी दे दिया है. तो हे पुत्र! अब तुम मुझको ऋणमुक्त कर दो

पिताके इस वचनको सुनकर धनपालको बड़ा गुस्सा आया और उसने बाप को थोड़ा डांटा भी.

धनपालने कहा कि हम लोग संकाशके रहनेवाले तथा चारों वेदों को जाननेवाले उत्तम ब्राह्मण हैं मैं राजा भोज का बालमित्र हूं और बड़ा प्रतिष्ठित ब्राह्मण हूं. ये जैनमुनि पतित शूद्रों के समान हैं, उनकी ऐसी निंदित प्रतिज्ञा के खातिर मैं अपने पूर्वजों को नरकमें रखना नहीं चाहता आपका यह कुव्यवहार है और सज्जनोंसे निंदनीय है अतः मैं आपके कथनानुसार नहीं कर सकता आप जानें व आपकी प्रतिज्ञा जाने.

इस प्रकार पिताका अपमान करके धनपाल वहांसे अन्य जगह चला गया और पिता सर्वदैव निराश हो गया तथा उसकी आंखोंसे आंसू टपकने लगे. इतने में धनपालका छोटा भाई शोभन वहां आ गया पिताने उसको वो बातें धनपालसे हुई थी सब कह दी और धनपालका डांटना भी सुना दिया. और अन्तमें कहा कि तुम तो अभी बालक हो अतः हमारी किसी प्रकारकी सहायता नहीं कर सकते. तो तुम जाओ और हम अपना किया आप ही भुगत लेंगे.

तब शोभनने अपने पितासे कहा कि आप मत घबराइए, मैं जरूर आपका वचन पालूंगा. मेरा बड़ा भाई राजमान्य है, कुटुम्ब के सारे भार को उठाने को भी वह समर्थ है, वह बड़ा पंडित भी है अतः उसने आपको कुछ

भी कहा जो उसको ठीक लगा मैं तो बचपनसे ही समझ हूं और आपकी किसी भी प्रकारकी आज्ञा को माननेवाला हूं आप मुझको कुएँमें डालें अथवा मारनेके लिए चांडालोंको सौंप दें—आपको जो जैंचे सो करें. उसमें मैं किसी भी प्रकारका विचार नहीं करता अतः अब आप चिंता को छोड दें, उठकर स्नान पूजन कर लें और भोजन करके स्वस्थ हो जावें. बादमें मुझको आचार्यके पास ले जाकर उनको भेंटके रूपमें दे दें.

फिर सर्वदेव ब्राह्मण अपने छोटे पुत्रको लेकर आचार्य के पास गया और शोभनको आचार्य के चरणों में भेंट किया. आचार्यने भी सर्वदेवकी संमति लेकर अच्छे दिवस मुहूर्त इत्यादिक को देखकर शोभनको अपना शिष्य बना लिया

बनसाक राजमान्य था अतः आचार्य को (अपभ्राजनशङ्कया) शासनकी अपभ्राजना होने की शंका हुई. इस कारण आचार्यने अपने नए शिष्यको लेकर प्रातःकालमें ही धारानगरीसे अणहिल्लपुर की तरफ जाने के लिए विहार कर दिया

धनपालने जब देखा कि पिता सर्वदेवने निधान के लिए अपने छोटे भाई को बेच दिया है, अतः पिता अनुचित कर्म करनेवाले हैं. धनपालने पिता को अपने से पृथक् कर दिया और वह (धनपाल) गुस्से में आकर सोचने लगा कि जैनमुनियोंका मुंह देखने लायक नहीं है, ये कहां कहां से आकर संयम और शमके बहानेसे भी तथा बालकों को ठग लेते हैं, वीतरागपरी शूद्र हैं, इनका पाखंड बड़ा अद्भुत है. राजाको कह कर अब इस प्रदेश में इनका आना जाना रोक देना जरूरी है.

धनपालने जैनमुनियों पर कोपाविष्ट होकर जैनमुनि बनकर शोभन चला गया इत्यादि जो बात बनी थी राजा भोज को कह दी. तब राजा भोजने अपने राज्यमें बारह वर्ष तक जैनमुनियों का आनाजाना निषिद्ध घोषित

कर दिया और उससे सारे मालवे में किसी भी (श्वेताम्बरदर्शनम्) एक कपड़ेवाले मुनि का विहार नहीं हुआ.

जब आचार्य महेन्द्रसूरि गुजरातमें थे तब धारानगरी के श्रीसंघने धारानगरी में जैनमुनियों के खिलाफ जो कार्रवाई हुई थी वह उन्हें विदित की और मालवे में पधारने की विनंति की.

आचार्यने अपने शिष्य शोभनमुनिको अच्छी रीतिसे पढ़ाया, सिखाया और वाचनाचार्य बना दिया अवंती के अर्थात् धारानगरी के संघकी याद में आपकी विनंति सुनकर शोभनमुनिने वहां जानेका विचार किया और अपने निमित्तसे जो क्लेश हुआ है उसको उपशांत करनेका तथा अपने बड़े भाई धनपालको भी प्रतिबोध करनेका संकल्प अपने गुरु को विदित किया

बादमें श्रीमहेन्द्रसूरिजीने गीतार्थ मुनियोंके साथ वाचनाचार्य शोभन-मुनिको धारानगरीकी तरफ विहार करने की आज्ञा दी.

श्री शोभनमुनि आदि मुनिमंडल अणहिलपुरसे ग्रामानुग्राम विहार करते करते एक दिन धारानगरी को पहुँच गए. उचित समय को देख कर एक दिन शोभनमुनिने अपने साथके मुनियों को धनपाल के घर पर भिक्षा के लिए भेजा.

मुनियोंने धनपाल के घर आकर 'धर्मलाभ' ऐसा कहकर भिक्षा मांगी. धनपाल की स्त्रीने कहा 'सरस्थित' अर्थात् धर्मलाभ तो तालाब में है। तब शरीर पर तेलकी मालिश कर के स्नान के लिए उद्यत ऐसे धनपालने कहा कि घरमें आये हुए अर्थिको कुछ न कुछ देना चाहिए, यदि ये खाली हाथ चले जाएंगे तो बड़ा अधर्म होगा अतः इनको थोड़ा दही दो.

तब धनपाल की स्त्री उचितान्नम्-बासी-ठंडा-अन्न लाई. मुनियोंने अन्न को ले लिया, फिर जब वहीं आये तब मुनियोंने पूछा कि यह दही कितने दिनका

है! तब सौन कहा कि क्या इस दही में जीव पड़े हैं! यह दही तीन दिनका है, लेना है तो लो अन्यथा चले जाओ.

मुनियोंने कहा कि ऐसा पूछना हमारा आचार है, इससे आप नाराज क्यों होती हैं! यह सब वार्तालाप सुनकर धनपाल पंडितने कहा कि यदि आप इस दही में पड़े हुए जीवों को बता दवें तब आपका वचन निर्दोष एवं सत्य माना जाय.

तब मुनियोंने दही में अलते की गोली डलवाई तब दही का रंग बदल जाने से उस के अंदर जो छोटे छोटे जंतु उत्पन्न हो गए थे वे प्रत्यक्ष दीख पड़ने लगे यों दही सफेद था और उस के अंदर उत्पन्न हुए छोटे जंतु भी दही के समान रंग के थे अतएव नहीं दीख पड़ते थे। जब दही का रंग बदलने के लिए उसमें दूसरी वस्तु डलवाई तब वे जंतु दही में स्पष्ट से साफ साफ दिखाई देने लगे.

महाकवि धनपाल इन जंतुओं को देख कर अचंभे में आ गया और दही कितने दिनका है '' इस प्रकारका मुनियों का प्रश्न समुचित ही था— ऐसा विचार उनके मन में आया तथा मुनि जैन मुनि किस कदर या किस हद तक दया-अहिंसा-का विचार करते हैं, किसी भी छोटे मोटे जीवकी रक्षा के लिए वे कितने सावधान रहते हैं और अपनी संयमयात्रा वे इस तरह चलाते हैं जिससे किसी भी प्राणी की हिंसा न हो, अपना मन चंचल न हो इंद्रियाँ भी अपने वश में ही रहे जिससे रागद्वेषके परिणाम धीरे धीरे क्षीण होकर समवृत्ति बनी रहे

इस प्रकार विचार करते करते उसके मन में जैन धर्म संमत दयावृत्ति ठीक जँचने लगी और हिंसाप्रधान वैदिक कर्मकांड से उसका मन हटने लगा

फिर उसने भिक्षार्थ आए हुए मुनियों को पूछा कि आप लोग इस धारानगरी में कहांसे आए हैं? आपके गुरु कौन हैं? और आप इधर आकर कहां ठहरे हुए हैं!

मुनियोंने कहा कि हम गुजरात देश से आए हैं. हमारे गुरुका नाम सोमनमुनि है जो आचार्य महेन्द्रसूरि के शिष्य हैं और हम इधर श्रीआदि नाथभगवानके मंदिरके पासके निर्दोष स्थानमें ठहरे हुए हैं.

भिक्षा लेकर जब मुनि चले गए तब धनपाल भी अपने नित्य कर्मसे निवृत्त होकर भोजन कर बड़ी भक्तिके साथ भक्ति नम्र बन कर उन मुनियों के उपाश्रय में जाने को उद्यत हुआ.

जब धनपाल महाकवि उपाश्रयमें पहुंचा तब अपने बड़े बंधुको आते हुए देखकर शोभनमुनि उसके आदर के लिए खड़े हो गए, शोभन मुनिने अपने आसन के आधे भागमें अपने बड़े भाई को बड़े स्नेहसे बैठाया.

अब दोनों भाई एक दूसरेको देखकर प्रेमगद्गद हो गए धनपालने कहा कि पूज्य तो तुमही हो, तुमने ही उत्तम ऐसे दयाप्रधान धर्मका स्वीकार किया है और इस धर्मका पालन भी बड़ी सावधानीसे संयमपूर्वक कर रहे हो. ऐसे दयाधर्मी मुनियों को धारानगरीसे निर्वासित करके मैंने बड़ा पापपुंज उपार्जित किया है. तुमने ऐसे अहिंसाप्रधान धर्मका स्वीकार करके अपने जीवन को सफल बनाया है ।

तुम धन्य हो और पिताजी सर्वदेव भी धन्य हैं मैं हिंसाप्रधान यज्ञ यागादिको धर्मके रूपमें समझ कर उसीके कर्मकांड में आजतक फंस गया. परंतु अब मैं सच्चे अहिंसारूप धर्मको समझ सका हूं

तुम्हारे ये मुनि मेरे घर पर आज भिक्षा लेनेके लिए आए थे मेरे मनमें जैनमुनियों के प्रति आदर नहीं था तो भी घर पर जो याचक आता है वह भिक्षा पाए बिना चला जाय यह मुझको बड़ा अनुचित लगता है, अतः मैंने गृहिणी को भिक्षा देनेको कहा

मेरी स्त्री उसको भी आदर नहीं था अतः वह ठंडा अन्न लाई और दहीं भी लाई.

मुनियानि यह ठंडा अन्न तो ले लिया मगर जब वे वहीं देने लगीं तब मुनियोंने पूछा कि—यह वहीं कितने दिनका है ? उसने खीज कर कहा कि क्या दहींमें भी जीव पड गए हैं ? पानी में तो पड़नकी बात मानती हूं

तब मुनियोंने बड़ी नम्रता से कहा कि बहिन ! बिना पूछे या बिना जाने हम कोई चीज कैसे नहीं हैं. हमारा आचार ही ऐसा है इसमें खीजने की कोई जरूरत नहीं है. तीन दिनका वही होगा तो जैसे बिना छाने जलमें जीव होते दीखते हैं वैसे उस वहीं में भी जीव उत्पन्न हो जाते हैं और दिखाई भी देते हैं

तब मैंने कहा कि एक तो मांग कर खाना और वहीं ताजा है या वासी है या कितने दिन का है ' ऐसा पूछना यह भिक्षुओं को क्या उचित है '

मुनियोंनि मेरे अनादर को नहीं गिन कर विनय भावसे जवाब दिया कि हमारा धर्मकर्म सब अहिंसाप्रधान है—दयाइन्द्रियप्रधान है हम कोई ऐसी चीज खानेको या पहनने—ओढने को भी नहीं लेंगे जिसमें जीवों की हिंसा हो हम भूखको सहन कर सकते हैं तथा शीतको भी अच्छी तरह सहन कर सकते हैं, परंतु जहां जीवोंकी हिंसा मालूम हो ऐसा कार्य मरणांत तक नहीं करते हैं हमारा ऐसा ही आचार है.

हमारे ज्ञानी अनुभवी ऐसे पूर्वपुरुषोंने बताया है कि तीन दिन के वहीं में जंतु उत्पन्न हो जाते हैं. अतः हमने ऐसा पूछा इसमें 'वहीं ताजा है या वासी है ? ' ऐसा कोई सवाल केवल स्वाद के लिए हमने नहीं किया है या ऐसे सवाल केवल स्वादेन्द्रियके वश होकर हम कभी भी नहीं करते हैं और इस प्रकार स्वादेन्द्रियके वश होकर ऐसे सवाल करना हमारा आचार भी नहीं है

तब मैंने (धनपालने) कहा कि सचमुच ऐसा ही है तो आप वहीं में जो जीव पैदा हुए हैं उन्हें मुझको प्रत्यक्ष बताइए केवल श्रद्धासे मैं माननेवाला नहीं हूं. तब मुनियोंने कहा कि वहीं जैसा श्वेत वैसा प्राय होता है और तीन

जिनके बहुँमें जो जीव उत्पन्न होते हैं वे भी श्रोतसे मारा होते हैं. अतएव बहुँ का रंग बिना बदले वे दीख नहीं सकते. तो आप इस बहुँमें थोड़ासा अलक्ता डाल दीजिए, जिससे इसका रंग थोड़ा बदल जायगा तब आप देखेंगे तो इसमें चलते हुए कीड़े नजरमें आवेंगे.

फिर मैंने (धनपालने) अलक्ता मँगाकर बहुँ में डलवाया तो जो बात मुनियोंने कही वह बराबर सही मालूम पड़ी. बहुँमें चलते हुए कीड़ों को मैं प्रत्यक्ष देख सका

तब मेरे (धनपालके) मनमें मुनियों की दयावृत्ति का और उनके अहिंसाप्रधान धर्मका सच्चा ख्याल आया तथा जिस धर्मका आचरण मैं अभी कर रहा हूं इस हिंसाप्रधान यज्ञ यागादिक कर्मकांडमय वैदिक धर्मका भी बराबर ख्याल आया. दोनों धर्मोंकी जब मैंने बुद्धिपूर्वक तुलना की, विवेचना की, तब मुझको आपके इस अहिंसाप्रधान धर्मपर प्रीति हुई, विश्वास हुआ और धर्मविषयक मेरी परंपरागत गलती समझमें आ गई. अब हे मुनिराज ! मैं धर्मके विषयमें आपकी शरण चाहता हूं और आपसे मैं जैनधर्मका स्वीकार करता हूं.

इस प्रकार मधुगद बोलते हुए धनपालने शोभनमुनि द्वारा जैनधर्मको स्वीकार किया और तबसे वह यावज्जीवन जैनधर्मपरायण बन गया

उसने श्रावक धर्मका स्वीकार किया और अंतकालमें जैन धर्ममें जिस प्रकार संलेखना विधि बताई है इस प्रकार संलेखना विधिसे मरण पाकर धनपाल सद्गतिका भागी हुआ.

[जब मरण समय नजदीक मालूम होता है तब ब्रतधारी श्रावक या मुनि अपने गुरुकी शरण लेकर तीर्थंकर सर्वज्ञ को नमस्कार करके अपनी सब बाह्य प्रवृत्तियों को छोड़ देते हैं और अनशन करके कोई एकांत स्थानमें या वन या उपाश्रयमें या वन ऐसा नियम लेते हैं कि अब मैं मरण तक सिर्फ आत्मध्यानमें स्थिर रहूंगा आत्मघातका सर्वथा त्याग कर दूंगा और ममता

वचसा तथा कर्मणा किसी प्रकार के दुःसंकल्प, दुर्वचन और दुष्प्रचार को नहीं करूंगा ऐसा निश्चय करके श्रावक व मुनि एक आसनमें स्थिर होकर जीवनांत तक धर्मस्थानमें बैठे रहते हैं या अशक्त हो तो दर्भके बिछौने पर सो रहते हैं और अपनी क्रोध मान माया लोभ वगैरह दुर्वृत्तियोंको क्षीण क्षीणतर, क्षीणतम करनेके लिए देहद्वारा कठोर तप भी करते रहते हैं इसका नाम मरणांतसंलेखना विधि है.]

इस प्रबंधसे नीचेकी बातें फलित होती है.

१ धनपाल जन्मसे ब्राह्मण था और जैनधर्मके प्रति नफरत करता था वह सरलस्वभावी था तथा सदाचरण का जिज्ञासु रहा अतः वहींमें जीव होनेकी बात सुनते ही उसकी अहिंसाविषयक जिज्ञासा तेज हुइ और वह जैन श्रावक बन गया

पुराकालसे अहिनकुलम् की तरह श्रमण—ब्राह्मणम् इस प्रकारकी कहावत चली आई है, फिर भी जैनपरंपरामें प्रथम गणधर इन्द्रभूति गौतम से लेकर जो बडे बडे दिग्गज महावादी और आध्यात्मिकवृत्तिप्रधान आचार्य हुए हैं वे प्रायः जन्ममात्र ब्राह्मण हुए हैं. ऐसा अनुमान करना अनुचित न होगा कि प्राचीन ब्राह्मण कुलके संस्कारों में सरलता और सत्यान्वेषण वृत्ति उनमें जिज्ञासिकता होने से अधिक सुलभ होगी।

२ प्रबंधमें शोभनकी दीक्षा का जो प्रसंग आया है उससे मालूम होता है कि उस काल के जैनमुनि किसी भी बहाने से शिष्यप्रिय होते थे संयमके लिए सचे वैराग्यके प्रति उपेक्षा हो गई थी. मंत्रतंत्रके प्रयोग करना आदर्श संयमीके लिए सर्वथा निषिद्ध होनेपर भी किसी भी प्रकार के बहानेको धार्मिकताका रूप देनेमें संकोच कम हो गया था.

वर्तमानमें भी इसी वातावरणकी प्रतिध्वनि जैनमुनियोंमें क्या नहीं दीख पडती है ? वर्तमान हमेशा भूतकालका प्रतिध्वनिरूप होता ही है.

३ श्रीरामचंद्रकी तरह गोमन बड़ा पितृभक्त था ऐसा मालूम होता है अथवा यह मोक्षमात्मा इतनी प्रौढ़ी उमरका लड़का होगा कि जिस तरफ भक्ति व प्रीति विशेषता दिखी रहती है-

४ धनपालके समयमें वैदिकपरंपरा का कर्मकांड इस प्रकार प्रबल होगा

"स्पर्शोऽमेध्यभुजां गवामघहरः वन्द्या विसंज्ञा द्रुमाः
स्वर्गः छागवधाद् द्विनोति च पितॄन् विप्रोपभुक्ताशनम् ।
आप्ताः छद्मपराः सुराः शिखिहुतं प्रीणाति देवान् हविः
स्फीतं फल्गु च वल्गु च श्रुतिगिरां को वेत्ति लीलायितम् ! ॥

—(प्रभावक चरित्र पृ २१२ महेन्द्रसूरि प्रबन्ध श्लो १११

अपवित्र पदार्थोंको खानेवाली गौओंका स्पर्श पापहर माना जाता जड़ पेड़ वंद्य मान जाते हैं, बकरेकी बलि देनेसे स्वर्गप्राप्ति समझी जा है ब्राह्मण लोगोंका किया हुआ भोजन जिनकी विद्यमानताका व स्थान पता तक नहीं मालूम है ऐसे पितृलोक तक पहुँच जाता है (मानो ब्राह्मण एक तरह के पोस्ट ओफिसरूप हैं जो बिना पतेके सामानको भी पहु सकते हैं) अग्निमें डाला गया घी औरह हविष देवोंको प्रसन्न करता है ये सब अनुष्ठान वैदिक परंपरामें चल रहे हैं- वैदिक वाणीकी लीलाको कं जान सकता है !

५ धनपालकी स्पष्टवादिता और निःस्पृहता धनपाल धारानगरीके रा भोजकी सभाका प्रमुख कवि था राजसम्मानित था तथापि वह बड़ा स वादी और निःस्पृह था

देखिए —

एक समय जब राजा शिकारके लिए चला तब कवि धनपाल को साथमें ले चला. राजाने एक बड़े वराहको जब एक ही बाणसे बींधा यह वराह जब गरर गरर आवाज करता हुआ गिर पड़ा तब साथमें

हुए अन्य कवियोंने राजाके असाधारण बलकी प्रशंसा की, तब राजाकी दृष्टि धनपाल पर भी गई कि वह भी इस प्रसंग का योग्य बहुत वर्णन करे

धनपालने शीघ्र ही निःसंकोच कह दिया कि—

रसातलं यातु यदत्र पौरुषं क्व नीतिरेषाऽशरणो ह्यदोषवान् ।

निहन्यते यद् बलिनाऽपि निर्बलो हहा महाकष्टमराजकं जगत् " ॥

अर्थात् " महाराज ! तुम्हारा यह बल रसातलमें जाए जो शरणहीन है और निर्दोष है वह मारा जाता है क्या यह भी कोई नीति है बलवान द्वारा निर्बलका मारा जाना तो सरासर अन्याय ही है हाय क्या किया जाय ? जगत् अराजक बन गया है, यह बड़ा कष्ट है"।

राजाने चुपचाप सुन लिया

फिर एक दूसरा भी प्रसंग ऐसा ही आ गया—

राजाने दूसरे किसी प्रसंग पर कविसे कहा कि कोई अच्छी जैनकथा हो तो हमको सुनाओ। तब धनपालने बारह हजार श्लोकप्रमाण गद्यप्रचुर रसमय ऐसी तिलकमंजरी नामकी एक जैनकथाकी रचना की।

जब कथा गूँथी जाती थी तब पुत्री उसको सुन लेती थी या पढ़ लेती थी। एक बार पुत्रीने कविसे पूछा कि पिताजी, क्या अब वह कथा पूरी बन गई ? कथा पूरी बन चुकी थी। बादमें जैनशासनके विरुद्ध ऐसी कोई बात कथामें अनजानसे न आ गई हो इसका निर्णय करके कथाको शुद्ध करने के लिए कविने अपने असाधारण सम्माननीय वादिवेताल शान्तिसूरिको धारामें आनेके लिए आमंत्रण भेजा उन्होंने आकर कथाको शुद्ध बना दिया फिर कविने राजाको कथा सुनाना आरंभ किया।

कथामें मुख्य चार वस्तुएं थीं— अयोध्या नगरी, भगवान् ऋषभदेव आदि तीर्थंकर, शक्रावतार तीर्थ और नायकरूप मेघवाहन नृपति

राजा सारी कथाको बड़े चावसे बहुत दिनों तक सुनता रहा। जब पूरी सुन ली तब राजाने कविसे प्रार्थना की कि कथा तो बड़ी ही मनोहर हुई है परंतु मेरी इच्छा है कि आप इस कथामें ऐसा जरा-सा परिवर्तन कर दें कि जहाँ अयोध्या है वहाँ धारा नगरी कर दें, जहाँ भगवान् ऋषभदेव हैं वहाँ शम्भु महाकालका नाम बना दें, जहाँ शक्रावतार तीर्थ है वहाँ महाकाल तीर्थका उल्लेख कर दें और जहाँ नायक मेघवाहन नृपतिका नाम है वहाँ राजा भोजका नाम रख दें।

भोजकी यह बात सुनते ही कविने स्पष्ट रूपसे कह दिया कि महाराज! कोई पवित्र श्रोत्रिय ब्राह्मणके हाथमें दूधका कटोरा हो और उसमें मद्य का एक बिंदु भी गिर जाय तो जिस प्रकार वह दूध अपेय बन जाय ठीक इसी प्रकार आपके सूचित परिवर्तनसे यह कथा अपवित्र हो जाय—अपेय बन जाय, ऐसा मुझे स्पष्ट प्रतीत होता है अतः मैं कभी भी ऐसा परिवर्तन नहीं कर सकता।

कविकी इस अत्यंत स्पष्ट निर्भय वाणीको सुनते ही राजा क्रोधाविष्ट हो गया और उसने उस कथाकी पुस्तकको जलते हुए अंगारोंसे भरी हुई अंगीठीमें डाल दिया।

यह देखकर धनपाल कवि उठ खड़ा हुआ 'अब और फिर मैं इधर कभी नहीं आऊंगा' ऐसा राजासे कहते हुए उद्विग्न होकर अपने घरकी तरफ चल पड़ा, कविको बड़ा खेद हुआ।

घर जाकर भी वह स्नान, देवार्चन भोजन इत्यादि नित्य कर्म भी न कर सका किसीसे एक बात भी नहीं की और चिंतामग्न होकर औंधा मुँह करके बिना बिछौनेके जमीन पर पड़ा रहने लगा। चिंतासे उसकी निद्रा भी चली गई।

कविकी ऐसी परिस्थितिको देख कर उसकी नौ बरसकी पुत्रीने अपने

चिन्ताके चिन्ताका कारण पूछा। तब कविने राजाने कथाकी सारी पोथी जला दी' इत्यादि सारी घटना सुनाई। तब पुत्रीने उन्हें कहा कि आप चिन्ता न करें मैंने यह कथा जितनी सुनी है उतनी सारी कथा मुझे बराबर अक्षरशः याद है। आप अब चिन्ताको छोड़ दें और सत्वर उठकर स्नानादि कार्य कर लें और मेरे मुखसे उस सारी कथा को सुनकर फिर लिख लें।

अपनी पुत्रीकी बात सुनकर कवि बड़ा ही प्रसन्न हुआ और फिरसे वह कथा पुत्रीने जितनी सुनी थी सारी लिखवा दी।

प्रबंधकार कहता है कि मूल कथा बारह हजार श्लोक प्रमाण थी, उसमें से नौ हजार प्रमाण बराबर लिखी गई और शेष तीन हजार प्रमाण कथा पुत्रीने नहीं सुनी थी उतनी नयी रच डाली- इस प्रकार कथा का नया अवतार हो गया और ऐसा भी कहा जाता है कि पुत्रीके नामसे कथाका नाम तिलक-मंजरी रखा गया।

उक्त इन दोनों वृत्तांतोंसे कविमें न्यायप्रियताके कठोर व्रत की तथा निःस्पृह वृत्तिकी भी स्पष्ट झलक मालूम होती है। और उसकी नौ वर्षकी पुत्रीका शिक्षण भी कितना उत्तम कोटिका था यह भी स्पष्ट दीखता है।

धन्य है धनपालके कुल और कुटुंबको।

६ कविके प्रबंधसे मालूम होता है कि जब राजाने कविका अनादर किया तब वह धारासे पश्चिमकी ओर सत्यपुर (साचोर जि० जोधपुर) में चला गया। वहां भगवन्त महावीरस्वामीका पुराना एक बड़ा चैत्य-मन्दिर-था। कविने वहां रह कर भगवन्त महावीरकी आराधनामें मन लगा दिया और सत्यपुरीय महावीर स्वामीकी एक बड़ी उत्तम काव्यमय विरोधाभास अलंकारसंयुक्त स्तुति प्राकृतभाषामें रच डाली। प्रबंधकार कहता है कि उस स्तुतिका आरंभ इस प्रकार है -'देव निम्मल' इत्यादि।

वर्तमानमें जो यह स्तुति प्रकाशित की गई है उसमें आदिभाग इस प्रकार है —

“ निम्मलगुणे वि भव्वे जिणाण मग्गपुरट्ठ मगमिलग।
वीरमणिरुद्वसम्मं थुणामि स-जिरुद्वसमणस्साहं” ॥ १ ॥

तथा

अन्तभागका पद्य इस प्रकार है —

इय सम्मदिसिनिसिपय धम्मय पसम निहोभमोअरस।
मम मत्त सया मत्ता समोसर संपुरमिराणं” ॥ ३० ॥

इस अंतिम पद्यमें 'धण पालय' शब्द द्वारा कविने अपना नाम भी सूचित किया है।

इन तीस पद्योंकी सारी स्तुति संपूर्णरूपमें जैनसाहित्यसंशोधकके तीसरे खंड के तीसरे अंकमें छपी हुई है। यहां उसका संपादन और सारा स्पष्टीकरण इसी लेखकने किया है।

७ प्रबन्धोंमें लिखा है कि कवि धनपालने अपने धनका सात क्षेत्रोंके उद्धारार्थ उपयोग किया। श्रावक, श्राविका साधु, साध्वी, जिनचैत्य, जिन-बिंब और ज्ञान ये सात क्षेत्र जैनपरंपरामें प्रसिद्ध हैं। कविने एक बड़ा प्रासाद—जैनप्रासाद बनवाया और उसमें अपने आचार्य महेन्द्रसूरि द्वारा श्रीऋषभदेव भगवानकी प्रतिमाकी प्रतिष्ठा करवाई. श्रीऋषभदेव भगवानकी स्तुति करते हुए कविने ऋषभपञ्चाशिका नामकी पचास पद्योंमें एक प्राकृत भाषामय स्तुति बनाई। उसका प्रारंभ इस प्रकार है “जय जंतुकप्पपायव” इत्यादि। यह स्तुति निर्णयसागर प्रेसमें छप चुकी है।

८ कविने अपनी मातृभाषामें 'सत्यपुरीय श्री महावीर उत्साह' नामकी पैंतीस पद्यमय एक और भी स्तुति बनाई है। यह स्तुति जैनसाहित्यसंशोधकके उक्त अंकमें संपादक महाशयने सविवेचन मूलपाठके साथ प्रकाशित की है। इस स्तुतिसे मालूम होता है कि कवि कोरंट, श्रीमाल, धार, आहाड— (आघाट ? आघाट !) नराणा अणहिल्लवाड पाटण, विजयकोट और पालीताणा

थे सब स्थानोंकी यात्राको गए हुए थे, क्योंकि उक्त 'उत्साह' नामकी स्तुति में कविने स्पष्ट सूचित किया है कि "पिक्खिवि ताव बहुय ठाम" अर्थात् इन सब स्थानोंको देखकर प्रतीत हुआ कि जैसी भगवान महावीर की मूर्ति साचोरमें है, वैसी शान्तरसमयी मूर्ति और किसी जगह नहीं है।

इस उत्साहमें कविने अणहिलपुर, सोरठ, सोमनाथ, धंधुका, श्रीमाल-देशके तीर्थ देलवाड़ा वगैरह तीर्थोंमें तुर्कों द्वारा जो मूर्तियों का भंजन हुआ है उसका अतिस्पष्ट उल्लेख किया है। संवत् १०८१ में महमूद गिजनीद्वारा किये गए मूर्तिभंजन को यह उल्लेख सूचित करता है। और यह बात जिन-प्रभसूरिरचित तीर्थकल्पसे समर्थित होती है। तीर्थकल्पमें सत्यपुर तीर्थ का भी एक कल्प है.

९ धनपालकी उम्र मर्यादा

पाइयलच्छी नाममाला १०२९में बनाई। १०८१में जो मूर्तिभंजन हुआ धनपाल भी उल्लेख 'उत्साह' में किया है, अतः जब पाइयलच्छी बनाई तब उसकी उम्र करीब बीस बरसकी मानी जाय तो भी उत्साह बनाने के समय उसकी उम्रका अन्दाज सत्तर बरसका किया जा सकता है। संभव है कि 'उत्साह' बनाने के बाद दस-बीस बरस तक अधिक कविका जीवन रहा हो। सो उसकी ब्यासी अथवा बयानवे सालकी उम्र असंभव नहीं.

'उत्साह' में कविने अपना नाम दो दफे इस प्रकार स्पष्ट किया है— "भक्तीइ धनपालु भणइ" (भक्त्या धनपालो भणति) तथा "तइ तूठइ धनपालु" (त्वयि तुष्टे धनपाल)

'उत्साह' जिन पद्योंमें लिखा गया है वे संवत् ११५०-५८ में लिखे गए हैं अर्थात् 'उत्साह' के पद्य इतने प्राचीन हैं।

१० धारामें धनपाल का पुनरागमन और अपने भ्राताकी प्रतिज्ञाकी रक्षा—

" निम्मलगणे वि भणंबे जिणाय पवयुग्णले पणमिऊण।
वीरमविरुद्धवयणं थुणामि सन्निरुद्धवयणमह" ॥ १ ॥

तथा

अन्तभागका पद्य इस प्रकार है —

इय समयसिरिनिविभवण पाभय पक्कम निम्मेभममोअस्स।
मम मज्ज सया मग्गमगोयर संथुद्गिराणं" ॥ १० ॥

इस अन्तिम पद्यमें 'धम्म पालमा' शब्द द्वारा कविने अपना नाम भी सूचित किया है।

इन तीन पद्योंकी सारी स्तुति सम्पूर्णरूपमें जैनसाहित्यसंशोधकके तीसरा खंड के तीसरे अंकमें छपी हुई है। वहां उसका संपादन और सार स्पष्टीकरण इसी कलमसे किया है।

७ प्रबंधकारसे लिखा है कि कवि धनपालने अपना धनका सात क्षेत्र यथासार्थ उपयोग किया। श्रावक, श्राविका साधु साध्वी, जिनचैत्य। बिंब और शास्त्र ये सात क्षेत्र जैनसंप्रदायमें प्रसिद्ध हैं। कविने एक प्रासाद—जैनप्रासाद बनवाया और उसमें अपने आचार्य महेन्द्रसूरि श्रीऋषभदेव भगवानकी प्रतिमाकी प्रतिष्ठा करवाई श्रीऋषभदेव भगवान स्तुति करते हुए कविने श्रीऋषभपञ्चाशिका नामकी पचास पद्योंमें एक भावमय स्तुति बनाई। उसका आरंभ इस प्रकार है " जय जंतुकप्प इत्यादि। यह स्तुति निर्णयसागर प्रेससे छप चुकी है।

८ कविने अपनी मातृभाषामें 'सत्यपुरीय श्री महावीर उत्साह' तैंतीस पद्यमय एक और भी स्तुति बनाई है। यह स्तुति जैनसाहित्यसं उक्त अंकमें सपादक महाशयने सविवेचन मूलपाठके साथ प्रकाशित इस स्तुतिसे मालूम होता है कि कवि कोरंटक, श्रीमालदेश, धार, (मारवाड़ ? भाग्य)नराणा अणहिल्लवाड़ पाटण विजयकोट और प

भोज को मालूम हुआ कि कवि धनपाल इस समय साचोरमें है. भोज के भेजे हुए विश्वासपात्र पुरुष धनपालको बुलाने के लिए साचोरमें पहुचे. उन्होंने धनपालको भोज का संदेश वैनयिकी भाषा द्वारा सुनाया तब धनपालने कहा कि अब मैं इधर रहकर भगवान महावीर की सेवामें लगा हुआ हूं और सभाके जयविजय इत्यादि खेदवर्धक झंझटो में मेरा मन नहीं लगता, मैं उससे उदासीन हो गया हूं, अत नहीं आ सकता इस बातको सुनकर राजा भोजको, अपनी प्रतिष्ठाकी तथा पंडित सभाकी भी प्रतिष्ठाकी बडी चिंता हुई. तब राजाने फिरसे अपने खास आदमियों को भेजकर कहलाया कि—

"भीमुञ्जस्य महीभर्तुः प्रतिपन्नसुतो भवान् ।
ज्येष्ठः अहं तु कनिष्ठोऽस्मि तत् किं गम्यं त्वमेव च ॥२७०॥
पुरा ध्यामान् महाराज त्वामुत्सङ्गोपवेशितम् ।
प्राहेति विश्व तेऽस्तु श्रीकूर्चालसरस्वती ॥२७१॥
त्वत्कृते वयं भया पुरा राज्यमासाद्य भाग्यतः ।
जये पराजये वाऽपि–अवन्तिदेश स्वकं तव ॥२७२॥
रुष्टो भविष्यसि तो समागच्छ गच्छ माऽन्यथा ।
त्विया धारां त्वयं कौल परदेशी प्रयास्यति ॥२७३॥
त्वद् वै रूप विरूप वा जानासि त्वमेव त्वत् ।
मत्तः परं प्रभवतु न साम्प्रतं नहि युज्यते ॥२७४॥
प्राकृतोऽपि स्वयं ज्ञानं कुरुते नतरत् पुनः ।
किं पुनस्त्वं महाविद्वान् तत् यथारुचित कुरु ॥२७५॥
धनपाल इति श्रुत्वा स्वमूर्धे पक्षपातत ।
सरसाऽऽगात् ततो ज्ञात्वा राजाभिमुखमागतम् ॥२७६॥
एवं च पारचारेम भूपं संगम्य धीमिभिम् ।
पद्माक्षिप्य भाषावीद् क्षमस्वाविनयं मम ॥२७७॥

जैसे वर्तमानमें कई राजा अपने पास ऐसे ऐसे मल्ल रखते हैं कि बाहरके कोई भी मल्ल इनको पराजय नहीं कर सकते थे अर्थात् राजालोग मल्लोंकी एक सभासी संस्था जमाकर रखते हैं ठीक इसी प्रकार पुराने जमानेमें बड़े बड़े राजाओंके पास बड़े बड़े पंडित रहते थे उनको साथ करके अपराजित ऐसी एक पंडितसभा होती थी। इसमें ऐसे ऐसे पंडित रहते थे, जिनको पराजय बाहरके कोई भी पंडित नहीं कर सकते थे।

एक समय भोज की राजसभामें बाहरका दिग्विजयी एक धर्म नामका कौल तंत्र-मतका महाकवि पंडित आया और उसने भोजकी सभामें आकर कहा कि—

आचार्योऽहं कविरहमहं वादिराट् पण्डितोऽहम्
दैवज्ञोऽहं भिषगहमहं मान्त्रिकस्तान्त्रिकोऽहम्।
राजन्नस्यां जलधिपरिखामेखलायामिलायाम्
आज्ञासिद्धः किमिह बहुना सिद्धसारस्वतोऽहम्" ॥ २६१ ॥

—(प्रभावकचरित्र पृ २९१)

अर्थात् मैं आचार्य हूं कवि हूं, वादिराज हूं, बड़ा पंडित हूं, ज्योतिषी हूं वैद्य हूं, मांत्रिक हूं और तांत्रिक भी मैं हूं। हे राजन्! इस समुद्र वेष्टित सारे भूमंडलमें मैं आज्ञासिद्ध हूं अर्थात् मैं चाहूं सो कर सकता हूं अधिक क्या कहूंगा! मैं सिद्धसारस्वत हूं अर्थात् सरस्वती मेरे वशमें है।"

इस पंडितकी ऐसी आटोपमय वाणी सुनकर राजा भोजकी सभाके सब पंडित घबड़ा गये और राजा भोजकी राजकीय पंडित सभा निस्तेजित सी बन गई। भाग हुए पंडितको बिना जीते भोजकी पंडितसभाकी प्रतिष्ठा नहीं रह सकती। तब भोजने धनपालको बुलानेका विचार किया। परंतु भोजको याद आया कि जिस कविका मैंने भयंकर अपमान किया है वह मेरी सभामें फिर कैसे आ सकता है!

भोज को मालूम हुआ कि कवि धनपाल इस समय साचोरमें है भोज के भेजे हुए विश्वासपात्र पुरुष धनपालको बुलाने के लिए साचोरमें पहुचे. उन्हान धनपालको भोज का संदेश देशभिकी भाषा द्वारा सुनाया तब धनपालने कहा कि अब मैं इधर रहकर भगवान महावीर की सेवामें लगा हुआ हूं और सभाके जयविजय इत्यादि लेशवर्धक झंझटो में मेरा मन नहीं लगता, मैं उससे उदासीन हो गया हूं, अत नहीं आ सकता इस बातको सुनकर राजा भोजको, अपनी प्रतिज्ञाकी तथा पंडित सभाकी भी प्रतिज्ञाकी बडी चिंता हुई. तब राजाने फिरसे अपने खास आदमियों को भेजकर कहलाया कि—

> " श्रीमुञ्जस्य महोमर्तु प्रतिपन्नसुतो भवान् ।
> ज्येष्ठ, अहं तु कनिष्ठोऽस्मि तत् किं गम्यं क्षमोर्जय ॥२७०॥
> पुरा भ्यायान् महाराज त्वामुत्सङ्गोपवेशितम् ।
> प्राहेति विश्व तेऽस्तु श्रीकूर्चालसरस्वती ॥२७१॥
> त्यक्त्वा क्वयं त्वया वृद्धा गम्यमानाथ मानन ।
> जये पराजये चापि—अवन्तीशा स्वयं तव ॥२७२॥
> ततो मत्प्रियमेलो. त्वमागच्छ गच्छ माऽन्यथा ।
> निजा धारां त्वयं चौला परदेशी प्रयास्यति ॥२७३॥
> तद् ते यूयं विरूपं वा आनासि स्वयमेव तत् ।
> अतः परं प्रवासं न साम्प्रतं नहि युज्यते ॥२७४॥
> प्रावृतोऽपि स्वयं ज्ञानं कुरुत मेतरत् पुन. ।
> किं पुनस्त्वं महाविद्वान् तद् यथाकथित कुरु ॥२७५॥
> धनपाल इति श्रुत्वा स्वभूमे पश्यात्म ।
> तरसाऽऽगात् ततो ज्ञात्वा राजाभिमुखमागतम् ॥२७६॥
> ययौ च पादचारेण नृपे संगम्य धीमिनम् ।
> दृढमालिङ्ग्य चाचाख्यद् क्षमस्वाविनयं मम ॥२७७॥

बनपालकस्तत्र साधुरवादीद् भ्रातमोऽप्यहम् ।
निरस्तो कैनचिद् भ्रात्र्यावत्यं तदवतरप्रह ॥२७८॥

....

मयेद मानाऽस्मामी हि मधुदासीनचेतसि ॥२७९॥

.. ....

त्वयि जीवति मोजस्य समा यत् परिभूयते ॥२८ ॥
परामवस्तवैवाऽयम् इति श्रुत्वा क्षितिप्रभुः ।
प्राह मा विषदाम्, मिश्रुः मत्कोपात् बोध्यते प्रगे" ॥२८१॥
—(प्रभावकचरित्र पृ० २४१–२४२)

अर्थात् वनपालको भोज कहता है कि—

महाराजा मुंज के आप बडे पुत्र हैं, मैं छोटा पुत्र हूं, क्या इस छोटे पुत्रका वचन गम्य-मान्य-हो सकता है? पहिले बडे महाराजाने-मुंजने-अपनी गोदमें बैठा कर आपको 'वाग्विलासी सरस्वती'—'कूर्चालसरस्वती' इस प्रकार बिरुद दिया है। भाग्ययोगसे अब तुमने हमारा—हम बूढोंका—तथा हमारे राज्यका त्याग कर दिया है.

धर्मविरोध आपका है, अब उसकी पराजय हो या जय हो इस बातको आप समझें. किसकी आजतक किसीसे पराजय नहीं हो सकी ऐसी धारा नगरीकी पंडितसमाजको पराजय करके यह कौलमतका धार्मिक परदेशी पंडित जय पत्र ले जायगा. अब यह परिस्थिति आपके लिए अच्छी है या विरूप-बुरी है यह बात आप स्वयं समझ लें.

अब आपको इससे अधिक कहना मैं उचित नहीं जानता. सामान्य पुरुष भी इस बातको स्वयं समझ सकता है कि इस मौके पर तो आना ही चाहिए—दूसरी बात नहीं हो सकती. आप तो बडे चतुर हैं, अत जैसा उचित समझें करें.

राजा भोज द्वारा भाए हुए पुरुषोंसे इस बातको सुनकर धनपाल भपने वतनके पक्षपातसे तुरंत धारानगरी तरफ जानेको तैयार हो गया और राजा भोजके दरबारमें भा पहुचा

जब राजा भोज कवि धनपाल को भपने सामने भाते हुए देखा तब राजा स्वयं खडे होकर उसको लेनेके लिए चक्कर के उसके सामने गया और उस भीनिमि धनपाल कविसे खूब स्नेहसे भेंट करके राजा भोजने कि मेरे भविनयको क्षमा करें

तब धनपालकी आंखोंमें आंसू आ गये और कवि बोला कि मैं ब्राह्मण हूं तो भी निस्पृह हूं तथा जैनधर्मकी आराधना कर रहा हूं अब मैं इन राजसभाकी झपटोंसे मान वा अपमानसे उदासीन हो गया हूं अतः मेरे चित्तमें इनका कोइ असर नहीं हैं

फिर राजाने कहा कि आपमें ऐसी उदासीनता आ गई है सो तो ठीक है, परंतु भापके जीते भी भोजकी सभाकी पराजय कैसे हो सकती है? भोजकी सभाकी पराजय मानो आपकी ही पराजय है.

तब कविने राजाको कहा कि महाराज! आप खेद न करें, उस कौल भिक्षुका कल प्रात कालमें ही पराजय हो जायगा "

११ कविका संमान

राजा मुंजने धनपालको कूर्चाल सरस्वती तथा सिद्ध सारस्वत ऐसे दो विरुद दिए थे इस बातका निर्देश प्रबंधमें है.

१२ लंकामें पहुंचनेके लिए हनुमानने जो सेतु बांधा था उस पर कोई पुरानी प्रशस्ति थी, ऐसा उल्लेख प्रबंधमें है. उस प्रशस्तिको लेनेके लिए राजा भोजने अपने कुशल आदमियों को लंकामें भेजा था प्रबंधमें लिखा है कि प्रशस्ति श्रीहनुमानकी बनाई हुई थी.

जिन आदमियोंको प्रशस्ति लेनेके लिए भेजा गया था वे तैरने में बडे कुशल थे तथा समुद्रमें जान पर उन्हें आंखोंसे बराबर सब कुछ दिखाई

है इस हेतुसे उन्होंने अपनी आंखमें मधुमक्खियों की चर्बी का अंजन लगाया था प्रशस्तिकी प्रतिलिपि लेनेके लिए उन्होंने अपने पास मोम की स्लेट-पाटी-रक्खी थी, मोम की स्लेट द्वारा शिलालिपिकी प्रतिरूप बराबर आ सकती थी अथवा रबिंग (Rubbing) ठीक हो सकता था. इन मोम की स्लेटोंसे रबिंग करके उस रबिंग की नकल करनेके लिए दूसरी तरह बनी हुई पट्टिकाओं का भी वे साथ में रखते थे क्यों कि लिए हुए रबिंग उनकी उन पट्टिकाओं के ऊपर बराबर आ सकते थे

प्रबंधोक्त इस बातसे मालूम होता है कि समुक्त उत्तर मन्दर कोई प्रशस्ति थी और उसके प्रणेता स्वयं हनुमान थे. प्रबंधमें प्रशस्ति के अंतिम पद्य भी लिए है. इनको मैं यहां नहीं उद्धृत करता अधिक जिज्ञासु लोग इस बातको समझने के लिए प्रभावकचरित्र पृ २३४-२३५ श्लो १७१ से १८० तक देख लेवें.

उन खंडित प्रशस्तिके पद्योंकी पूर्ति राजाको सतोष हो इस प्रकार अन्य कवि नहीं सर सके परंतु धनपाल कविने उन पद्योंकी समस्यापूर्ति करके राजा भोज को संतुष्ट किया था इतना ही सूचन करनेके लिए यह उल्लेख इधर दिया गया है

११ धनपालका छोटा भाई शोभनमुनि भी अच्छा कवि था उसने शोभनस्तुति नाम की स्तुतिमाला बनाई है जो चौबीस तीर्थंकरों की स्तुतिरूप है तथा यमकालंकार युक्त गंभीर अर्थ सहित है. उस स्तुति पर विशेषतःरूप वृत्ति महाकवि धनपालने बनाई है.

१४ धनपालने तिलकमंजरी नाम की जो कथा रची है उसमें बहुतसे पुरान जैन तथा अजैन सत कवियोंका सादर स्मरण किया है. सबसे पहिले भगवंत महावीर के प्रथम गणधर इन्द्रभूतिको सविनय याद किया है. बादमें महाकवि तथा आदिकवि वाल्मीकि और व्यास प्रवरसेन, तरंगवतीके कर्ता पादलिप्त (जैन), जीवदेव (जैन), कालिदास बाण, माघ, भारवि भवभूतिम

कथाकार हरिभद्र (जैन), भवभूति, वाक्पतिराज भद्रकीर्ति अपरनाम बप्पभट्टि (जैन), यायावर राजशेखर महेन्द्रसूरि जैन-(धनपालके धर्मगुरु) रुद्र और कर्दमराज, इन सब कवियोंका सादर स्मरण किया है, उसमें कवि कालिदास का स्मरण करते हुए कवि धनपालने कवि कालिदास को आसन्नवर्तिना ऐसा विशेषण दिया है, इससे मालूम होता है कि कवि कालिदास धनपालका पूर्ववर्ती होनेपर भी आसन्नवर्ती था धनपालके इस उल्लेखसे कालिदासके समय पर जरूर संशोधनीय दृष्टिकोणसे विचार करना आवश्यक है। आसन्नवर्ती अर्थात् धनपालसे सो दोसौ बरस पहिले हो इतना संभवनीय है ज्यादा पूर्ववर्तीको कोई आसन्नवर्ती ऐसा विशेषण नहीं दे सकता

१५ कवि विरचित ग्रंथ

१ पाइयलच्छी नाममाला

२ धर्मविमपञ्चाशिका—बृहट्टिप्पनिका नामकी प्राचीन जैन ग्रंथसूची में इसका नाम धनपालपञ्चाशिका लिखा है तथा प्रभानंदसूरिने इस पर वृत्ति बनाई है ऐसा भी सूचन किया है.

३ श्री सत्यपुरीय महावीर उत्साह

४ महावीरस्तुति (विरोधाभास अलंकार सहित) — महावीरस्तुतिका नाम बृहट्टिप्पनिकामें वीरस्तव' लिखा है तथा निम्मऊणाई' पदसे स्तुतिका प्रारंभ बताया है और सूराचार्यने इस पर वृत्ति बनाई है ऐसा भी लिखा है.

५ तिलकमंजरी (इस ग्रंथके ऊपर कवि के परमस्नेही श्री वादिवेताल-शांतिसूरिने पंजिका बनाई है) — धनपालकी रची हुई यह कथा चंपूरूप वर्णनप्रधान है, तथा शान्त्याचार्यने इस पर टिप्पन, लघु धनपालने तिलकमंजरी-सारोद्धार बनाया है ऐसा बृहट्टिप्पनिका में लिखा है.

६ शोभनमुनि कृत शोभनस्तुति के ऊपर वृत्ति ।

इतने ग्रंथ श्री धनपाल महाकवि के बनाए हुए विद्यमान हैं

है इस हेतुसे उन्होंने अपनी भींतोंमें मण्डपिका की भरती का अंकन लगाया था प्रशस्तिकी प्रतिलिपि करनेके लिए उन्होंने अपने पास मोम की स्लेट–पाटी–रक्खी थी, मोम की स्लेट द्वारा शिलालिपिकी प्रतिछाप बराबर आ सकती थी अर्थात् रबिंग (Rubbing) ठीक हो सकता था इन मोम की स्लेटोंसे रबिंग करके उस रबिंग की नकल करनेके लिए दूसरी तरह बनी हुई पट्टिकाओं को भी वे साथ ले गए थे क्यों कि लिए हुए रबिंग लेखकी उन पट्टिकाओं के ऊपर बराबर आ सकते थे.

प्रबन्धोक्त इस बातसे मालूम होता है कि सेतुके ऊपर जरूर कोई प्रशस्ति थी और उसके प्रणेता स्वयं हनुमान थे प्रबंधमें प्रशस्ति के खंडित पद्य भी लिए हैं. इनको मैं यहां नहीं उद्धृत करता अधिक जिज्ञासु लोग इस बातको समझने के लिए प्रभावकचरित्र पृ २३४–२३५ श्लो १७१ से १८० तक देख लें.

उन खंडित प्रशस्तिके पद्योंकी पूर्ति राजाको संतोष हो इस प्रकार अन्य कवि नहीं कर सके परंतु धनपाल कविने उन पद्योंकी समस्यापूर्ति करके राजा भोज को संतुष्ट किया था इतना ही सूचन करनेके लिए यह उल्लेख इधर दिया गया है.

१३ धनपालका छोटा भाई शोभनमुनि भी अच्छा कवि था उसने शोभनस्तुति नाम की स्तुतिमाला बनाई है जो चौवीस तीर्थंकरों की स्तुतिरूप है तथा यमकालंकार युक्त गम्भीर अर्थ सहित है. उस स्तुति पर विवेचनरूप वृत्ति महाकवि धनपालने बनाई है.

१४ धनपालने तिलकमंजरी नाम की जो कथा रची है उसमें बहुतसे पुराने जैन तथा अजैन सब कवियोंका सादर स्मरण किया है. सबसे पहिले भगवान महावीर के प्रथम गणधर इन्द्रभूतिको सविनय याद किया है. बादमें महाकवि तथा आदिकवि वाल्मीकि और व्यास, प्रवरसेन, तरंगवतीके कर्ता पादलिप्त (जैन), जीवदेव (जैन), कालिदास, बाण, माघ, भारवि समरादित्य

आचार्य हेमचंद्र अपने 'अभिधानचिंतामणि' नामके कोश की स्वोपज्ञवृत्ति में 'व्युत्पत्तिर्धनपालतः' ऐसा स्पष्ट निर्देश प्रारंभमें ही किया है. इससे ऐसा मालूम होता है कि धनपालने व्युत्पत्ति के संबंधमें कोश जैसा कोई ग्रंथ बनाया हो. इस संबंधमें श्रीविक्रमविजयमुनि (श्रीमद्विजयलब्धिसूरि शिष्य) लिखते हैं कि 'तेमणे १८ श्लोकप्रमाण संस्कृतभाषानो कोष बनाव्यानो उल्लेख मळे छे" इत्यादि—(केसरबाई जैन ज्ञानमंदिर प्रकाशित पाइअलच्छी-नाममाला प्रस्तावना) अर्थात् धनपालका बनाया हुआ कोई संस्कृत कोश है ऐसा कोई उल्लेख उक्त मुनिश्रीने सूचित तो किया है परंतु वह उल्लेख किसने किया है, किस ग्रंथ में किया है ? इत्यादि कुछ भी सूचित नहीं किया है अतः श्रीहेमचंद्राचार्य के उक्त उल्लेख से केवल एक ऐसी कल्पना होती है कि श्रीधनपालने कोई कोश भी बनाया हो।

धनपाल इस प्रकारका महातेजस्वी, निःस्पृह, जैनधर्मका परमउपासक तथा असाधारणकोटिका पंडित था, भावक था. धनपाल जैसी प्रतिभा वर्तमानसमयके भावकों में भी प्रकट हो यही अंतिम प्रार्थना

बेचरदास दोशी

महाकवि–धनपालविरचिता–

पाइअलच्छीनाममाला ।

१–नमिऊण परमपुरिसं पुरिसुत्तमनाभिसंभवं देवं ।
वुच्छं 'पाइअलच्छि' त्ति नाममालं निसामेह ॥[१]

२–कमलासणो सयंभू पियामहो चउमुहो य परमिट्ठी ।
धेरो विही विरिंचो पयावई कमलजोणी य ॥२

३–पक्खवायणी भवाणी सेलसुआ पव्वई उमा गोरी ।
अज्जा दुग्गा काली सिवा य कच्चायणी चंडी ॥३

४–अक्को तरणी मित्तो पंचवो दिणमणी पयंगो य ।
अहिमयरो पच्चूहो दिवसयरो अंसुमाली य ॥४

५–इंदू निसायरो ससहरो विहू गहवई रयणिनाहो ।
मयलंछणो हिमयरो रोहिणिरमणो ससी चंदो ॥५

६–धूमद्धओ हुयवहो विहावसू पावओ सिही वण्ही ।
अणलो जलणो दहणो हुआसणो हव्ववाहो य ॥६

७–मयरद्धओ अणंगो रइणाहो वम्महो कुसुमबाणो ।
कंदप्पो पंचसरो मयणो संकप्पजोणी य ॥७

८–मयरहरो सिंधुवई सिंधू रयणायरो सलिलरासी ।
पारावारो उवही तरंगमाली समुद्दो य ॥८

---

१ मङ्गल । २ जिन अर्थोंके सूचक जितने पर्याय शब्द हैं उनकी यथाक्रम अंक आदिके साथ बतलाया गया है । २ ब्रह्मा १ । ३ पार्वती १२ । ४ सूर्य १ । ५ चन्द्र ११ । ६ अग्नि ११ । ७ कामदेव ९ । ८ समुद्र ९ ।

५३–कोयंडं गंडीवं धैम्मं धणुहं सरासणं चावं ।
५४–खग्गं असी किवाण करवालं मंडलग्गा य ॥३७

५५–सिण्हो नीहारो घुमिओ य महिओ य धूममेहिसी य ।
५६–कल्लोलो उल्लासो उम्मी वीई तरंगो य ॥३८

५७–नीलुप्पलं कुवलयं कुवलयं इंदीवरं च कंदुट्टं ।
५८–पंडुरमेय तु पुंडरीअं गद्दह केरवं सेप्फ ॥३९

५९–पयरहो कायंबो हंसो धयरट्ठा मरालो य ।
६०–सउला सहरो मीणो तिमी झसो अणिमिसो मच्छो ॥४०

६१–सउणो खगो सउणो पयरहो अदयो विहंगो य ।
६२–साणो भसणो इंदमहकामुआ मंडलो कविलो ॥४१

६३–पियमाहवी परहुओ पंडियठी कोइलो वणसवोई ।
६४–मोरो सिंही बरहिणो सिहंडिणो नीलकंठा य ॥४२

६५–साहामओ वणिट्टुरो पवंगमो वाणरो कई पवंगमो ।
६६ पंचाणणो मयारी मयाहिवो केसरी सीहो ॥४३

६७–वसिअट्ठा रिछो पुदणो य रंको य कायसा कोया ।
६८–रेछी पुली बेम्पा सहूमो पुंडरीओ य ॥४४

६९–नंदी तवो वद्धुसो गि ही गोमा य राहिसी सुरही ।
७०–पेमी हरिणी कवमा मयी कुरंगी य सारंगी ॥४५

---

५३ धनुष ६ । ५४ खड्ग-तलवार । नीहार-कुहरा ।
६ तरंग ५ । ७ नीलकमल ४ । ५८ कुमुद ५ । ९ हंस ५ । ६
मछली । ६१ पक्षी ६ । ६२ कुत्ता ५ । ६३ कोयल । ६४ मोर
५ । ६५ वानर-बन्दर ६ । ६६ सिंह ५ । ६ रीछ ६ । ६८ बाघ ५ ।
६९ गऊ-गाय ७ । हरिणी ६ ।

५२४–तोडिअं ओओोडिमयं। ५२५–निड्डुंमं ओंपम्मिम निसौमिमयं।
५२६–पेअवं च पंडुवं। ५२७–पणोमिम दिम्मं चवेंपोमं ॥१८४
५२८–संविद्द संसरेयं। ५२९–पोडिम-डुंड्डिमाई भंमिम-ऽत्ये।
५३०–संविट्ठे अप्पोरिमं। ५३१–चन्ने तिपं च उप्पायं ॥१८५
५३२ रंसोमिर पेयोमिर। ५३३–सम्वेणं पैसरिमं पैपहं च।
५३४–संकोडिम निंरंपिमं। ५३५–वरोसिमयं च तोरंविम ॥१८६
५३६–कसिवं ओलिवं। ५३७–पयोरिमं वंपिमे च वेसविमं।
५३८–वम्मोसिमं उप्पुंपिमं। ५३९–मडुंरमे मोडोमिमं तुमिमं॥१८७
५४०–परिचवें सम्मुंयमय। ५४१–पिवेपिमं विवेडिमं विमौसिमयं।
५४२–ओसाइम च विसेसिमें। ५४३ उग्गेहुट्ट पुम्मिमें फुसिमें ॥१८८
५४४–विविक्खेलयं पर्व्यं। ५४५–सिवं निर्पंपविम च ओंद्द।
५४६–वम्मारिमं चवोंसिम। ५४७–अंसुसाइम अडुसोपारं ॥१८९
५४८ मोचरिमं अम्मिंडिमं। ५४९–अविरहुयं पीडिमे परंवं च।
५५०–परोंट्ठ विम्मौरिमं। ५५१–पुक्खपुम्मिमं फैडिम फुडिम ॥१९०
५५२ मेंड्ढ फिडिमं पुंडं। ५५३–परिहूम मरिसिमे परहिमं।

---

१ ताडित १। ५११ आकर्षित–हुआ हुआ १। ५११ पर्वाप्त–बहुत १। ५१ हत १। ५२ ताडित १। ५११ भक्षित १। ५१ कंपित १। ५११ काष्ठ–शिला १। ५१२ कौसल्य माला १। ५१३ प्रस्तुत–वैभव हुआ १। ५१४ पिंडुमित १। ५१५ प्रक्षेपित १। ५१६ आवसित १। ५१ पतित १। ५१८ अभ्यासित १। ५१९ सुमित १। ५ स्वीकार किया हुआ १। ५ १ विभाजित १। ५ २ मिश्रित १। ५४३ हुआ हुआ–स्पष्ट १। ४४ विक्षिप्त १। ५४५ मित १। ५४६ बभापित १। ५४७ आडुमित १। ५ आपतित १। ५ पीडित १। ५ विस्फल १। ५५१ दिया हुआ १। ५५१ मत १। ५५३ हारा हुआ १।

५५४-परिदेविंभं विमनिंभ ५५५-विरोलिअं मथिअं महिअं ॥१९१
५५६-पंसोडिअं विमुहं । ५५७-गुंडिअं उद्दूलिअं च धूसरिअं ।
५५८-मोट्टोसिअं च सविअं । ५५९-मरिउट्ठं च बोसंई ॥१९२
५६०-ओड्डं ओमरिअं । ५६१-नेविड्डुं अण्णेसिअं विमग्गिअय ।
५६२-रेमाविअं सुण्णइंअ ।५६३-निमिअं निहिअ च निक्खिंत्तं ॥१९३
५६४-मरिअं सहिअं सुमरिअं । ५६५-मोसडं पाडिअ निमुढं च ।
५६६-निमुडिअं मक्कलमरोणयं। ५६७-उम्मदवेस च उम्मिंवं ॥१९४
५६८-महुरोगयं ओसेरिअ । ५६९-विडुअं कमड्ढअं कणायिण्ण ।
५७ -विरमीलिअ विदीरिअ। ५७१-मोरोविअयं च मोसिमयं ॥१९५
५७२-वणुंकेयं उट्टिंहिअ। ५७३-कप्पेरिअ दारिअ च निम्मिण्ण ।
५७४ उड्डीणं वप्पेअं । ५७५ जूंरिअं उवमिअं मेंडिअ ॥१९६
५७६-नीरेरिअ निग्गिण्णं । ५७७-वट्टं संदोणिअ निमिअ च ।
५७८-ऊमट्टं यांसयं । ५७९-मरेमाडिअं निग्गयामोअं ॥१९७
५८० घुम्मेइम संमूढं । ५८१-फ्तोंडिअं ओरपिअ च ओरंत्तं ।

---

५५४ सिलसिंअ १ । ५ विक्रोमा हुआ १ । ५ ६ मिमुख १ । ५५७ उढुलित १ । ५५८ आमोसित १ । ५९ मिफलित १ । ५६ कमरा हुआ १ । ६१ मवेसित १ । ५६ एन्य-वासी १ । ५६२ मिखिम-मिपि किया हुआ १ । ५६४ बाद किया हुआ १ । ६५ मिगमा हुआ १ । ५६६ मार के ममा हुआ १ । ६० उडूर वेषयुक्त १ । ५६८ सामल आमा हुआ १ । ५६९ बिंदु बिंदु युक्त १ । ५ प्रमीलित १ । ५७१ मालिन्य-पीमायुक्त १ । ७२ वमिमिल-नमम किया हुआ १ । ५७३ चमरा हुआ १ । ४ चला हुआ १ । ५ ५ नष्ट हुआ-मिरयुक्त १ । ५ ६ मिमीने मिमका हुआ १ । ५ मांधा हुआ १ । ५ ८ अपहृत-पाँरे से हत १ । ५७९ सुपथ चला हुआ १ । ५८ संमुढ १ । ५८१ वाडित-बाम किया हुआ १ ।

६०६–ओऊलं पालंबं । ६०७–हरिमिदणं अमरैसंदयं जाण ।
६०८–जबहुरंग मायंसं । ६०९–मायाबक्खय अरमेतायं ॥२०५
६१०–सीमंतिमं दुहाविमं । ६११–अपच्छिम परमं । ६१२–उद्धुरं उच्चं ।
६१३–पायेमयं च पहेमयं । ६१४–दमोली उच्चुंगडीरी ॥२०६
६१५ विसंठं विसंमं । ६१६ वियेसिमं उच्चवं । ६१७–कत्तिय मासिणा सरेमा ।
६१८–सिसिरो फग्गुण-माहो । ६१९–हेमंतो पोस-मग्गसिरो ॥२०७
६२०–दुप्पेरियंठं असेक । ६२१–पुकोआ अभिमपोरुसोडावा ।
६२२ पुंजोयं पिंडलयं । ६२३–उंऊ रिऊ । ६२४ पोयेजो वोयो ॥२०८
६२५–अवेयारो पुप्फवली । ६२६–कुसुम कामिमणीए तोविच्छं ।
६२७–नवेसं गविसं । ६२८–उसेसी वीरेमं । ६२९–मोमोवमो सेणी ॥२०९
६३०–अगेमवलंपो मणिमं । ६३१–पाइंवी तुरयवेहपिमरण ।
६३२–मरेसं विसं । ६३३–विसोमं सिंगं । ६३४–रज्जू वरेत्ता य ॥२१०

---

६ ६ प्रालंब–झूमखा २ । ६ हरिमंदथ २ । ६ ८ उत्तम घोड़ा २ । ६ ९ अरमलाप–अरलोदय २ । ६१ सिर के बालों में दो भाग किया हुआ २ । ६११ अंतिम २ । ६१२ ऊँचा २ । ६१३ बामला–भोजन का बारला–बारी बारी से भोजन के लिए जाना २ । ६१४ दूब की पोटी २ । ६१५ विकल २ । ६१६ अरवाच २ । ६१७ शरद–कार्तिक और आसो १ । ६१ सिसिर–फागुन और माह मास १ । ६१९ हेमन–पोस और मिगसिर १ । ६२ अशोक २ । ६२१ पौरुष का मिथ्या प्रलाप–पुरुष पुरुषार्थ का आलाप–पौरुष सूचना २ । ६२२ पुंज–ढिग २ । ६२३ ऋतु २ । ६ ४ दोहन के लिए गाय को मारने की मार वाली लाठी २ । ६२५ अवचार–पुष्प का बलि चढ़ाना–पुष्पपूजा २ । ६ ६ तापिच्छ–तमाल के पेड़ का फूल १ । ६२ गवेष–पशु का नाप नाल–ग्रास २ । ६२ वीरण–पानी का डरा और सुगंधी करने वाला घास २ । ६२९ श्येन २ । ६३ अश्वीय–सेना २ । ६३१ घोड़े के शरीर का शृंगार १ । ६३२ विष २ । ६३३ सिंग २ । ६३४ रस्सी–पिंडों द्वारा कुआ से पानी निकालने की रस्सी–वरत २ ।

९९७–हरे तरुणीके । ९९८–ईसो ईसो थोडो य मत्सरये ॥२७५

* विक्कमकालस्स गए अउणत्तीसुत्तरे सहस्सम्मि (१०२९)
मालवनरिंदधाडीए लूडिए मन्नखेडम्मि ॥२७६
धारानयरीए परिट्ठिएण मग्गे ठिआए अणवज्जे ।
कज्जे कणिट्ठबहिणीए 'सुंदरी' नामधिज्जाए ॥२७७
कइणो अंध जण किवा कुसल त्ति पयाणमंतिमा वण्णा ।
नामम्मि जस्स कमसो तेणेसा विरइया देसी ॥२७८
कव्वेसु जे रसड्ढा सद्दा बहुसो कईहिं बज्झन्ति ।
ते इत्थ मए रइया एयं तु हियए सहियाणं ॥२७९

॥ पाइअलच्छी नाममाला समत्ता ॥

---

९९ हर लावण्य सूचक शब्द । ९९ शब्द अर्थ सूचक अर्थात् पर्यायवाचक शब्द ईसा– ईस इस तथा थोड ।

विक्रम के १०२९ वर्ष बीत जाने पर जब मालव के राजाने मान्य खेड–मलेखडा–नगर पर धावा किया तब धारा नगरी के निर्दोष मार्ग पर रही हुई 'सुंदरी' नामकी अपनी छोटी बहिन के लिए धनपाल कविने यह देशी कोष प्राकृतलक्ष्मी नामका बनाया । २७६–२७७

कविने इस पद्य के पूर्वार्ध के पदों के अंतिम अक्षरों से अपना नाम— धणपाल अर्थात् धनपाल — सूचित किया है । नाम सूचक अक्षर बड़े करके मुद्रित किये हैं । २७८

काव्योंमें जो शब्द रसाढ्य हैं तथा कविजनोंने जिन शब्दोंका बहुत प्रयोग किया हुआ है उन सब शब्दोंका इस कोषमें संग्रह किया हुआ है, वे सब शब्द सहृदयोंके हृदयमें रमण करो । २७९

॥ प्राकृतलक्ष्मी नाममाला कोष समाप्त ॥

शब्दानुक्रम

संकेतसूचना—वि०—विशेषण क्रि० वि०—क्रियाविशेषण स० वि० सर्वनाम विशेषण न०—नान्यतर—जाति—नपुंसक लिंग पु० नरजाति—पुल्लिंग स्त्री०—नारीजाति—स्त्रीलिंग क्रि०—क्रियापद अ० अव्यय

अ

अंक	प्राकृत	संस्कृत	लिंग	हिन्दी	अंग्रेजी
१४१	अइक्कंत	अतिक्रान्त	वि	अतिक्रान्त	Passed
१४१	अइच्छिअ	अतिगत	वि	गया हुआ	Passed
१११	अइण	अजिन	न	चमडा	Skin
८८५	अइमुत्त	अतिमुक्त	पु	माधवी लता	Gartnera Racemosa
७८१	अइर	अजिर	न	आंगन	Court
१ २	अइरावण	ऐरावण	पु	ऐरावण हाथी	Airavana
८११	अइरित्त	अतिरिक्त	वि	अधिक	In excess
५४२	अइसइअ	अतिशयित	वि	अतिशयित—विशेषता-युक्त	Exceeding
१५१	अइसएण	अतिशयेन	अ	खास	Exceedingly
६४८	अइसयभरिअ	अतिशयभृत	वि	बहुत भरा हुआ	Filled to over flowing
४	अंसुमालि	अंशुमालिन्	पु	सूर्य	Sun
११	अंसुअ	अंशुक	न	वस्त्र	Garment, cloth
७१	अंसु	अंशु	पु	किरण	Ray
७४	अंस	अंश	पु	अंश—भाग	Share
११५	अकरुण	अकरुण	वि	निर्दय	Pitiless
४५	अकिंचण	अकिंचन	वि	दरिद्र निर्धन	Poor
५११	अक्कंतभरोणय	आक्रान्तभरावनत	वि	भार से दबा हुआ—अवनत	Bending under a load
५८५	अक्कंत	आक्रान्त	वि	व्याप्त—दबा हुआ	Attacked
४	अक्क	अर्क	पु	सूर्य	Sun
५५	अक्कोसिअ	आक्रोशित	वि	आक्रोश युक्त	Reviled

शब्दानुक्रम

संकेतसूचना—वि०—विशेषण, क्रि वि०—क्रियाविशेषण, स वि सर्वनाम विशेषण, न०—नान्यतर-जाति-नपुंसक लिंग, पु०—नरजाति-पुल्लिंग, स्त्री —नारीजाति—स्त्रीलिंग, क्रि —क्रियापद, अ अव्यय

अ

अंक	प्राकृत	संस्कृत	लिंग	हिन्दी	अंग्रेजी
१२१	अइक्कंत	अतिक्रान्त	वि	अतिक्रान्त	Passed
१२१	अइच्छिअ	अतिगत	वि	गया हुआ	Passed
२२९	अइण	अजिन	न	चमड़ा	Skin
८८५	अइमुत्त	अतिमुक्त	पु	माधवी लता	Gartnera Racemosa
८१	अइर	अजिर	न	आंगन	Court
१८२	अइरावण	ऐरावण	पु	ऐरावण हाथी	Airavana
३१	अइरित्त	अतिरिक्त	वि	अधिक	In excess
५४१	अइसइअ	अतिशयित	वि	अतिशयित—विशेषता-युक्त	Exceeding
१५	अइसएण	अतिशयेन	अ	खूब	Exceedingly
६४८	अइसयभरिअ	अतिशयभृत	वि	बहुत भरा हुआ	Filled to overflowing
४	अंसुमालि	अंशुमालिन्	पु	सूर्य	Sun
११	अंसुअ	अंशुक	न	वस्त्र	Garment, cloth
७२	अंसु	अंशु	पु	किरण	Ray
४४८	अंस	अंश	पु	अंश—भाग	Share
११५	अकरुण	अकरुण	वि	निर्दय	Pitiless
४९	अकिंचण	अकिंचन	वि	गरीब निर्धन	Poor
५६६	अक्कंतभरोणय	आक्रान्तभरावनत	वि	भार से दबा हुआ—अवनत	Bending under a load
५८५	अक्कंत	आक्रान्त	वि	आक्रान्त—दबा हुआ	Attacked
४	अक्क	अर्क	पु	सूर्य	Sun
५ ८	अक्कोसिअ	आक्रोशित	वि	आक्रोश युक्त	Reviled

४११	अणालवन्त	अनालपत्	पु	मौन रखनेवाला	Not-addressing
६	अणिमिस	अनिमिष	पु	मछली	Fish
६१	अणिय	अनीक	न	रणभूमि का अग्रभाग	Van of an army
९	अणिल	अनिल	पु	वायु	Wind
४	अणीय	अनीक	न	सेना	Army
१६६	अणुजीवि	अनुजीविन्	पु	नौकर	Servant
४४१	अणुताव	अनुताप	पु०	पश्चात्ताप	Repentance
४६	अणुदियह	अनुदिवस	क्रि वि	रोज हमेशा	Daily
१६६	अणुपुव्व	अनुपूर्व	क्रि वि	क्रम से क्रमवार	Successively
४६५	अणुपुव्वी	अनुपूर्वी	स्त्री	परंपरा–क्रम	Sequence
१८४	अणुघंटिया	अनुघण्टिका	स्त्री	छोटी घण्टी–घुंघरी–घंटडी	Small bells
९	अणुचर	अनुचर	पु	सहायक–सहचर–सेवक	Servant
२६६	अणुराय	अनुराग	पु	स्नेह	Affection
६४	अणुरोह	अनुरोध	पु	दाक्षिण्य	Kindness
१५१	अणुवेल	अनुवेल	क्रि वि	निरंतर	Constantly
४४१	अणुसय	अनुशय	पु	पश्चात्ताप	Repentance
१२५	अणुहूय	अनुभूत	वि	अनुभव किया हुआ	Experienced
६१	अण्डय	अण्डज	पु	पक्षी	Bird
१६१	अण्णेसिय	अन्वेषित	वि	खोजा हुआ	Sought after
९	अतक्किय	अतर्कित	वि	अचानक–आकस्मिक	Suddenly
२११	अत्ता	अत्ता	स्त्री	सखी	Female friend
६	अत्ता	अत्ता	स्त्री	सासू	Mother-in-Law
२	अत्ति	आर्ति	स्त्री	पीड़ा	Pain
२ ४	अत्थ	अस्त्र	न	अस्त्र	Weapon
४६६	अत्थाणी	आस्थानी	स्त्री	सभा	Assembly
६५१	अत्थारअ*		पु	सहाय	Help
६४४	अत्थुय	आस्तृत	वि	विस्तीर्ण–आस्तीर्ण	Strewn
८	अत्थ	अर्थ	पु	धन	Wealth
४४७	अदिइ	अधृति	स्त्री	अधैर्य	Anxiety
६६५	अदाय		पु	दर्पण	Mirror

७१ अद्दि	अद्रि	पु	पर्वत	Mountain
१४२ अद्ध	अर्ध	न	आधा	Half
१६९ अद्धनिमीलिअ	अर्धनिमीलित	वि	आँख आधी मीचना– आधा मींचौनी	Half closed
११९ अद्धर	अध्वर	पु	यज्ञ	Sacrifice
४८३ अद्धंत*	अध्वान्त	पु	अंत–पर्यंत–रास्ते का अंत	Ends limits
८३ अद्धाण	अध्वन्	पु	मार्ग	Path
१२५ अनिबद्ध	अनिबद्ध	वि	अव्यवस्थित	Inappropriate
२० अंतअ	अन्तक	पु	यम काल	Yama
१५ अंतर	अन्तर	न	छिद्र–छेद	Hole, cleft
११३ अंतर	अन्तर	न	समय	Opportunity
४२५ अंतराय	अन्तराय	पु	विघ्न	Obstacle
१४ अंतरिक्ख	अन्तरिक्ष	न	आकाश	Sky air
४११ अंतरिअ	अन्तरित	वि	छुपा हुआ	Hidden
१६१ अंतिअ	अन्तिक	न	पास में	Near
११२ अन्तेवासिन्	अन्तेवासिन्	पु	शिष्य चेला	Pupil
१०१ अंतो	अन्तर्	अ	अन्दर–भीतर में	In
७६ अंधयार	अन्धकार	न	अँधेरा	Darkness
७६ अन्नह	अन्यथा	अ	नहीं तो	Other wise
१११ अपच्छिम	अपश्चिम	वि	अन्तिम	Last
११२ अप्पवस	आत्मवश	वि	स्वाधीन	Independent
११ अप्पवसा	आत्मवशा	स्त्री	स्वच्छंद स्त्री	Selfwilled woman
५१ अप्पाहिअ	संदिष्ट	वि	संदेश दिया हुआ	Pointed out
७४ अप्पुल्ल	आत्मीय	वि	अपना–निजका–आपका	Own
१४१ अप्फुण्ण*	आपूर्ण–आक्रान्त	वि	पूर्ण	Filled
११ अबला	अबला	स्त्री	स्त्री	Woman
५५ अब्भअ	अर्भक	पु	बालक	Little boy
११६ अब्भास	अभ्यर्ण	वि	पास–समीप	Near
१ अब्भपिसाअ*	अभ्रपिशाच	पु	राहु	Rahu
११ अब्भ	अभ्र	न	आभ–मेघ–बादल	Cloud
१४ अब्भ	अभ्र	न	आभ आकाश	Sky

४६७	अब्भास	अभ्यास	पु	अभ्यास–एक ही काम को बारंबार करना	Repeate, study
१६१	अब्भास	अभ्याश	क्रि वि	पास–निकट	Near
४८	अब्भिडिअ	संगत	वि	आश्लिष्ट मिला हुआ समाप्त हुआ	United, joined
५१	अब्भुअ	अद्भुत	न	आश्चर्य	Portent
५८	अब्भुवगय	अभ्युपगत	वि	स्वीकार किया हुआ	Obtained
११९	अमच्च	अमात्य	पु	मंत्री–प्रधान	Minister
१ ३	अमय	अमृत	न	अमृत	Nectar
१ ७	अमरचंदण	अमरचन्दन	न	हरिचंदन–गोशीर्षचंदन	Goshirsh chandan
१	अमर	अमर	पु	देव	God
१६	अमरावई	अमरावती	स्त्री	देव की नगरी–स्वर्ग	Town of gods
४१५	अमरिस	अमर्ष	पु	क्रोध	Anger
१ ६	अमरुज्जाण	अमरोद्यान	न	देव का वन–नन्दनवन	Indra's garden
५	अमित्त	अमित्र	पु	शत्रु	Enemy
१ ४	अमिलाण	अम्लान	पु	कोरंट का वृक्ष	Yellow Amaranth
१	अम्बर	अम्बर	न	आकाश	Sky
११	अम्बर	अम्बर	न	वस्त्र	Garment
१६६	अंब	आम्र	पु	आम का पेड़–आम का फल	Mango
१७१	अंबिलिआ	अम्लिका	स्त्री	इमली	Tamarind
१५	अम्बु	अम्बु	न	पानी	Water
१	अम्बुय	अम्बुज	न	कमल	Lotus
१	अयड*	अवट	पु	कुँआ	Well
३६	अयंड	अकाण्ड	क्रि वि	अचानक	Suddenly Inopportunely
७९	अयल	अचल	पु	पहाड़	Mountain
१९१	अयाणय	अज्ञायक	वि	मूर्ख	Fool
४४	अरइ	अरति	स्त्री	अधीरता–बेचैनी	Anxiety
१६१	अरण्णखेत्त	अरण्यक्षेत्र	न	जंगल में आया हुआ खेत	Field in the forest

८११ असहण	असहन	वि	सहन नहीं करनेवाला-क्रोधी	Angry
७५ असह	असह	वि	सह करनेवाला	Feeble
४२६ असामत्थ	असामर्थ्य	न	निर्बलता-कमजोरी-	Feebleness
६ असिधेणुआ	असिधेनुका	स्त्री	छोटी छुरी	Knife
२७५ असिमुट्ठि	असिमुष्टि	स्त्री	तलवार की मूठ	Sword-hilt
११४ असिअ	असित	वि	भोजन किया हुआ	Eaten
११३ असिअ	असित	वि	श्याम-काला	Black
५४ असि	असि	पु	तलवार	Sword
८७ असुंदर	असुन्दर	वि	खराब	Ugly nasty
१२ असुर	असुर	पु	असुर दैत्य	Asura
६२ असोअ	अशोक	पु	आसोपालव का पेड़-अशोक वृक्ष	Jonesia Asoka
७७२ अह	अदस्	स वि	यह-परोक्ष वह	This, that
८१ अहंकार	अहंकार	पु	अहंकार	Pride
५ अह	अघ	न	पाप	Sin
२१ अहम	अधम	वि	नीच	Low
८५ अहम्म	अधर्म	पु	अधर्म-पाप	Sin
४१७ अह	अहन्	न	दिवस	Day
४८५ अहिउत्त	अभियुक्त	वि	तल्लीन, उद्यत-तत्पर	Intent on
११३ अहिगय	अधिगत	वि	जाना हुआ-पाया हुआ	Understood
५४५ अहिदुय	अभिद्रुत	वि	दुःखी	Tormented
४३७ अहिणव	अभिनव	वि	नया, ताजा	New
६३१ अहिअ	अधिक	वि	अधिक	Eexceeding, in excess
४ अहिमयर	अहिमकर	पु	सूर्य	Sun
११८ अहिजाय	अभिजात	वि	नम्र-कुलीन-खानदान	Noble
अहिगार	अधिकार	पु	अधिकार	Topic
१४ अहिराम	अभिराम	वि	सुन्दर	Lovely
१४२ अहिरेमिअ*	पूर्ण	वि	पूर्ण-भरा हुआ	Filled
२७१ अहिरोहणिआ	अधिरोहणिका	स्त्री	निसनी-सीढी	Ladder stairs
५५१ अहिहविअ*		वि	पराजय पाया हुआ	Defeated

४७५	आयर	आदर	पु	आदर—मान	Respect, Under standing
८२	आयंक		पु	रोग	Disease
४५२	आयाम	आयाम	पु	लम्बाई	Length extent
८७१	आयार	आकार	पु	आकार—दूसरे को समझाने की चेष्टा	Deportment
६	आयावलय*	आतापलय	न	सुबह की धूप	Morning Sun
४११	आरक्खिअ	आरक्ष	पु	नगरकी रक्षा करनेवाला कोतवाल	Watchman
७८१	आरद्ध	आरब्ध	वि	आरम्भ—शुरू किया हुआ	Begun
२६८	आरनाल	आरनाल	न	राब पानी	Sour gruel
४२८	आरंभ	आरम्भ	पु	प्रारंभ—शुरूआत	Beginning
१४३	आराम	आराम	पु	बगीचा बाग़	Garden
३	आरूढ	आरूढ	वि	चढ़ा हुआ—सवार हुआ	Ascended
११७	आरेइअ	आरेचित	वि	रोमांचयुक्त	Horripilated
६१६	आरोविअ	आरोपित	वि	चढ़ाया हुआ—आरोप किया गया	Placed on
३४४	आलवाल	आलवाल	न	क्यारी—छोटी क्यारी	Basin round a tree
५११	आलाण	आलान	पु	हाथी को बांधनेका खीला	Post for tying elephants
११३	आलिंगिअ	आलिङ्गित	वि	भेटा हुआ	Embraced
१५	आलिद्ध	आश्लिष्ट	वि	भेटा हुआ—छोया हुआ—चिपका हुआ	Touched
२११	आलि	आलि	स्त्री	सखी	Female friend
१५	आसिलिअ	आश्लिष्ट	वि	भेटा हुआ—चिपका हुआ	Touched
६६८	आल	मतु	प्र[1]	'वाला' अर्थका सूचक प्रत्यय— जैसे दयाल—दयावाला	Affix
७५	आलोअ	आलोक	पु	प्रकाश	Light
५८	आवडिअ	आपतित	वि	संगत	United
२	आवणिअ	आपणिक	पु	बनिया व्यापारी	Merchant

[1] प्र०—प्रत्यय

१५४ उग्गाल	उद्गार	पुं	पगुराना–जुगाली करना	Chewing the cud
५११ उग्गिलिअ	उद्गीर्ण	वि	वमन किया हुआ	Vomited
५०६ उग्गाहिअ	उद्ग्राहित	वि	उद्ग्राहित–ऊंचा किया हुआ	Raised
४१८ उग्घाअ	उद्घात	पुं	आरम्भ–शुरुआत	Beginning
५०३ उचिअ	उचित	वि	उचित, ठीक	Proper
४११ उच्चअ	उच्चय	पुं	घाघरे की गांठ	Knot to fasten the petticoat
६१६ उच्चड	उच्चट	वि	पड़ा हुआ–छोड़ा हुआ	Loosened fallen
६६३ उच्चत्तवरत्तअ*		क्रि वि	दोनों बाजू ऊंचा नीचा करना–इधर उधर करना	Turning from one side to the other
६१२ उच्च	उच्च	वि	ऊंचा	High
७१५ उच्छलण	उच्छलन	न	उबटन	Rub Shampoo
५११ उच्छिडिम	उच्छिटिम	वि	मिमारी–मर्यादा हीन	Boundless
५२ उच्चिणिअ	उच्चित	वि	चुना हुआ	Gathered from a tree
१५८ उच्चिंखल*		न	मैला पानी	Muddy water
१४३ उच्छूढ	उत्क्षिप्त	वि	ऊंचे फेंका हुआ	Torn out
११२ उच्चेअ	उच्चेतस्	वि	चिंतातुर–उदास	Sad
७७५ उच्छंग	उत्संग	पुं	गोद–गोदम	Lap
१०६ उच्छक्कल*	उत्कापक	पुं	चीज चोरी करना	Sleight of hand in Stealing
५४ उच्छलिअ	उच्छलित	वि	उछला हुआ	Moved upwards
१४७ उच्छित्त	उत्क्षिप्त	वि	फेंका हुआ	Thrown out of order
११४ उच्छुपसीरी	इक्षुपण्डिरी	स्त्री	ईख का टुकड़ा	Stem of Sugar cane
५१२ उच्छुण्ण	उत्क्षुण्ण	वि	टूटा हुआ	Broken, crushed
३११ उच्छुवण	इक्षुवन	न	ईख का खेत–वन	Sugarcane field

१११ उच्छु	इक्षु	पुं	ईख गन्ना	Sugarcane
४८५ उज्जय	उद्यत	वि	उद्यमवान्–तत्पर	Intent on
१ १ उज्जाण	उद्यान	न	बाड़ी, बगीचा	Garden
१६ उज्जालिअ	उज्ज्वालित	वि	चमका हुआ–जलाया हुआ	Shining
४८५ उज्जुत्त	उद्युक्त	वि	उद्योग युक्त	Intent on
४ उज्जुअ	ऋजुक	वि	सरल सीधा	Straight
७५ उज्जोअ	उद्द्योत	पु	प्रकाश	Light
११८ उज्झिअ	उज्झित	वि	छोड़ा हुआ त्यक्त	Abandoned
[illegible]		पु	छीपा–कपड़ों को छापनेवाला	Dyer
१ १ उट्ठ	ओष्ठ	पु	ओठ	Lip
१५ उडव	उटज	न	झोंपड़ी	Hermitage
१७४ उडु	उडु	न	नक्षत्र	Constellation
९ उड्डामर	उड्डामर	वि	आडंबरी	False, showy
५१ उड्डिक्खिअ*		वि	ऊपर फेंका हुआ	Thrown up
५७४ उड्डीण	उड्डीन	वि	उड़ा हुआ	Flown up
१ ९ उण्णणाह	ऊर्णनाभ	पु	मकड़ी–करोलिया	Spider
७२ उण्ह	उष्ण	वि	गरम	Heat
८४ उत्तंस	उत्तंस	पु	कान में पहननेका गहना	Ear-ornament
१९९ उत्तुण	उत्तुण	वि	अभिमानी	Proud
१११ उत्तत्थ	उत्त्रस्त	वि	त्रास पाया हुआ	Frightened
७५ उत्तप्प	उत्तप्प	वि	गर्वित	Proud
२१५ उत्तमंग	उत्तमांग	न	माथा सिर	Head
५७५ उत्तम्मिर	उत्ताम्य	वि	खिन्न हुआ–खेद पाया हुआ	Distressed
४९ उत्तरिज्ज	उत्तरीय	न	दुपट्टा–खेस–पछेवड़ी–चद्दर	Upper garment
१९९ उत्ताण	उत्तान	वि	चित पड़ा हुआ, ऊर्ध्व मुखवाला	Proud
५१५ उत्तेजिअ	उत्तेजित	वि	उत्तेजित	Encouraged
९ ५ उत्थरिअ*	उत्स्तीर्ण	वि	दबाया हुआ	Attacked
५ उत्थंभिअ	उत्स्तम्भित	वि	मूल जगह से हटा हुआ–उछाला हुआ	Moved upwards
१५ उदग	उदक	न	पानी	Water
५१३ उद्धरिअ	उद्धृत	वि	उद्धृत	Torn out

११ उद्दामा	उद्दामा	स्त्री	स्वेच्छाचारिणी स्त्री	Self-willed woman
. उद्दालिय	उद्दालित	वि	टूटा हुआ	Split
११ उद्दीविय	उद्दीपित	वि	प्रकाशित	Shining
११२ उद्धच्च	ऊर्ध्वीकृत	वि	ऊंचा किया हुआ	Raised
४५५ उद्ध	ऊर्ध्व	वि	ऊपर	High
४५ उद्धय	उद्धत	वि	उद्धत उन्मत्त	Proud
१४३ उद्धरिय	उद्धृत	वि	उद्धार किया हुआ	Taken out
१४२ उद्धुमाय*	पूर्ण	वि	पूरा	Filled
११२ उद्धुर	उद्धुर	वि	ऊँचा	High
५८ उन्नामिय	उन्नामित	वि	नमा हुआ	Bent upwards
५८ उन्नाविय	उन्नावित	वि		Bent upwards
४१ उन्नाह	उन्नाह	पु	ऊंचाई	Elevation
५११ उन्नुइय*		वि	कुत्ते ने भौंका हुआ	Barking
५०४ उप्पइय	उत्पतित	वि	ऊंचे गया हुआ	Flown up
१८ उप्पंक	उत्पङ्क	पु	समूह	Heap collection
१४३ उप्पाडिय	उत्पाटित	वि	उखाड़ किया हुआ	Torn out
१ उप्पाइल*		न	उत्कट शौक	Longing
४७५ उप्पित्थ*		वि	व्याकुल	Confused
५३८ उप्पुणिय	उत्पूत	वि	उत्पूत	Winnowed
९ उप्पेहड*		वि	आडम्बरी	False, Showy
१७५ उप्फालिय	उत्फालित	न	सूचन-पैशुन्य करना	Spoken
३११ उप्फाल	उत्फाल	पु	दुर्जन	Wicked
१४८ उप्फुल्ल	उत्फुल्ल	वि	पुष्प हुआ	Blown as a flower
९ उब्भड	उद्भट	वि	उन्मत्त	Hypocritical
५६७ उब्भडवेस	उद्भटवेष	वि	उन्मत्त की तरह पहनावावाला	Splendidly dressed
७५५ उब्भेड	ऊर्ध्वीक	वि	ऊँचा-खड़ा-लम्बा	High
५३८ उब्भामिय	उद्भ्रामित	वि	उप्पुणिय-सूप आदि से साफ किया हुआ	Winnowed

५८५	ओवग्गिअ	उपवल्गित	वि	आक्रान्त व्याप्त	Attacked
४१४	ओवाइअ	उपयाचित	वि	मनौती	Prayer
११७	ओवास	अवकाश	पु	अवकाश	Place, space
५ १	ओसक्क*		वि	अपसृत	Departed
५११	ओसढ*	अवमुक्त	वि	अवमुक्त	Thrown down
५ १	ओसरिअ	अपसृत	वि	पीछे हटा हुआ	Departed
५१८	ओसरिअ	उपसरित	वि	पास में आया हुआ	Gone to meet
४ ७	ओसिंघिअ	अवघ्रात	वि	सूंघा हुआ	Smelt at
५१५	ओहामिअ	तुलित	वि	तुला हुआ	Weighed
११७	ओहार		पु	कछुआ काचबा	Turtles
५११	ओहीरइ	निद्राति	क्रि	निद्रा लेता है	He sleeps
५	ओहीरिअ	निद्रात	वि	निद्रा लिया हुआ	Sleeping
१८	ओह	ओघ	पु	समूह	Heap Collection

क

४१६	कइअव	कैतव	न	कपट	Fraud
१०८	कइलास	कैलास	पु	कैलास पर्वत	Kailas
६५	कइ	कपि	पु	बन्दर	Monkey
१ ५	कक्कड	कर्कटक	पु	ककडा	Crab
७	कक्कु	कर्कन्धू	स्त्री	बोरडी का वृक्ष	Jujube tree
११८	कक्कस	कर्कश	वि	निष्ठुर कठिन	Hard
५८	कक्खा	कक्षा	स्त्री	काख–बगल	Armpit
१७	कक्कास	कृकलास	न	गिरगिट–काचीडा	Lizard
६ २	कंकेल्लि		पु	अशोक वृक्ष, आसोपालव	Jonesia Asoka
१८१	कक्कोड*	कर्कोट	न	ककोडा	A kind of vegetable fruit, Kantola
८७	कंगु	कङ्गु	स्त्री	कांगन	Panicum Italicum
१	कच्चायणी	कात्यायनी	स्त्री	पार्वती	Parvati
३१	कच्छभ	कच्छप	पुं	कछुआ–काचबा	Turtles
५८५	कच्छा	कक्षा	स्त्री	कमर का गेहना–कटिमेखला	Girdle

५ २	कज्जलइअ	कज्जलित	वि	काजल-काजलवाला	Smeared with Collyrium
६६१	कडप्प*		पु	घास-कड़पा	Stack of grass
१४१	कंची	काञ्ची	स्त्री	कटिमेखला	Girdle
११६	कञ्चुअ	कञ्चुक	पु	चोली-अंगिया	Coat of mail
	कट्ठ	काष्ठ	न	काठ-लकड़ी	Wood
५१	कडक्ख	कटाक्ष	पु	कटाक्ष	Side glance
११	कडय	कटक	न	पर्वत का मूल भाग या मध्य भाग	Ridges
१६	कडार	कडार	वि	भूरा रंग	Brown
१	कडिअम्ब	कटीलम्ब	पु	कमर पर हाथ रखना	Placing the hand on the hip
११	कडिल्ल	कटीभव	न	कटी संबंधी वस्त्र	Lower garment
१	कडुच्छुअ		पु	बड़ा कलछा-कलछी	Iron spoon
१ १	कडुयाल		पु	छोटी मछली	Small fish
५ १	कड्ढिअ	कर्षित	वि	खींचा हुआ	Drawn near
१२	कढिण	कठिन	वि	कठोर	Hard
५६१	कणइअ		न	छोटे छोटे बिंदुओं से युक्त	Covered with Spots
२६१	कणइल्ल		पु	तोता	Parrot
११४	कणई		स्त्री	लता	Creeper
५१	कणय*		पु	बाण	Arrow
१	कणयगिरि	कनकगिरि	पु	मेरु	Meru
८	कणय	कनक	न	सोना	Gold
१	कणवीर	करवीर	पु	कनेर का पेड़	Oleander
५६१	कणायल्ल	कणाकीर्ण	वि	छोटे छोटे बिंदुओं से युक्त	Covered with spots
२५१	कणिर	क्वणितृ	न	घुंघरू-झांझर	Anklet
१८५	कंपिर		वि	थरथराता-कांपता	Quivering

११	कंटइअ	कण्टकित	वि	रोमांचयुक्त	Horripilated
१८१	कंटुल्ल*		न	कंटोला का शाक ककोड़ा	A kind of vegetable fruit, Kantola
१०५	कंठक्खलिअ	कण्ठस्खलित	वि	गद्‌गद् बोलना	Faltering
८४७	कंठ	कण्ठ	पु	कंठ	Throat
१६३	कण्ह	कृष्ण	वि	काला	Black
११७	कत्तिअ	कार्तिक	पु	कार्तिक मास	Month Kartika
२११	कत्ति	कृत्ति	स्त्री	चमड़ा	Skin
१०१	कत्थूरी	कस्तूरी	स्त्री	कस्तूरी	Musk
१४	कंत	कान्त	वि	सुंदर	Lovely
१०२	कंत	कान्त	पु	पति-कांत	Lover husband
२११	कंतार	कान्तार	न	वन जंगल	Forest
२४१	कंति	कान्ति	स्त्री	कांति सौंदर्य	Beauty splendour
७	कंदप्प	कन्दर्प	पु	कामदेव	Cupid
५१८	कंदर	कन्दर	पु	गुफा	Cave
४६	कंदुअ	कन्दुक	पु	गेंद-दड़ा	Ball
५७	कंदुट्ट*	कन्दोत्थ	न	नीला कमल	Blue lotus
२११	कंधरा	कन्धरा	स्त्री	डोक	Neck
८४	कण्णऊर	कर्णपूर	न	कान का गहना	Ear ornament
८१४	कण्ण	कर्ण	पु	कान	Ear
८६	कण्णा	कन्या	स्त्री	कन्या कुमारी	Girl, virgin
२१५	कण्णाभरण	कर्णाभरण	पु	कान का गहना-कुंडल	Ear ornament
८	कण्णोल्ली*	कर्णावली	स्त्री	कान का एक विशेष प्रकार का गहना	Ear ornament
५०२	कत्तरिअ*	कर्तित	वि	कटा हुआ-काटा हुआ	Torn
१०८	कप्पूर	कर्पूर	पु	कपूर	Camphor
५६	कप्पाड*	कपाट	पु	गुफा	Cave
५१	कबरी	कबरी	स्त्री	सँवारे हुए केश	Braid
११७	कमढ	कमठ	पु	कछुआ	Turtle
२	कमलजोणि	कमलयोनि	पु	ब्रह्मा	Brahma

१६१	कलिअ	कलित	वि	बुद्ध ज्ञात	Understood, joined
८८	कलिआ	कलिका	स्त्री	फूलकी कली	Bud
१५१	कलिल	कलिल	न	गहन	Thicket
७४४	कलि	कलि	पु	दुष्ट–खराब	Bad man
१५	कलुसजल	कलुषजल	न	अस्वच्छ पानी	Muddy water
५	कलुस	कलुष	न	पाप	Sin
७११	कलुस	कलुष	वि	मैला–अस्वच्छ	Muddy turbid
११	कल्ल	कल्य	न	कल–बीता हुआ दिन अथवा आनेवाला दिन	Yesterday and to-morrow
६	कल्ल	कल्य	वि	स्वस्थ–नीरोगी	Lever able
५६	कल्लोल	कल्लोल	पु	पानी के तरंग	Wave
४१८	कवड	कपट	न	कपट	Fraud
१७४	कवय	कवच	न	बख्तर	Coat of mail
११	कवलिअ	कवलित	वि	खाया हुआ	Eaten
१ १	कविअ	कविक	न	लगाम	Bit or rein
१६५	कविल	कपिल	वि	भूरा–भाखरा	Brown
६२	कविल	कपिल	पु	कुत्ता	Dog
१६५	कविस	कपिश	वि	भूरा	Brown
१ ४	कवोअ	कपोत	पु	कबूतर	Pigeon
५२	कवोल	कपोल	पु	गाल	Cheek
४	कव्वाअ	क्रव्याद	पु	मांस खानेवाला–राक्षस	Rakshasa
६६६	कसणपक्ख	कृष्णपक्ष	पु	कृष्ण पक्ष	Dark half of month
५ २	कसणिअ	कृष्णित	वि	काजल–काजलवाला	Smearid with collyrium
१६१	कसिण	कृष्ण	वि	काला	Black
६२	कस	कष	पु	कसौटी का पत्थर	Touch stone
६७	काअ	काय	पु	शरीर	Body
१११	काणण	कानन	न	वन जंगल	Forest
२६	कामपाल	कामपाल	पु	बलराम	Balarama

११ काम	काम	पु	वांछा मनोरथ	Desire
१८ कायंबरी	कादम्बरी	स्त्री	मदिरा	Spirituous liquor
५१ कायंब	कादम्ब	पु	हंस	Goose
१७ कायल	काक	पु	कौआ	Crow
१७ काय	काक	पु		Crow
४३१ कारण	कारण	न	कारण	Cause
५१ कारा	कारा	स्त्री	कैदखाना जेल	Prison
१५ कारु	कारु	पु	कारीगर शिल्पी	Artisan
१६१ काल	काल	वि	काला-श्याम	Black
१० काल	काल	पु	यम काल	Yama
१११ काल	काल	पु	वक्त काल समय	Time
७३१ कालायस	कालायस	न	लोहा	Iron steel
७११ कालिंदी	कालिन्दी	स्त्री	यमुना-यमुना नदी	Yamuna
४११ कालिया*	कालिका	स्त्री	मेघ का समूह बादल	Cloud
१ काली	काली	स्त्री	पार्वती	Parvati
१११ कासव	कर्षक	पु	किसान-गृहपति धरमालिक	Husbandman
११९ काहिल्लिया*		स्त्री	रोटी पकानेका तवा	Pan for baking bread
८४ किंकिणी	किंकिणी	स्त्री	घुंघरू	Little bell
२११ किडि	किरि	पु	वराह	Boar
२१ किणा	किम्	अ	प्रश्नसूचक क्यों? किस लिए?	From whom
११७ किम्मीर	किर्मीर	वि	चितकबरा	Variegated
८४ किकाडिया	कृकाटिका	स्त्री	गले का ऊंचा भाग-गलमणि	Nape of neck
७१ किरण	किरण	पु	किरण	Ray
१४७ किराय	किरात	पु	भिल्ल	Kirata
१११ किरीड	किरीट	पु	मुकुट-मुकुट	Diadem
११३ किलंत	क्लान्त	वि	थका हुआ	Tired, distressed
७१ किलिंच		न	छोटी लकडी	Thin board
५४ किवाण	कृपाण	न	तलवार-तरवार	Sword
१४ किस	कृश	वि	दुबला पतला	Emaciated

८१ कुमरी	कुमारी	स्त्री	कुमारी कन्या	Girl, virgin
११ कुमार	कुमार	पु	कार्तिकेय	Kartikeya
५८ कुमुद	कुमुद	न	कुमुद चन्द्रविकासी कमल	White-lotus
१७१ कुकुम	कुङ्कुम	न	केसर-कङ्कु	Saffron
८८ कुपल	कुड्मल	न	कोंपल	Bud
१ १ कुमर*		पु	छोटी मछली	Small fish
१ १ कुंभार	कुम्भकार	पु	कुम्हार-कुंभार	Potter
४७८ कुम	कुम्भ	पु	कुंभ घड़ा	Water Pot
११० कुम्म	कूर्म	पु	कछुआ	Turtles
७ कुरंगी	कुरङ्गी	स्त्री	हरणी-मृगली	Doe
१ ५ कुरल	कुरल	पु	केश की लट	Locks
१ ५ कुरुलि*		पु	करचला-जलचरविशेष	Crab
१ ८ कुलजात	कुलजात	वि	कुलीन-खानदान	Of noble birth
१ १ कुलाल	कुलाल	पु	कुम्हार-कुंभार	Potter
१५५ कुलाय	कुलाय	न	घोंसला	Nest
१८४ कुलिस	कुलिश	न	वज्र	Thunder bolt
१ ५ कुलीर	कुलीर	पु	करचला जलचरविशेष	Crab
७१९ कुल्लड*	कुल्लक	न	कुल्हड़ी	Small vessel
७ कुवलय	कुवलय	न	चन्द्रविकासी कमल	Blue lotus
७१८ कुविंद	कुविन्द	पु	जुलाहा	Weaver
९१ कुसल	कुशल	वि	कुशल चतुर	Clever
७ कुसुमसर	कुसुमशर	पु	कामदेव	Cupid
११६ कुसुमरस	कुसुमरजस	पु	मकरंद	The honey of a flower
११५ कुसुम	कुसुम	न	फूल	Flower
११४ कुसुमाल*		पु	चोर	Thief
७ ७ कुसुभी	कुसुम्भी	स्त्री	कसुम का पेड़-कसुबे का वृक्ष	Safflower
७११ कुसूल	कुसूल	पु	अनाज भरने का बड़ा कोठार	Granary
८८ कुस	कुश	पु	कुशा-डाभ	Kusa-grass
१ ५ कुहर	कुहर	न	छिद्र	Hole, cleft
११९ कूड	कूट	न	शिखर	Top

७११ कोण	कोण	पु	लाठी-लकड़ी	Club
१५१ कोमलय	कोमलक	न	कोमल, नरम	Soft
४१२ कोमार	कौमार	पु	कुमारी सम्बन्धी	Born of virgin
५१ कोअंड	कोदण्ड	न	धनुष	Bow
१८४ कोरंट	कोरण्ट	पु	कोरंटक वृक्ष	Yellow amaranth
८८ कोरय	कोरक	न	कोंपल	Bud
४७५ कोलंब*		पु	पिठर-थाली	Pot, pan
१८९ कोलिअय	कौलिक	पु	मकड़ी-करोलिया	Spider
१०१ कोल	कोल	पु	वराह	Boar
१९७ कोल्हुअ*		पु	सियार	Jackal
८११ कोवण	कोपन	वि	क्रोधी	Angry
१४४ कोसासिअ	विकसित	वि	विकसित	Blown
५७६ कोसय	कोशक	न	दारू का प्याला	Drinking Vessel
१११ कोसिअ	कौशिक	पु	उल्लू, घूघू	Owl
११८ कोसी	कोशी	स्त्री	सेम इत्यादि की फली-सीम	Pod
१७१ कोहली	कुष्माण्डी	स्त्री	कोहड़ा की बेल या कोहली	Benincasa Cerifera
१७२ कोहलिआ	कुष्माण्डी	स्त्री	"	Benincasa Cerifera

ख

१४ ख	ख	न	आकाश	Sky
११४ खइअ	खादित	वि	खाया हुआ	Eaten
१५ खउरिअ	क्षुब्ध	वि	क्षुब्ध जल-मैला पानी	Turbid water
९१ खग	खग	पु	पक्षी	Bird
५४ खग्ग	खड्ग	न	तलवार-टरवार	Sword
५४१ खग्ग	खड्ग	पु	गेंडा	Rhinoceros
१४ खचिअ	खचित	वि	जड़ा हुआ	Joined, studded
३१८ खज्जूर	खर्जूर	न	खजूर	Date-fruit
६७४ खज्जूरी	खर्जूरी	स्त्री	खजूरी का पेड़	Date-palm

१५१ गामट्ठाण	ग्रामस्थान	न	छोटा गाँव	Village-site
३१ गाव	ग्रावन्	पु	पत्थर	Stone
११ गिट्ठि	गृष्टि	स्त्री	एकबार बियाई हुई गाय	Heifer
२११ गिद्ध	गृध्र	पु	गीध	Vulture
१५१ गिंठुअ*		न	स्तन ऊपर गाँठ देकर पहिना हुआ वस्त्र	Cloth tied in a knot over the breast
११६ गिंडुल्ल*		पु	चोला	Coat of mail
८१ गिरा	गिर्	स्त्री	वाणी	Speech
३१ गिरिस	गिरिश	पु	महादेव	Shiva
१११ गीवा	ग्रीवा	स्त्री	डोक	Neck
१४७ गुच्छ	गुच्छ	पु	गुच्छा	Bunches of flowers
१७४ गुज्झ	गुह्य	न	गुप्त	Secret
१७५ गुज्झय	गुह्यक	पु	यक्ष	Yaksha
७२ गुंजा	गुंजा	स्त्री	चिनोठी	Berry of Abrus Precatorius
१५७ गुट्ठ	गोष्ठ	न	गाय का बाड़ा	Cow pen
४६७ गुणणिआ	गुणनिका	स्त्री	अभ्यास करना—पढ़े हुए पाठ को फिर फिर गुनना	Repeat studying
१७७ गुण	गुण	पु	गुण—डोरा—धनुष्यकी डोरी	Bow-string
८२ गुण	गुण	पु	डोरा धागा	Thread
५५७ गुंठिअ	गुण्ठित	वि	धूलयुक्त	Covered with dust
४११ गुत्त	गोत्र	न	गोत्र	Family-name
८६ गुंद्र	गुन्द्र	पु	एक प्रकार का तृण	Saccharum Sara
५ गुप्फ	गुल्फ	पु	घुटी	Ancle
५८ गुम्मइअ*	मुग्ध	वि	मोह पाया हुआ—जिसका मन गुम हुआ	Confused
८७६ गुम्म	गुल्म	पुं	झाड़ी	Thicket
८४६ गुलिअ	गुलिक	पु	गोल आकारवाला गेंद	Ball

१२७	गुलुच्छ॰		पु	गुच्छा	Bunches of flowers
१५१	गुविल	गुपिल	वि	गहन-घना-सघन	Thicket
१११	गुहिर	गुहिर	वि	गंभीर	Deep
११	गुह	गुह	पुं	कार्तिकेय	Kartikeya
१७	गुहा	गुहा	स्त्री	गुफा	Cave
७१	गेय	गेय	न	गीत, संगीत	Music
१ १	गोउर	गोपुर	न	दरवाजा	Gate-tower
१५७	गोउल	गोकुल	न	गोकुल	Cow-pen
१९	गोमाउ	गोमायु	पु	सियार	Jackal
११	गोअर	गोचर	पु	विषय	Province
११	गोआवरी	गोदावरी	स्त्री	गोदावरी नदी	Godavari
१	गोरी	गौरी	स्त्री	पार्वती	Parvati
१९	गोणा	गो	स्त्री	गऊ-गाय	Cow
११	गोला॰		स्त्री	गोदावरी नदी	Godavari
८४	गोल्हाफल		न	बिजोरा-गोला	Bimba-fruit
१ ७	गोव	गोप	पु	गोपाल-ग्वाल गौ चरानेवाला	Cow-herd
१	गोवाल	गोपाल	पु	"	Cow-herd
१	गोसग्ग	गोसर्ग	पु	प्रातःकाल	Dawn
७१	गोस		पु	"	Dawn

घ

१९	घडा	घटा	स्त्री	घटा-समूह	Troop
११	घडिजंत	घटियन्त्र	न	रहट	Water wheel
१११	घडिअ	घटित	वि	बना हुआ गढ़ा हुआ	Made
१५५	घडिय	घटित	वि	जुड़ा हुआ	Joined
१ १	घडिआ	घटिका	स्त्री	घड़ी	Watch, clock
५५१	कूड	कूट (?)	न	टीला, स्तूप	Monument
७१९	घणणिवह	घननिवह	पुं	बादल	Mass of clouds
७१५	घणसमअ	घनसमय	पु	चौमासा—बरसात की मौसम	Rainy season
१७८	घणसार	घनसार	पु	कपूर	Camphor
११४	घत्थ	ग्रस्त	वि	ग्रास किया हुआ—खाया हुआ	Eaten

२	चणद्विआ*		स्त्री	घुंघची-चिरमिठी	Berry of Abrus Precatorius
११	चत्त	त्यक्त	वि	त्याग किया हुआ	Forsaken
१०७	चंदण	चन्दन	न	चन्दन सुखड	Sandal
६	चंदसाला	चन्द्रशाला	स्त्री	अगासी	Hall on the top of the house. Terrace
११	चंदिमा	चन्द्रिका	स्त्री	चांदनी	Moonlight
५८	चंदुज्जअ	चन्द्रोद्योत	न	कुमुद	White lotus
५	चंद	चन्द्र	पु	चन्द्रमा	Moon
	चमू	चमू	स्त्री	सेना	Army
११	चम्म	चर्मन्	न	चमडा	Skin
५१७	चयइ	त्यजति– शक्नोति	क्रि	कर सकता है, समर्थ है	He can, is able
६११	चरम	चरम	वि	अन्तिम	Last
९१	चर	चर	पु	दूत जासूस	Spy
११६	चलण	चरण	पु	पग पैर	Foot
७४५	चलिअ	चलित	वि	चलित	Moved
७८	चलिअ	चलित	न	थरथर–थरथराना	Shaking, trembling
७५१	चवल	चपल	वि	अस्थिर–चंचल	Agile
१ १	चसअ	चषक	न	दारूका प्याला	Cup of wine
८	चामीअर	चामीकर	न	सोना–सुवर्ण	Gold
११३	चायअ	चातक	पु	चातक पक्षी	Chataka
९३	चारअ	चारक	पु	कैद–केदखाना	Prison
४४	चारण	चारण	पु	चारण, भाट	Bard
९	चार	चार	न	प्रियाल वृक्ष–चिरौंजीका वृक्ष	Buchanania Latifolia
७	चारु	चारु	वि	सुंदर	Fine
५३	चाव	चाप	न	धनुष	Bow
४३	चिइ	चिति	स्त्री	बुद्धि	Intellect

१४५ चित्तइअ*	मण्डित	वि	भूषित	Adorned
२०१ चिंचिणी*	चिंचिणी	स्त्री	इमली–आमली	Tamarind
१३१ चिंचा*	चिंचा	स्त्री	"	"
१४५ चिंचिल्लिअ*	मण्डित	वि	भूषित	Adorned
४७५ चित्तय	चित्रक	पु	चित्ता	Panther
४५८ चित्त	चित्त	न	मन चित्त	Mind
१६० चित्तल*	चित्रल	न	चित्रविचित्र	Variegated
५२१ चिट्ठिअ*		वि	विनाश पाया हुआ	Destroyed
१६ चिन्ताइट्ठ	चिन्तादृष्ट	वि	विचारपूर्वक देखा हुआ	Carefully looked at
२०६ चिंध	चिह्न	न	दाग, निशान, चिह्न	Mark
११५ चिंध	चिह्न	न	ध्वज–धजा	Banner
४०० चिब्भिड	चिर्भट	न	चिभडा	Cucumber Cucumis
२८१ चिरिहिल्लि*		न	दही	Curd
१८६ चिडा*	चिडा	स्त्री	चीड़–चमली	Hen-sparrow Onomat
२२५ चिहुर	चिकुर	पु	केश बाल	Locks
२८० चीरी	चीरी	स्त्री	एक प्रकार का कीड़ा	Cricket
५५२ चुक्क	च्युतक–भ्रष्ट	वि	भूला हुआ, भ्रष्ट	Lost, Missed, Forgotten
४११ चुज्ज*		न	आश्चर्य	Portent, wonder
२०२ चुडली		स्त्री	उल्का	Firebrand
१४ चुडुप्प*		न	चमड़ी	Skin
५१ चुण्णइअ*	चूर्णित	वि	चूर्ण किया हुआ	Powdered
५१६ चुण्णिअ	चूर्णित	वि	चूरा हुआ	Crushed, broken
५१ चुण्णाइअ	चूर्णाहत	वि	चूर्ण किया हुआ	Powdered
१४२ चुम्मक*		पु	कलगी–झंवर–सेहरा–चोटी	Tufts, garland
५५२ चुलचुलिअ*	चलचलित–स्पन्दित	वि	हिलता हुआ	Quivering

१५४ छाम*	क्षाम	वि	दुबला, पतला	Weak Emaciated
२४१ छाया	छाया	स्त्री	कान्ति शोभा	Beauty
६५ छाया	छाया	स्त्री	वृक्ष की छाया	Shade
८८ छारय*		न	कोंपल	Bud
७६५ छाही	छाया	स्त्री	वृक्ष की छाया	Shade
१५ छिक्क	छुप्त	वि	स्पर्श किया हुआ	Touched
६६७ छिच्छोक्कण*		पु	निंदा सूचन के लिए मुंह को टेढ़ा करना	Pursing the mouth in contempt
९१ छिनई*		स्त्री	व्यभिचारिणी स्त्री	Unchaste woman
१०६ छिछोली*		स्त्री	पानी का छोटा प्रवाह	Brook
९४ छिंडअ*		पु	चोटी	Top-lock
६६१ छिण्णाय	छिन्नटङ्क	न	टांकने से कटा हुआ	Cut with a chisel
१५ छित्त	छुप्त	वि	स्पर्श किया हुआ	Touched
१०१ छिप्प*		न	पुच्छ	Tail
११ छिप्पिर	सितरित	वि	झरता हुआ	Dripping
७७ छिंपअ		पु	छींट-कपड़े को छापनेवाला	Dyer
९८ छीर	क्षीर	न	दूध	Milk
४०१ छुद्द	क्षुद्र	वि	छोटा	Small
६६५ छुरिआ	क्षुरिका	स्त्री	छुरी	Knife
५३३ छुहाइअ	क्षुधान्वित	वि	भूखा	Hungry
९९ छेअ	छेक	वि	चतुर	Clever
४८३ छेह*	छेद	पु	छेड़ा-अंत	Limit
६६६ छोह*	क्षोभ	पु	क्षेप	Scattering

ज

४१ जइ	यति	पु	यती साधु	Ascetic
७११ जउणा	यमुना	स्त्री	यमुना नदी	Yamuna
४९५ जव	जव	पु	वेग	Speed
१०५ जक्ख	यक्ष	पु	यक्ष	Yaksha
९८ जक्खाहिवइ	यक्षाधिपति	पु	यक्ष का स्वामी-कुबेर	Kubera

६ जलण	ज्वलन	पु	आग, अग्नि	Fire
११ जलतुसार	जलतुषार	पु	पानी की बूंदें	Spray
१ जलहत्थि	जलहस्तिन्	पु	जलहाथी	Water elephant
१४४ जलहरण	जलहरण	न	पानी का क्यारा	Basin round a Tree
११ जलहर	जलधर	पु	मेघ	Cloud
८ जलहि	जलधि	पु	समुद्र	Ocean
६१७ जवस	यवस	न	घास तृण-चारा	Fodder
१६६ जवा	जवा	स्त्री	जवा का फूल-गुडहल का फूल	China rose
८८१ जव	यव	पु	जौ-जव	Yava
१८८ जाइ	जाति	स्त्री	मालती	Jasminum grandiflorum
४ जाउहाण	यातुधान	पु	राक्षस	Rakshasa
५१ जाणु	जानु	पु	घुटना	Knee
७८ जामिणी	यामिनी	स्त्री	रात्री	Night
१५ जाम	याम	पु	प्रहर	Watch
६२ जाया	जाया	स्त्री	स्त्री	Wife
१२८ जाला	ज्वाला	स्त्री	ज्वाला	Flame
८ १ जाली*		स्त्री	सघन झाडी	Thicket
१६६ जासुमण*		पु	गुडहल का फूल जवा का फूल	China rose
४१७ जिंघिअ	घ्रात	वि	सूंघा हुआ	Smelt
१ जिण	जिन	पु	जिन-राग द्वेष को जितने वाला-शाक्यसिंह बुद्ध	Shakyamuni
११ जिण	जिन	पु	रागद्वेष को जितनेवाला-महावीर	Jina-Jnatputra-Mahavir
११ जीमूअ	जीमूत	पु	मेघ	Cloud
१ जीवइ	जीवति	क्रि	वह जीता है	He lives
२७ जीवा	जीवा	स्त्री	धनुष की डोरी	Bow-string
५१ जीहा	जिह्वा	स्त्री	जीभ	Tongue
४१७ जुग्गा	योग्या	स्त्री	अभ्यास-बार बार करना	Repeated Study application

८१६ जुण्हा	ज्योत्स्ना	स्त्री	चाँदनी	Moon-light
१ ६ जुअल	युगल	न	जोड़ी–स्त्रीपुरुष की जोड़ी नर मादा की जोड़ी	Couple
१ ४ जुवअ	युवन्	पु	जवान	Young man
१ ४ जुव (ण)	,,	पु	,,	Young man
१ जुआण (वाण)	,,	पु	,,	Young man
११ जुवइ	युवति	स्त्री	जवान स्त्री	Young woman
७०९ जूअ	द्यूत	न	जूआ	Gambling
५७५ जूरिअ	ज्वरित–खिन्न	वि	खेदयुक्त	Distressed
१ १ जे		अ	पादपूरक शब्द	Particle without meaning
		झ		
७४३ झञ्झा	झञ्झा	स्त्री	प्रचण्ड पवन का तूफान	Storm, breaking of monsoon
१७ झत्ति	झटिति	अ	जल्दी–झट	Suddenly
१ झम्पी		स्त्री	आँख की पलक	Eye-lashes
१ झला		स्त्री	मृगतृष्णा–मृगजल–जो दूर से जल समझना	Mirage
१६१ झय		न	टाँकी से छेदा हुआ	Cut with chisel
१ झस	झष	पु	मछली	Fish
२१ झाड		न	लतागृह	Bower of creepers
१ झिल्लिआ	झिल्लिका	स्त्री	एक प्रकार का कीड़ा	Insect cricket
५१५ झीण	क्षीण	वि	क्षीण	Emaciated
		ट		
१६१ टङ्कछिन्न	टङ्कच्छिन्न	न	टाँकी से छेदा हुआ	Cut with chisel
८५१ टंगा	टङ्गा	स्त्री	टाँग–पैर	Leg
१ टिंबरुअ	टिम्बरुक	न	टिमरु	Diospyros Embryopteris
१७५ टिरिटिल्लिअ	मण्डित	वि	भूषित	Adorned

१	तणुइअ	तनूकृत	वि	पतला किया हुआ	Thinned
१५	तणुअ	तनुक	वि	पतला	Emaciated
६	तणुरुह	तनुरुह	न	रोम-बाल रोम-रोम-रोंगा	Hair
१ ४	तणुसरिआ(वा तणुसरित्		स्त्री	छोटी नदी	Brook
१	तणू	तनू	स्त्री	तन शरीर	Body
६	तंडव	ताण्डव	न	तांडव नृत्य	Dance of Shiva
६	तण्णअ	तर्णक	पु	बछड़ा	Calf
५२१	तण्णाय		वि	भीगा-भीना हुआ	Wet
१११	तण्हा	तृष्णा	स्त्री	तृष्णा	Thirst
१	तत्त	तत्त्व	न	तत्त्व तत्व	Truth
६१	तद्दिअसिअ	तद्दिवसित क्रि	वि	अनुदिवस निरंतर	Daily
७	तंतुवाअ	तन्तुवाय	पु	जुलाहा-जुलाहा	Weaver
१	तंतु	तन्तु	पु	तंतु-धागा-धागा	Thread
१५१	तप्प	तल्प	न	बिछौना-बिस्तर	Bed
५	तप्पर	तत्पर	वि	तत्पर	Intent on
६	तमिस्स	तमिस्र	न	अंधेरा	Darkness
१६६	तंब	ताम्र	वि	लाल	Red
२ १	तंबसिह	ताम्रशिख	पु	मुर्गा	Cock
६१	तंबा	ताम्रा	स्त्री	गाय-लाल गाय	Cow (Red coloured)
१	तया	त्वचा	स्त्री	चमड़ी	Skin
८	तरंगमालि	तरङ्गमालिन्	पु	समुद्र	Ocean
१६	तरंगिणी	तरङ्गिणी	स्त्री	नदी	River
५६	तरंग	तरङ्ग	पु	समुद्र के तरंग	Wave
	तरणि	तरणि	पु	सूर्य	Sun
५१	तरंत	तरत्	वि	तरता हुआ	Swimming
२५१	तरल	तरल	वि	चपल	Agile moveable
१	तरवट		पु	एक प्रकारका वृक्ष	Cassia Pera or Alata
१७	तरा	त्वरा	स्त्री	त्वरा-जल्दी-उतावल	Haste, hurry
१ ४	तरुण	तरुण	पु	जवान-युवान	Young man

५११ तुरगवेह-पिंजरण	तुरगदेह-पिञ्जरण	न	घोड़े को सजाना	Painting a horse
४ २ तुरिअ	त्वरित	वि	त्वरायुक्त	quick
१ ५ तुलसी	तुलसी	स्त्री	तुलसी	Ocymum Sanctum
५११ तुलिअ	तुलित	वि	तुला हुआ	Weighed
४१८ तुसार	तुषार	न	हिम	Frost, Snow
४१८ तुहिण	तुहिन	न		Frost, Snow
८७९ तूल	तूल	न	रूई	Cotton
१६ तेअविअ	तेजासित	वि	जगमगाता हुआ	Shining, lighted
८७५ तोण	तूण	पु	भाथा	Quiver
८७५ तोणीर	तूणीर	पु		Quiver
७४ तोत्तडि*		स्त्री	करंबा	Flour mixed with curd
११४ तोत्त	तोत्र	न	आर लगाई हुई बांसकी लाठी-परैना	Goad
१७५ तोमरिगुंडि*	तोमरिगुण्डि	स्त्री	एक प्रकार की लता-बेल	Pollen of Creepers ?
१५ तोय	तोय	न	पानी	Water
५१५ तोरविअ*		वि	उत्तेजित	Urged on
४११ तोस	तोष	पु	तोष-सन्तोष	Contentment
		थ		
८७४ थग्घ*	स्ताघ	वि	गहेरा-ऊंडा	Deep
५११ थड्ढ	स्तब्ध	वि	गर्वित-अकड़	Proud, arrogant
११७ थण	स्तन	पु	स्तन	Breast
७१४ थणिअ	स्तनित	न	मेघगर्जन	Thunder
८८२ थव*	स्तम्ब	पुं	होडीका थव-छड़ (?) गुच्छा	Sail of a Ship cluster
२१४ थव	स्तम्भ	पुं	बिंदु	Drop
८ थरहरिअ*		वि	कांपता हुआ	Trembling
५११ थलि	स्थली	स्त्री	थली-स्थल	Place, Ground
२४७ थवय	स्तबक	पुं	गुच्छा	Bunches of flowers

११ थाणु	स्थाणु	पु	शिव	Shiva
१ ४ थाणु	स्थाणु	पु	खीला–कीला	Post
४४४ थाम	स्थामन्	न	बल	Power
४४ थाह	स्ताघ	पु	गहराई	Deep
११९ थिमअ*		वि	गर्वित	Proud
१५ थिमिअ	स्तिमित	वि	धीमा	Slow inert
५११ थीण	स्त्यान	वि	जमा हुआ–जमा हुआ घी	Heap Quantity
५११ थुरुक्किअम		न	रोषयुक्त वचन	Scolding
१५ थूणा	स्थूणा	स्त्री	खंभा–थंभा	Pillar
१२६ थूल	स्थूल	वि	मोटा–ताजा	Fat
५५६ थूह	स्तूप	न	टीला	Buddhistic monument
१२४ थेण	स्तेन	पु	चोर	Thief
५११ थेरी	स्थविरा	स्त्री	बुढ़िया–माता	Old woman
१ थेर	स्थविर	पु	ब्रह्म	Brahma
४४५ थेव	स्तोक	न	थोड़ा–लेश	Particle
११४ थेव	स्तोक	वि	छींटा–बिंदु–थोड़ा–कम	Drop
१२६ थोर	स्थूल	वि	मोटा–ताजा	Fat
			द	
१ ५ दइअ	दयित	पु	प्रीतिपात्र–स्वामी–पति	Lover husband
१ दइच्चगुरु	दैत्यगुरु	पु	शुक्र–राक्षसों का महात्म्य–गुरु	Ushanas
१२ दइच्च	दैत्य	पु	दैत्य–राक्षस	Asura
५४१ दरिसिअ	दर्शित	वि	दिखाया हुआ– दरसाया हुआ	Shown
५ ५ दक्खविअ	दर्शित	वि		Shown
२ दक्खायणी	दाक्षायणी	स्त्री	दाक्षायणी–पार्वती	Parvati
६ दक्खिण्ण	दाक्षिण्य	न	भावमहत्त्व–सौजन्य	Kindness
११ दक्ख	दक्ष	वि	दक्ष–चतुर–कुशल	Clever handy
१५५ दढ	दृढ	वि	दृढ मजबूत, बहुत	Firm, Solid, Hard, Much

५११ दड्ढ	दग्ध	वि	जला हुआ	Burnt
१२ दणुअ	दनुज	पुं	दानव–राक्षस	Asura
१११ दद्दुर	दर्दुर	पु	दादुर–मेंढक	Frog
१ १ दन्तच्छअ	दन्तच्छद	पु	होठ–ओठ	Lip
११ दंत	दन्त	पु	दांत	Tooth
१ दंति	दन्तिन्	पु	दन्तावल–हाथी	Elephant
११५ दप्पण	दर्पण	पु	दर्पण–आरिसा–मुह देखनेका काच	Mirror
१ दप्प	दर्प	पु	दर्प–अभिमान	Pride
८८ दब्भ	दर्भ	पु	दाभ–कुशा	Kusha-grass
१५ दय	दक	न	पानी	Water
१७२ दर	दर	न	आधा–कम	Half
१२१ दरिअ	दृप्त	वि	मिजाजी	Proud
४५ दरिद्द	दरिद्र	वि	दरिद्र–निर्धन	Poor
१७८ दरी	दरी	स्त्री	गुफा	Cave, hole
११५ दल	दल	न	पत्ता	Leaf
५११ दलिअ	दलित	वि	दला हुआ–फाड़ा हुआ	Split
४ ८ दलिअ	दलिक	न	लकड़ा	Wood
१५४ दव	दव	पु	दावानल–जंगलकी आग	Conflagration
७८ दविण	द्रविण	न	द्रव्य–धन	Wealth
७८ दव्व	द्रव्य	न	द्रव्य–धन	Wealth
७१७ दव्वी	दर्वी	स्त्री	कड़छी	Spoon
११ दसण	दशन	पु	दांत	Tooth
१ दसबल	दशबल	पु	गौतम बुद्ध, शाक्यसिंह	Shakyamuni
१११ दसा	दशा	स्त्री	दशा–स्थिति	State
११ दसारनाह	दशार्हनाथ	पु	दशार्हों का नाथ–कृष्ण	Krishna
१ १ दहिअ	दधिक	न	दही	Sour milk
१ १ दाण	दान	न	हाथी का मद	Ichor from an elephant's temples
१२ दाणव	दानव	पु	दानव–राक्षस–असुर	Asura
११४ दाणिं	इदानीम्	अ	अब–अभी	Now

१ दिणमुह	दिनमुख	न	दिन का मुख–दिन का प्रारंभ सवेरा	Dawn
४१७ दिण	दिन	न	दिन–दिवस	Day
५१७ दिण्ण	दत्त	वि	दिया हुआ	Given
७५ दित्त	दीप्त	वि	दीपा हुआ	Shining
७५ दित्ति	दीप्ति	स्त्री	दीपना–चमकना–प्रकाश	Light
१६ दिद्धिदिद्धिआ*		स्त्री	बालिका–छोटी लड़की	Little Girl
१ दिव्व	दैव	न	दैव–विधि भाग्य	Fate
६९ दिसा	दिशा	स्त्री	दिशा	Direction
५११ दीण	दीन	वि	दीन–हीन	Distressed
६११ दीव	दीप	पु	दीपक–दीया	Lamp
६ ६ दीवि	द्वीपिन्	पु	चित्ता–चीतरा	Panther
४ ४ दीह	दीर्घ	वि	लंबा	Long
४९१ दीहत्तण	दीर्घत्व	न	दीर्घता–लंबाई	Length
४८४ दीहर	दीर्घतर	वि	लंबा	Long
३११ दीहिआ	दीर्घिका	स्त्री	दीर्घिका–बाव–बावी	Oblong well or lake
१८ दुइअ	द्वितीय	वि	दूजा–दूसरा–अनुचर–साथी	Companion
८० दुक्किय	दुष्कृत	न	दुष्कृत–पाप	Sin
६६८ दुक्ख	दुःख	न	दुःख–पीड़ा	Pain misfortune
६२१ दुगुंछा	जुगुप्सा	स्त्री	घृणा–नफरत	Blame
४९ दुग्गअ	दुर्गत	पु	दुःखी–गरीब	Poor
१ दुग्गा	दुर्गा	स्त्री	दुर्गा देवी–पार्वती	Durga
६७० दुगुल्ल	दुकूल	न	कपड़ा–सुंदर वस्त्र	Fine cloth
११ दुव्विअड्ढ	दुर्विदग्ध	वि	दुःशिक्षित–स्वच्छंदी	Silly ill-bred
४७१ दुज्जाय	दुर्जात	न	दुःख	Misfortune
७७४ दुट्ठ	दुष्ट	वि	दुष्ट	Bad man
१० दुत्ति	द्रुत	अ	द्रुत–शीघ्र	Suddenly
४ दुमोली*	द्रुमावलि	स्त्री	वृक्ष की श्रेणी	Row of trees
१६ दुद्धगंधियमुही	दुग्धगन्धिक-मुखी	स्त्री	जिसके मुख में दूध की गंध आती हो–छोटी बालिका	Little Girl

११५	णवरंग	नवरङ्ग	न	कसुंभी पत्र लाल रंग हुआ कपड़ा	Red cloth
१	णवरि		अ	सहसा	Suddenly
४२४	णमसिअ	नमस्यित	न	मनौती	Vow
१४	णह	नभस्	न	नभ–आकाश	Sky
११४	णह	नख	पु	नख	Nail
१६१	णाक	नाक	पु	स्वर्ग	Heaven
४११	णाम	नामन्	न	नाम	Name
१२	णारी	नारी	स्त्री	नारी स्त्री	Woman
३११	णाड्ड*		पु	गड्ढा	Pit
५८१	णालिआ	नालिका	स्त्री	समय नापने की घड़ी	Period of 24 minutes
४५६	णास	नाश	पु	नाश–विनाश	Destruction
३१४	णासा	नासा	स्त्री	नासिका–नाक	Nose
५१४	णिउंचिअ	निकुञ्चित	वि	संकुचित	Mean
१	णिउण	निपुण	वि	चतुर–कुशल	Clever
१८	णिउरंब	निकुरुम्ब	पु	समूह	Mass
१२५	णिक्किव	निष्कृप	वि	निर्दय	Hartless
१	णिहय	निहत	वि	मारा हुआ	Beaten
५६१	णिक्खित्त	निक्षिप्त	वि	स्थापित	Established
५०२	णिग्गयामोअ	निर्गतामोद	वि	जिस की सुगंध दूर फैली हो	Widely fragmented
५०६	णिग्गिण्ण	निर्गीर्ण	वि	बाहर निकला हुआ	Come out
४०५	णिवेसिअ	निवेशित	वि	स्थापित	Establshed
१६१	णिच्च	नित्य	वि	नित्य स्थायी	Permanent
१२५	णिट्ठुर		वि	निर्दय	Heartless
३५०	णिज्झर	निर्झर	न	पानी का झरना	Streamlet
११५	णिट्ठुहअ*	क्षरित	वि	टपका हुआ	Dripped
१२८	णिठ्ठुर	निष्ठुर	वि	निर्दय	Heartless
३११	णिडाल	ललाट	न	ललाट	Forehead
११५	णिड्ड	नीड	न	घोंसला	Nest

प

६ १ पइ	पति	पुं	पति	Husband master
५४४ पइण्ण	प्रकीर्ण	पु	मिश्रित	Scattered, miscellaneous
४ पईव	प्रदीप	पु	दीवा बत्ती	Lamp
५४ पउट्ठ	प्रकोष्ठ	पु	कलाई, पोंचा	Wrist hand
४८८ पउण	प्रगुण	वि	प्रगुण–सरल	Straight simple
५६७ पउण	प्रगुण	वि	जिसका घाव या रोग मिट मिट गया है वह, जिसका घाव सूख गया है वह	Healthy hale, vigorous
१११ पउत्ति	प्रवृत्ति	स्त्री	समाचार	News
५११ पउलिअ	पक्व	वि	पका हुआ	Burnt
५ १ पओली	प्रतोली	स्त्री	मुख्य दरवाजा	Gate tower road street
७६६ पओस	प्रदोष	न	सन्ध्या के आसपास का समय	The first part of night, evening
३२७ पओहर	पयोधर	पु	स्तन	Breast
५१ पंसुली	पांसुली	स्त्री	व्यभिचारिणी	Unchaste woman
११० पंसु	पांसु	स्त्री	धूल	Dust
११२ पक्क	पक्व	वि	पका हुआ	Ripe
५२ पक्क	पक्व	वि	समर्थ खबरदार, पक्का	Strong, Able
५१ पक्कल	पक्कल	वि	समर्थ–प्रौढ	Strong, able
६ ५ पक्खोडिअ॰	शाटित	वि	झाड़ा हुआ तोड़ा हुआ	Disentangled
१ पंकय	पङ्कज	न	कमल	Lotus
१ ० पंक	पङ्क	पु	कीचड़ कचरा	Mud
६१ पंगुल	पङ्गुल	वि	पंगु–लंगड़ा	Lame
७६१ पंगु	पङ्गु	वि	"	Lame
४१० पच्चग्ग	प्रत्यग्र	वि	नया–ताजा	New Fresh
४ पच्चत्थि	प्रत्यर्थिन्	पु	शत्रु	Opponent
५१ पच्चल	प्रत्यल	वि	समर्थ–प्रौढ	Strong, able

१ १ पणइ	प्रणयिन्	वि	स्नेही	Lover husband
११ पणामिअ	प्रणामित	वि	समर्पण किया	Given
११७ पणिहि	प्रणिधि	पु	चर, जासूस	Spy
१४ पणुल्लिअ*	प्रक्षिप्त	वि	प्रेरित किया हुआ	Thrown
०१ पंडअ	षण्डक	पु	नपुंसक	Eunuch
११४ पंडु	पाण्डु	वि	धौला	White
१ पत्तट्ठ	प्राप्तार्थ	वि	चतुर, पंडित	Clever
११९ पत्त	पत्र	न	पत्ता किताबका पन्ना कागज का टुकड़ा	Leaf Page
६१ पत्तरह	पत्ररथ	पु	पक्षी	Bird
१४८ पत्तल	पत्रल	वि	बहुत पत्तोंवाला, तीक्ष्ण-पैना	Sharp, pointed
६६९ पत्त	पात्र	न	पात्र बर्तन	Vessel
१ पत्ती	पत्नी	स्त्री	पत्नी, स्त्री	Wife
०१७ पत्तेअ	प्रत्येकम्	क्रि वि	एक एक	Each
४ ९ पत्थयण	पथ्यदन	न	मार्ग में प्रयाण करते हुए खाने का खुराक	Food for a journey
१४ पत्तमिह	पत्रपद्द	वि	तीक्ष्ण	Pointed sharp
६४९ पत्थरिअ	प्रस्तृत	वि	बिछाया हुआ	Strewn
११३ पत्थाव	प्रस्ताव	पु	प्रस्ताव-प्रसंग	Occasion
४ २ पत्थारी	प्रस्तार	स्त्री	बिछौना-पथारी	Couch of straw
१४९ पत्थिव	पार्थिव	पु	राजा	King
३ ९ पद्द	पद्र	न	गाँव का जनस्थान या पीठ का मार्ग	Village-Site
१ ६ पंति	पङ्क्ति	स्त्री	पंक्ति-श्रेणी	Line row
८३ पंथ	पन्थ	पु	मार्ग-रास्ता	Path
१ पन्नगरिउ	पन्नगरिपु	पु	गरुड	Garuda
११ पन्नग	पन्नग	पु	सर्प	Snake
५ २ पमद्दिअ	मर्दित	वि	मसला हुआ	Crushed
८ ९ पप्फोडिअ	प्रस्फोटित	वि	प्रस्फोटित	Disentangled
९३५ पमह	प्रमथ	पु	महादेव का सेवक	Shiva's attendant
४१८ पमुह	प्रमुख	वि	प्रमुख	Beginning

१४ पम्हल	पक्ष्मल	न	रोम युक्त-रोमवाला	Hairy
४ १ पम्ह	पक्ष्मन्	न	आंख के बाल, पांपण	Eyelashes
५ पम्हुट्ठ	प्रमृष्ट	वि	विस्मृत	Forgotten
४ पयंग	पतङ्ग	पु	सूर्य	Sun
७२५ पयंग	पतङ्ग	पु	पतंगिया फतंगा-दीपकमें पड़नेवाला कीड़ा	Moth
१५ पय	पयस्	न	पानी	Water
१ पय	पयस्	न	दूध	Milk
१ पयइ	प्रकृति	स्त्री	स्वभाव	Temper Nature
५ पयट्ट	प्रवृत्त	वि	प्रवृत्त	Rolling on, going on?
१११ पयड	प्रकट	वि	प्रकट, स्पष्ट	Famous
४४१ पयत्त	प्रयत्न	पु	प्रयत्न-आदर	Respect, esteem
४१ पयत्थ	पदार्थ	पु	वस्तु, तत्त्व	Substance
१ पयर	प्रकर	पु	समूह	Heap quantity
५११ पयलाइ	प्रचलायते	क्रि	नींद लेता है	He sleeps
१ पयवी	पदवी	स्त्री	पदवी	Path
५११ पयय*	प्रतत	वि	फैला हुआ	Stretched
११२ पयाम	प्रकाम	न	क्रमशः	Successively
५१ पयारिअ	प्रतारित	वि	ठगा हुआ	Cheated
१ पयावइ	प्रजापति	पु	ब्रह्मा	Brahma
५ पयास	प्रकाश	पु	प्रकाश	Light
१११ परव्वस	परवश	वि	पराधीन	Subjected dependent
७१० परतीर	परतीर	न	सामने वाला किनारा	The other bank
५२५ परद्ध	अपराद्ध	वि	अपराधी	Tormented
१ परमत्थ	परमार्थ	पु	सत्य	Truth
११ परमपय	परमपद	न	मोक्ष	Final liberation
१ परमिट्ठि	परमेष्ठिन्	पु	ब्रह्मा	Brahma
१५ परंपरा	परम्परा	स्त्री	परम्परा	Order succession

२११ परवस	परवश	वि	पराधीन	Dependent
११ परहुआ	परभृता	स्त्री	कोयल	Female koil
११ पराअ	पराग	पु	पराग	Dust, Pollen of fllower
१५ परामुसिअ	परामृष्ट	वि	छुआ हुआ-परामर्श किया हुआ	Touched
५५१ पराहूअ	पराभूत	वि	पराभव पाया हुआ	Defeated
५८१ परिक्खित्त	परिक्षिप्त	वि	परिक्षिप्त	Put on, dressed
२११ परिणअ	परिणत	वि	पका हुआ	Ripe
१०५ परिणीआ	परिणीता	स्त्री	विवाहित स्त्री	Wife
४११ परिणाह	परिणाह	पु	विस्तार	Crcumference, extent
५५४ परिदेविअ	परिदेवित	वि	विलपित	Lamenting
५५३ परिप्लवन्त	परिप्लवमान	वि	तैरता हुआ, गोता लगाता हुआ	Swimming about
१०१ परिवासअ	परिवासक	पु	खेत में आकर रक्षा के लिए सोनेवाला मनुष्य	Night-watchman
१४८ परिमण्डल	परिमण्डल	न	गोलाकार	Round
१०९ परिमल	परिमल	पु	परिमल सुगंध	Perfume
११६ परिवत्तिअ	परिवर्तित	वि	बदला हुआ	Turned round
५०४ परिवारिअ	परिवारित	वि	घेरा हुआ	Clothed, enveloped
४११ परिरंभण	परिरम्भण	न	आलिंगन	Embracing
८१ परिलीण	परिलीन	वि	विलीन	Completely merged in
१५ परिवाडी	परिपाटी	स्त्री	रीति-क्रम	Succession, order
७१४ परिवार	परीवार	न	तलवार का मियान	Scabbard
७८ परिसर	परिसर	पु	नज़दीक भाग	Border circumference
७११ परिसा	परिषद्	स्त्री	सभा	Assembly
५०२ परिहट्टिअ	परिघट्टित	वि	चूरा किया हुआ	Crushed
११० परिहाण	परिधान	न	पहनना-पहनने का कपड़ा	Dress
८११ परिहत्थ	परिहस्त	न	चतुर निपुण	Clever handy

१ ८ पसण्णा	प्रसन्ना	स्त्री	मद्य दारू	Spirituous liquor
११५ पसव	प्रसव	न	फूल	Flower
१४६ पसाहिअ	प्रसाधित	वि	शृंगार किया हुआ	Adorned
११५ पसूण	प्रसून	न	फूल	Flower
९९ पहंजण	प्रभंजन	पु	पवन	Wind, storm
८१ पह	पथ	पु	मार्ग	Path
१८ पहयर*		पु	समूह	Heap, quantity
९ ३ पहरण	प्रहरण	न	शस्त्र	Weapon
११८ पहर	प्रहर	पु	पहोर	Watch Period of three hours
४११ पहरिस	प्रहर्ष	पु	आनंद	Joy
४५ पहा	प्रभा	स्त्री	प्रभा प्रकाश	Light
६६५ पहार	प्रहार	पु	मारना	Beat
५३६ पहुत्त	प्रभूत	वि	बहुत	Much
६१३ पहेणय*		न	खानकी वस्तु की भेट	Present of food
५१२ पहोलिर	प्रघूर्णित	वि	हिल डुल करने वाला	Swinging
९१ पाउग्गिअ	प्रायोगिक	पु	जूआ खेलाने वाला	Gambling house keeper
६१० पाउअ	प्रावृत	वि	ढका हुआ	Covered
४८३ पाउसागम	प्रावृड् आगम	पु	चोमासे का आरंभ	Storm, breaking of monsoon
११४ पाडच्चर	पाटच्चर	पु	चोर	Thief
६६६ पाडल	पाटल	वि	लाल	Red
१० पाडिक्क	प्रत्येकम् क्रि वि		एक एक	Each
५६५ पाडिअ	पातित	वि	पाडा हुआ–गिराया हुआ	Thrown down
६११ पाडुच्ची*		स्त्री	घोडेको सजाना	Painting or adorning a horse
१ २ पाणसम	प्राणसम	पु	प्रियतम–प्राण समान	Lover husband
९ ९ पाण	प्राण	पु	चंडाल	Chandalas
६६८ पाणि	पाणि	पु	हाथ	Hand
६६६ पामर	पामर	पु	खेती करने वाला	Husbandman

१०	पमाडअ	प्रपुन्नाट	पु	पमाड का पेड़—एक प्रकार का वृक्ष	Cassia Tora of Alata
११	पमुक्क	प्रमुक्त	वि	छूटा हुआ	Abandoned
२ १	पायय	प्राकृत	वि	नीच—अधम	Bad
८	पायव	पादप	पु	वृक्ष—झाड़	Tree
७९४	पायस	पायस	पु	दूधपाक	Milk and rice
७३	पाय	पाद	पु	किरण	Rays
२११	पाय	पाद	पु	पद—पग—पांव	Feet
७७१	पायार	प्राकार	पु	कोट	Rampart
७७७	पायाल	पाताल	न	पाताल	Nether world
७२	पार	पार	न	किनारा	The other bank
१	पारावय	पारावत	पु	परेवा—कबूतर	Pigeon
	पारावार	पारावार	पु	समुद्र	Ocean
५१७	पारेइ	पारयति	क्रि	पार करता है—समर्थ होता है	He can, is able
१ १	पालंब	प्रलम्ब	न	गलेका एक प्रकारका आभूषण	Pendent ornament
१७५	पालिया	पालिका	स्त्री	तलवार की मूठ	Sword-hilt edge of sword
१	पावग	पावक	पु	अग्नि	Fire
८५	पाव	पाप	न	पाप	Sin
७८	पास	पार्श्व	पु	पास—समीप—बाजू	Border
५८१	पासाय	प्रासाद	पु	महल	Palace
१	पाहिज्ज	पाथेय	न	भाता	Provisions for a journey
११	पाहुड	प्राभृत	न	भेंट	Present
८६१	पिया	पितृ+पिता	पु	पिता—बाप	F ther
२	पियामह	पितामह	पु	ब्रह्मा	Brahma
१	पिउच्छा	पितृष्वसा	स्त्री	पिताकी बहिन—बुआ—फूफी	Fathers sister
७९१	पिउवण	पितृवन	न	श्मशान	Burial ground Cemetery
११९	पिक्क	पक्व	वि	पका हुआ	Ripe
७८१	पिंखा	प्रेङ्खा	स्त्री	हिंडोला	Swing

१६५ पिंग	पिङ्ग	वि	पीला	Brown
१६५ पिंगल	पिङ्गल	वि	पीला	Brown
१५४ पिच्छ	पिच्छ	न	मोर पीछ-पंख का भाग पाय पूछ	Feather
१८० पिच्छ	प्रेक्षस्व	क्रि	देखो	Look !
५० पिच्छाभूमि	प्रेक्षाभूमि	स्त्री	रंगमंच स्टेज	Stage, theatre
१११ पिट्ठसुरिआ*		स्त्री	मद्य-शराब	Liquor mixed with flour
२०५ पिठर	पिठर	पु	एक प्रकारका बर्तन	Pot, Pan
२८५ पिणद्ध	पिनद्ध	वि	पहिरा हुआ-सजा हुआ	Put on, dressed
९९ पिणाइ	पिनाकिन्	पु	महादेव	Shiva
१११ पिंडइअ	पिण्डायित	वि	पिंडाकार किया हुआ समूह में किया हुआ	Heaped up
१५ पिप्पअ*		पु	पिशाच	Pishacha
५ पिप्पल	पिप्पल	न	पीपलका पेड	Pipal tree
२६५ पिम्म	प्रेमन्	न	स्नेह, प्रेम	Affection
८ पियंगु	प्रियङ्गु	स्त्री	प्रियंगु का वृक्ष कटूरकी का पेड कांग	Panicum Italicum
१६७ पियंगु	प्रियङ्गु	स्त्री	मालकांगनी का पेड	Medicinal plant
१६७ पियआ	प्रियका	स्त्री	,,	Medicinal plant
६१ पियमाहवी	प्रियमाधवी	स्त्री	कोयल	Female koil
१०२ पियअम	प्रियतम	पु	अधिक प्यारा पुरुष	Lover husband
४ पियाल	प्रियाल	न	प्रियाल वृक्ष	Buchanania latifolia
१८० पिल्लिअ*	क्षिप्त	वि	क्षिप्त	Thrown
२२२ पिवासा	पिपासा	स्त्री	प्यास	Thirst
१५ पिसल्ल	पिशाच	पु	पिशाच	Pishacha
१६५ पिसंग	पिशङ्ग	वि	पीला	Brown
१७२ पिसिअ	पिशित	न	मांस	Flesh
१११ पिसुण	पिशुन	वि	चुगलखोर	Wicked
१७५ पिसुणिअ	पिशुनित- कथित	वि	कहा हुआ चुगली किया हुआ	Spoken

१११ पुप्फलाई	पुष्पलावी	स्त्री	फूलों को चुनने वाली मालिन	Garland-maker
६१ पुप्फिआ*	पुष्पिका	स्त्री	बुआ-फुई फूफी	Father's sister
१४ पुमंसअ	पौंस्न	पु	जुवान	Young man
२ पुमाय	पुमादिन्	पु	पिशाच	Pishacha
१११ पुरओ	पुरतः	अ	आगे	Before, in front
२५ पुरंदर	पुरंदर	पु	इंद्र	Indra
५२ पुरंधी	पुरन्ध्री	स्त्री	स्त्री	Wife
४११ पुररक्ख	पुररक्ष	पु	कोतवाल	Watchman
१ पुरिस	पुरुष	पु	पुरुष	Man
१०५ पुरीस	पुरीष	न	विष्टा-मल	Excrements
११० पुलइअ	पुलकित	वि	रोमांचित	Horripilated
११५ पुलइअ	प्रलोकित-दृष्ट	वि	देखा हुआ	Seen
५११ पुलुट्ठ	प्लुष्ट	वि	जला हुआ	Burnt
१०१ पुलोमतणया	पुलोमतनया	स्त्री	इंद्राणी	Shachi
६८ पुसि*		पु	बाघ	Tiger
२११ पूसअ	पुष्यक	पु	तोता	Parrot
१४८ पेआल*	पेयाल	वि	गोलाकार	*Round*
४२१ पेअवण	प्रेतवन	न	मसाण-स्मशान	Burial-ground cemetry
१० पेआहिव	प्रेताधिप	पु	यम	Yama
४८३ पेरंत	पर्यन्त	पु	छेडा-अंत	End, limit
१५६ पेलव	पेलव	वि	नरम कोमल	Soft
१५५ पेसल	पेशल	वि	सुंदर, रम्य	Charming
५१४ पेसविअ	प्रेषित	वि	भेजा हुआ	Sent
३५४ पेहुण*		न	मोरपीछ	Feather
५५५ पोइअ	प्रोत	वि	पोया हुआ	Stitched, pierced
५५ पोअ	पोत	पु	छोटा बच्चा	Little boy
५८६ पोअ	पोत	पु	वहाण-जहाज	Ship
५२ पोढ	प्रौढ	वि	प्रौढ-समर्थ	Strong, able

१८	बिल्लाय*		न	भिलावाँ	Marking-nut
११	बिराली	बिडाली	स्त्री	बिल्ली	Cat
१८१	बिल्ल	बिल्व	न	बेल का फल	Wood-apple
८८१	बिस	बिस	न	कमल के नाल का तंतु	Lotus-fibre
८११	बीअय	बीजक	न	असन वृक्ष—बीजा का पेड़	Terminalia Tormentosa
१०	बुक्क	बुक्कन	पु	कौआ	Crow
७१४	बुक्का	बुक्का	स्त्री	मुट्ठी—मुष्टि	Fist
१११	बुज्झिअ	बुद्ध	वि	बोधयुक्त	Understood
७१	बुद्धि	बुद्धि	स्त्री	बुद्धि	Intellect
१	बुद्ध	बुद्ध	पु	बुद्धदेव	Shakyamuni-Gautama
१०	बुंदी*		स्त्री	शरीर	Body
११	बुह	बुध	पु	पंडित	Clever
११	बेडी*		स्त्री	स्थूणा—स्तम्भ	Post
११	बोंद्रिअ*		वि	चितकबरा	Variegated
१	बोडकिर*		न	एक प्रकार का छोड़	A sensitive plant
१८	बो(बो)द्रह		पु	जवान	Young man
८	बोरी	बदरी	स्त्री	बेर का पेड़	Jujube tree

भ

११	भइरव	भैरव	वि	भयंकर	Terrible
६	भग्ग	भग्न	वि	रोग से पीड़ित	Broken
४	भंगुर	भङ्गुर	वि	कुटिल—क्षणभंगुर	Crooked, curved
२	भज्जा	भार्या	स्त्री	स्त्री	Wife
५५१	भट्ठ	भ्रष्ट	वि	भ्रष्ट—नष्ट	Lost
१	भणिइ	भणिति	स्त्री	वाणी	Speech
८७१	भत्ता	भर्तृ+भर्त्त	पु	पति—स्वामी	Husband
२६१	भद्दासण	भद्रासन	न	भद्रासन	Thrones
७६	भद्द	भद्र	न	कल्याण	Lucky auspicious
११	भमर	भ्रमर	पु	भौंरा	Bee

१७१ भमास	भमास	पु	विशेष प्रकार की घास	Reed resembling sugar-cane
१९ भमिअ	भ्रमित	वि	घुमाया हुआ	Rvolving
४५७ भमुहा	भ्रू	स्त्री	भौं	Eyebrows
५१४ भरिअ	स्मृत	वि	याद किया हुआ	Remembered
५५१ भरिआइ*		वि	विकसित	Opened
१ भर	भर	पु	समूह	Heap, quantity
१ भलाण	भलन	न	निकाली	Marking-out
७० भवण	भवन	न	घर	House
१ भवाणी	भवानी	स्त्री	पार्वती	Bhavani
११ भव	भव	पु	शिव	Shiva
११ भसण	भषण	पु	भौंकनेवाला-कुत्ता	Dog
११ भसल	भ्रमर	पु	भँवरा	Bee
१९ भसुआ*	भषिता	स्त्री	सियार	Jackal-bitch
११५ भायण	भाजन	न	बर्तन-भाण्ड	Vessel
७८ भाअ	भाग	पुं	भाग	Share
४५७ भाअधेअ	भागधेय	न	भाग्य	Fate luck
७१ भाईरही	भागीरथी	स्त्री	गंगा	Bhagrathi
१८ भावय		न	अच्छा घोड़ा	A horse of good race
१९ भाया	भ्रातृ+भ्रात्र	पु	भाई	Brother
१ भारई	भारती	स्त्री	वाणी-सरस्वती	Speech
२११ भाल	भाल	न	ललाट	Forehead
१ भाव	भाव	पु	पदार्थ भाव	Substance
१ भासा	भाषा	स्त्री	भाषा-वाणी	Speech
७५ भासा	भासा	स्त्री	प्रकाश	Light
१९ भासुर	भासुर	वि	घोर	Terrible
४१ भिक्खु	भिक्षु	पु	मुनि	Ascetic
११ भिंग	भृंग	पु	भँवरा	Bee
१ भिंगारी	भृंगारी	स्त्री	एक प्रकारका कीड़ा	Cricket
१११ भिच्च	भृत्य	पु	नौकर	Servant

१ १ मइल	मलिन	वि	मैला	Dirty
१ मइ	मति	स्त्री	बुद्धि	Intellect
१५६ मउ	मृदु	वि	कोमल	Soft
११ मउड	मुकुट	पु	बालोंका जूट	Toplock
१५१ मउड	मुकुट	पु	मुकुट-मौर-मुकुट	Diadem
८ मउल	मुकुल	न	कलिका	Bud
५१४ मउलिअ	मुकुलित	वि	संकोचित	Closed
१५१ मउलि	मौलि	पु	मुकुट	Diadem
५१ मऊह	मयूख	पु	किरण	Ray
१ मअ	मद	पु	मद-अहंकार	Pride
१ १ मंस	मांस	न	मांस	Flesh
११६ मंसल	मांसल	वि	मांसयुक्त-पुष्ट	Fat
५१ मंसु	श्मश्रु	न	दाढ़ी मूँछ	Beard
१ १ मक्कड	मर्कट	पु	मकड़ी जाल	Spiders
			बनाने वाला कीड़ा	
७५१ मक्खिअ	म्रक्षित	वि	चुपड़ा हुआ-चीकना	Anointed
११४ मग्गओ	मार्गतः	अ	पीछे	Afterwards
५१ मग्गण	मार्गण	पु	बाण	Arrow
६१५ मग्गसिर	मार्गशिरस्	पु	मगसिर मास	Margashirsh
१ मग्ग	मार्ग	पु	रास्ता	Path
७४ मंगलपाढय	मङ्गलपाठक	पु	चारण	Bard
७ मडुल	माडुल	न	बुरा-खराब	Ugly nasty
१ मच्च	मर्त्य	पु	पुरुष	Man
१११ मच्छरि	मत्सरिन्	पु	मत्सरी	Envious, wicked
१ मच्छ	मत्स्य	पु	मछली	Fish
१५ मज्जप	मद्यप	वि	शराब पीने वाला	Drunkard
१५ मज्जारी	मार्जारी	स्त्री	बिल्ली	Cat
१ मज्जिअ	मार्जित	वि	साफ हुआ-धुला	Bathed
१ मज्जिआ	मार्जिता	स्त्री	शक्कर तथा सुगन्धि वस्तु से मिश्रित दूध या दही	Curds mixed with spices
५५१ मज्झे	मध्ये	अ	बीचमें-मध्य में	In the midst

१७६ मंथाण	मन्थान	पु	दही मथने का डंडा-बिलोने का डंडा	Churning stick
५५५ मथिअ	मथित	वि	मथा हुआ-बिलोया हुआ	Churned
१५ मंद	मन्द	वि	मंद-धीमा	Slow Inert
१३१ मंद	मन्द	वि	मूढ	Fool
४१ मंदाइणी	मन्दाकिनी	स्त्री	गंगा	Gange
१५ मन्नु	मन्यु	पु	गुस्सा	Anger
९ मयगल	मदकल	पु	हाथी	Elephant
११ मयण	मदन	न	मोम-मीण	Bee s wax
१०६ मयणाहि	मृगनाभि	स्त्री	कस्तूरी	Musk
७ मयण	मदन	पु	कामदेव	Cupid
१ मय	मत	न	अभिप्राय	Opinion, decision
मयरद्धय	मकरध्वज	पु	कामदेव	Cupid
११६ मयरंद	मकरन्द	पु	मकरंद	Pollen
मयरहर	मकरघर मकरगृह	पु	समुद्र	Ocean
५ मयलंछण	मृगलाञ्छन	पु	चाँद	Moon
६६ मयारि	मृगारि	पु	सिंह	Lion
१ १ मयच्छी	मृगाक्षी	स्त्री	[illegible] नामकी लता	A kind of creeper
६६ मयाहिव	मृगाधिप	पु	सिंह	Lion
मई	मृगी	स्त्री	हरनी	Doe
९ मरट्ट		पु	अहंकार	Pride
१५ मराल	मराल	वि	मंद-धीमा-आलस	Slow Inert
५५ मराल	मराल	पु	हंस	Geese
१४१ मरुअ	मरुक	पु	उद्यान-बाड़ी, बगीचा	Garden
१०० मलयरुह	मलयरुह	न	चन्दन	Sandal
६ १ मलीमस	मलीमस	वि	मैला	Dirty
१५ मल्ल	माल्य	न	माला	Garland
६०० माउलाणी		स्त्री	मामी	Maternal uncle s wif
४२१ मसाण	श्मशान	न	मसाण-श्मशान	Burial-ground
१५ मसिण	मसृण	वि	मंद-धीमा	Slow Inert

१११ मसिण	मसृण	वि	नरम	Soft, smooth
११४ मसिणिअ	मसृणित	वि	चमकाया हुआ–घुटा किया हुआ	Polished
५१८ मह	मह	न	उत्सव	Festival
१७१ महमहिअ	प्रसृत	वि	मघमघता सुगन्धसे मघमघता	Perfumed
२१ महामहा	महाताभ्रा	स्त्री	सियार–शृगाली	Jackal-bitch
५५ महिअ	मथित	वि	मथा हुआ	Churned
५५ महिआ	महिका	स्त्री	प्रातःकाल में धूमायमान वातावरण	Hoar-frost
४११ महिमा	महिम	स्त्री	काले मेघों की घटा	Mass of clouds
१२ महिला	महिला	स्त्री	स्त्री	Woman
१ महिसी	महिषी	स्त्री	भैंस	Buffalo-cow
१ महिहर	महीधर	पु	पर्वत	Mountain
१० मही	मही	स्त्री	पृथ्वी	Earth
८ महीरुह	महीरुह	पु	वृक्ष	Tree
१ महुप्पल	महोत्पल	न	बड़ा कमल	Lotus
१७ महु	मधु	न	मद्य–दारू	Spirituous liquor
११८ महु	मधु	न	शहद–मध	Honey
२१ महुमह	मधुमथ	पु	विष्णु	Vishnu
११ महुअर	मधुकर	पु	भौंरा	Bee
११५ महुर	मधुर	वि	सुन्दर	Sweet
१ महुसार	मधुसार	पु	मद्य–दारू	Spirituous liquor
४१४ महु	मधु	पु	वसंत ऋतु	Spring
१७ माउच्छा	मातृष्वसा	स्त्री	माताकी बहिन–मासी	Mother's sister
१११ माउआ	मातृका	स्त्री	माता समान–सखी	Female friend
८१७ माउसिआ	मातृष्वसा	स्त्री	माता की बहिन–मासी	Mother's sister
४४ मागह	मागध	पु	चारण	Bard
१७४ माढी		पु	बखतर	Armour
१ माणव	मानव	पु	मनुष्य	Man
७५८ माणस	मानस	न	मन–चित्त	Mind
१२७ माणिअ	मानित	वि	अनुभूत	Experienced

८	मामी*	मामी	स्त्री	मामी	Maternal uncle's wife
२ १	मायंग	मातङ्ग	पु	चाण्डाल	Outcast (Mange)
१	मायंग	मातङ्ग	पु	हाथी	Elephant
७०१	मायण्हिया	मृगतृष्णा	स्त्री	मरुमरीचिका किरणों में जलका भ्रम-बालुवे का जल	Mirage
११९	मायंद	माकन्द	पु	आम	Mango tree
१९	माया	माया	स्त्री	कपट	Fraud
८१८	माया	मातृ-माता	स्त्री	माता मां	Mother
२१	मारुअ	मारुत	पु	पवन	Wind
१८	मालई	मालती	स्त्री	मालती की बेल	Jasminum grandiflorum
१ १	माला	माला	स्त्री	माला-पंक्ति-श्रेणि	Line, row
१५	माला	माला	स्त्री	फूलों की माला	Garland
५ १	मालिअ	मालित	वि	सुशोभित	Beautiful
१ १	मालूर	मालूर	न	कपित्थ-कैथ का पेड़ या फल	Wood-apple
२१	मासुरी		स्त्री	दाढ़ी मूंछ	Beard
५	माहविआ	माधविका	स्त्री	एक प्रकार की बेल	Gartnera racemosa
६१	माह	माघ	पु	माघ मास	Magha
६	मिच्छा	मिथ्या	अ	झूठ	Falsely
११९	मिढिआ*		स्त्री	भेड़ी-मेषी	Ewes
४	मित्त	मित्र	पु	सूर्य	Sun
१९	मित्त	मित्र	पु	मित्र दोस्त	Friend
९१	मिअ	मित	वि	परिमित-थोड़ा	Little, small
१४९	मिलाण	म्लान	वि	मुरझाया हुआ	Faded
३५१	मिस	मिष	न	बहाना	Pretence, fraud
६ १	मिहुण	मिथुन	न	जोड़ा-युग्म	Couple
६	मीण	मीन	पु	मछली	Fish
५११	मुक्कमज्जाय	मुक्तमर्याद	वि	मर्यादा रहित	Boundless
११	मुहला	मुखरा	स्त्री	स्वच्छन्द स्त्री	Self willed woman
१११	मुक्ख	मूर्ख	पु	मूरख	Fool

८	रयणायर	रत्नाकर पु	समुद्र	Ocean
५	रयणिनाह	रजनीनाथ पु	चन्द्र	Moon
४	रयणियर	रजनीचर पु	राक्षस	Rakshasa
१	रयणिविराम	रजनी विराम पु	रजनी का पूरा होना–प्रातःकाल	Dawn
७४	रयणी	रजनी स्त्री	रात्रि	Night
११	रयणी	रत्नि पु	हाथ का माप	Distance from the elbow to the closed fist
१	रयय	रजक पु	धोबी	Washerman
११	रयवुट्ठी	रजोवृष्टि स्त्री	रजकी वृष्टि–धूल का बरसाव	Hard shower of dust
११०	रय	रजस् पुं	धूल	Dust
१ १	रव	रव न	शब्द से मधुर	Law and sweet
१४१	रसणा	रसना स्त्री	करधनी–मेखला	Girdle
८५१	रसणा	रसना स्त्री	जीभ	Tongue
११	रसाउ*	रसायुष्–रसाद पु	पुष्परस ही जिसका जीवन है–भँवरा अथवा पुष्परस को खाने वाला–भँवरा	Bee
४ ४	रसायल	रसातल न	रसातल–पाताल	Nether world
७ १	रसाला	रसाला स्त्री	शक्कर तथा सुगंधी वस्तु से मिश्रित दूध या दही	Curds mixed with spices
२११	रस	रस पु	रस	Affection
७१	रस्सि	रश्मि पुं	किरण	Ray
१ १	रहंग	रथाङ्ग न	रथ का पहिया–चक्का	Wheel
१ ८	रहंग	रथाङ्ग पु	चक्रवाक	Brahmani duck
१ १	रहकार	रथकार पु	रथ का कर्ता–बढ़ई–सुथार	Carpenter
१०४	रहस्स	रहस्य न	एकान्त, गुप्त बात	Secret
१११	रह	रथ पु	रथ	Carriage
७४	रत्ती	रात्री स्त्री	रात्रि	Night
१ १	राइ	राजि स्त्री	श्रेणी पंक्ति	Row

१	राईव	राजीव	न	कमल	Lotus
११	रामा	रामा	स्त्री	स्त्री	Woman
१६	राम	राम	पु	बलराम	Balarama
११	रायरुक्ख		न	[illegible] का पेड़	Citron tree
१ १	राया	राजन्+राय	पु	राजा	King
४	राव	राव	पु	आवाज	Noise
१११	रासह	रासभ	पु	गधा	Donkey
१ २	रास	रास	पु	खेलने का रास	Circular dance
१४	राह	राभ	वि	सुन्दर	Lovely
१	राहु	राहु	पु	राहु	Rahu
१	रिउ	रिपु	पु	शत्रु	Enemy
१२१	रिउ	ऋतु	पुन	ऋतु	Season
११	रित्त	रिक्त	वि	खाली-रीता	Empty
१७	रिक्ख	ऋक्ष	न	नक्षत्र	Constellation
१ २	रिच्छ	ऋक्ष	पु	रीछ	Bear
१ ६	रिंछोली		स्त्री	श्रेणी हार	Row line
६	रिट्ठ	रिष्ट	पु	कौआ	Crow
११	रित्त	रिक्त	वि	खाली-रीता	Empty
७	रित्थ	रिक्थ	न	धन	Wealth
१ १	रिद्धि	ऋद्धि	स्त्री	ऋद्धि, धन	Prosperity
४१	रिसि	ऋषि	पु	ऋषि मुनि	Ascetic
४१९	रीढा	रीढा	स्त्री	अनादर-अवहेलना	Contempt
१४	रुइर	रुचिर	वि	सुन्दर-रुचिकर	Lovely
६	रुग्ग	रुग्ण	वि	रोगी	Broken
१११	रुणिरुण*	रुण	वि	भौंरा-भ्रमर की गुंजन	Humming of bees
११६	रुरु	रुरु	पु	हृष्ट पुष्ट	Fat
२६७	रुप्प	रुप्यक	न	चाँदी	Silver
१ १	रुहिर	रुधिर	न	लोहू-खून, रुधिर	Blood
११७	रूढ	रूढ	वि	चोटों-जख्म-घाव का रूढ़ जाना	Healing (of wounds?)

५१८ रूइअ* रोचित न काम का आवेग–उत्कंठा Desired
७८१ रूव रूप न शरीर आकार Body
८१ रूअ* रूत पु रुई कपास Cotton
११ रेणु रेणु स्त्री धूल Dust
५१२ रेल्लिअ* वि खाली हुआ Emptied
१०१ रेवा रेवा स्त्री नर्मदा नदी–रेवा नदी Narmada
८१५ रेसिणिआ* रेषणिका स्त्री कांसे का एक बर्तन Brass cup
१०१ रेहइ रेखते–राजते क्रि वह शोभता है He shines
८२ रोअ रोग पु रोग Disease
९ रोज्झ रोझ पु रोझ नामक जंगली पशु Stag
११ रोमंचिअ रोमाञ्चित वि रोमाञ्चयुक्त Horripilated
१५४ रोमंथ रोमन्थ पु जुगाली करना रोमन्थ करना Chewing the cud
८१४ रोमस रोमश पु पश्मल Hairy
१०८ रोम रोमन् न रुआं Hair
२१६ रोअमिआ रोदमिका स्त्री डाकिन-शाकिन Witches
४१ रोर रोर वि गरीब Poor
४ रोल रोल पु शब्द-कोलाहल-रोला Noise
१५४ रोसाणिअ* मृष्ट वि चमकदार किया हुआ–मांजा हुआ Polished
७१७ रोहिअ रोहित पु रोझ नामक जंगली पशु Stag
५५ रोहिणी रोहिणी स्त्री गाय Cow
५ रोहिणीरमण रोहिणीरमण पु चांद Moon
१११ रोह रोधस् पु किनारा Bank

ल

७११ लउड लकुट पु लकड़ी Club stick
८४ लक्ख लक्ष्य न लक्ष्य Aim, object
११४ लक्खारसिअ लाक्षारसित वि लाख से रंगा हुआ Dyed with lac
१४१ लग्गणअ लग्नक पु जामीन Surety bail
५५५ लग्ग लग्न वि लगा हुआ–संलग्न–जुड़ा हुआ Joined, united

११४ वग्घिअ*	कवलित	वि	खाया हुआ	Eaten
वम्मह	मन्मथ	पु	कामदेव	Cuped
४०३ वम्मीअ	वल्मीक	न	बांबी-राफड़ा	Anthill
९५ वअंस	वयस्य	पु	मित्र	Fnend
१११ वअण	वदन	न	मुख	Face
११८ वअपरिणाम	वयःपरिणाम	पु	उमरका परिणाम-बुढ़ापा	Age
१४१ वज्झी*		स्त्री॰	गिर जानेवाली लता	A kind of creeper
४० वयड*		पु	कोलाहल-भारी अवाज	Noise
३११ वराअ	वराक	पु	गरीब-दीन	Distressed
११४ वरत्ता	वरत्रा	स्त्री	रस्सी-कुए से चमड़े द्वारा जल निकालने का रस्सा	Ropo, girth
९५ वरला	वरला	स्त्री	हंसी	Goose, swan
३११ वराह	वराह	पु	वराह	Boar
४८ वरूहिणी	वरूथिनी	स्त्री	सेना	Army
३१५ वलइअ	वलयित	वि	गोलाकार किया हुआ-लपेटा हुआ-वलय	Placed on
११४ वलक्ख	वलक्ष	वि	श्वेत	White
६१ वलग्ग	अवलग्न	वि	लगा हुआ-आश्रित-चढ़ा हुआ	Ascended
३०३ वलयबाहु	वलयबाहु	पु	चूड़ा-हाथ में पहरनेका चूड़ा	Bracelet
३०३ वल्लई	वल्लकी	स्त्री	वीणा	Lute
१५१ वल्लर	वल्लर	न	गहन वन	Thicket
१५६ वल्लर*	वल्लर	न	अरण्य में आया हुआ क्षेत्र	Field in the forest
१४६ वल्लरी	वल्लरी	स्त्री	लता-बेल	Creeper
१०७ वल्लव	वल्लव	पु	गिरीमें पाला-ग्वाला	Cowherd
१४६ वल्ली	वल्ली	स्त्री	बेल-लता	Creeper
४०३ वसण*	वसन	न	कपास	Cotton
११८ वसण	वसन	न	वस्त्र	Dressed
४७१ वसण	व्यसन	न	दुःख	Misfortune
४१४ वसंत	वसन्त	पु	वसंत ऋतु	Spring
१९९ वसह	वृषभ	पु	बैल	Bull

४०४ वारिज्ज	वय्य	न	विवाह	Marriage
१०२ वारी	वारी	स्त्री	हाथी बाँधने का स्थान	Pit for catching elephants
१०८ वारुणी	वारुणी	स्त्री	मद्य-दारू	Spirituous liquor
१५१ वालअ	वालक	पु	सुगन्धी वाला—जल को ठंडा व सुवासित करने का एक प्रकार का घास	Kind of Andropogon
१०१ वालहि	वालधि	पु	पूछ	Tail
११५ वाल	वाल	पु	बाल केश	Hair
११९ वालिअय	वालितक	वि	मोड खाया हुआ	Turned round
४०० वालुंक	वालुंक	न	चीभडा	Cucumber
९११ वावडया॰	व्यापृतता	स्त्री	विपरीत मैथुन—स्त्री पुरुष की विपरीत रति क्रीडा	Improper reverse
११८ वास	वासस	न	कपडा	Dress
७११ वास	वर्ष	न	बरसात	Rain
४१० वासर	वासर	पु	दिवस	Day
१८ वासवसुअ	वासवसुत	पु	इन्द्र का पुत्र-जयंत	Jayanta
९५ वासव	वासव	पु	इन्द्र	Indra
५० वासहय	वर्षाहत	वि	बरसादसे नष्ट	Rained on
४१५ वासारत्त	वर्षारात्र	पु	वर्षाऋतु	Rainy season
४५ वाह	वाह	पु	घोडा	Horse
८१५ वाह	व्याध	पु	शिकारी	Hunter
४८ वाहिणी	वाहिनी	स्त्री	सेना	Army
८११ वाहित्त	व्याहृत	वि	बोलाया हुआ	Called
८२ वाहि	व्याधि	पु	रोग, व्याधि	Disease
११९ विइअ	विदित	वि	जाना हुआ	Known
५४१ विउडिअ	विघुटित	वि	विनाशित	Destroyed
१५० विउल	विपुल	वि	विपुल-अधिक	Extensive
९९ विउस	विदुष	पु	विद्वान	Clever
४६१ विक्खंभ	विष्कम्भ	पु	विस्तार	Extent, breadth
११३ विक्खाअ	विख्यात	वि	प्रसिद्ध	Famous

११२	विण्णाय	विज्ञात	वि	विशेषरूप से जाना हुआ	Known
११४	विण्णास	विन्यास	पु	स्थापन	Arrangement
११६	विप्प	विप्र	पु	ब्राह्मण	Brahman
४६	विप्पिअ	विप्रिय	न	अप्रिय–अपराध	Fault, offence
१४	विबुह	विबुध	पु	देव	God
११६	विब्बोअ	विब्बोक	पु	विलास	Coquetry
११६	विब्भम	विभ्रम	पु	विलास	
६११	विमग्गिअव्व	विमार्गितव्य	वि	गवेषित	Sought after
६६६	विमुक्क	विमुक्त	वि	विमुक्त	Freed, loosened
८१८	विवइ*	विसंवदित	वि	अप्रमाणित	Disputed
११०	वियड	विकट	वि	विकट	Large
४१४	विअणा	वेदना	स्त्री	पीडा–दर्द	Pain
८११	विअत्थण	विकत्थन	न	आत्मश्लाघा	Boasting
६१६	विअलिअ	विगलित	वि	गला हुआ	Loose
१४४	विअसिअ	विकसित	वि	विकसित	Opened
६६२	विआण	वितान	न	कपड़े की चाँदनी–चन्दुआ	Awning
११२	विरइअ	विरचित	वि	रचा हुआ	Made, composed
६०	विरमालिअ*	प्रतीक्षित	वि	प्रतीक्षा किया हुआ	Expected
११४	विरआ*	विरला	स्त्री	छोटी नदी–नेरा	Shallow river
		विरजा (?)			Stopping in the dry season
६११	विरल्लिअ*	तत	वि	विस्तीर्ण	Stretched
११२	विरायए	राज+ विराजते	क्रि	वह शोभता है	He shines
८ २	विराअ	विलीन	वि	विलीन–पिघला हुआ	Dissolved
१	विरिंचि	विरिंचि	पु	ब्रह्मा	Brahma
६६६	विरोलिअ*	विलोडित	वि	विलोड़ा हुआ–मथित	Churned
७१४	विलअ	विलय	पु	सूर्य का अस्त होना	Sunset
१२	विलया	वनिता	स्त्री	स्त्री	Woman
६६४	विलविअ	विलपित	स्त्री	विलपित–विलाप किया हुआ	Lamenting
११६	विलास	विलास	पु	विलास	Sport, coquetry

५	संदामिअ	संदामित	वि	बंधा हुआ	Fettered
५१	संदिट्ठ	संदिष्ट	न	संदिष्ट किया हुआ	Pointed out
११८	संदिद्ध	संदिग्ध	वि	संदेह किया हुआ	Doubtful
११	संधुक्किअ*	प्रदीप्त	वि	जला हुआ	Shining
१८	संदोह	सन्दोह	पु	समूह	Heap, multitude
११	संधुक्किअ*	प्रदीप्त	वि	जला हुआ	Shining
१११	सन्त	श्रान्त	वि	थका हुआ	Tired
११	सण्णा	संज्ञा	स्त्री	नाम	Name
१८१	सप्पि	सर्पिस्	न	घी	Butter
५८	सप्प	सप्प	न	कुमुद	White lotus
१८७	सबर	शबर	पु	भील	Shabara
११७	सबल	शबल	न	चितकबरा	Variegated
७१	सब्भ	सभ्य	पु	सभ्य	Assistant at an assembly assessor
११३	समय	समय	पु	समय-वचन-आगम	Time
८१	समय	समय	पु	सम्प्रदाय-मत	Decision
१४	समजल	श्रमजल	न	पसीना	Sweat
४१	समण	श्रमण	पु	साधु	Ascetic
५१	समत्थ	समर्थ	वि	बलवान	Able
११९	समन्ता	समन्तात्	अ	चारों तरफ	All round
४१	समर	समर	न	लड़ाई	Battle
४४१	समसीसी	समशीर्षी	स्त्री	हरिफाई स्पर्धा	Resemblance
११७	समाण	समान	वि	समान	Equal, similar
४११	समास	समास	पु	संक्षेप	Collection, abbreviation
११८	समी	शमी	पु	शेम-सिंग-बेल की फली	Pod
११	समीर	समीर	पु	पवन	Wind
८	समुद्द	समुद्र	पु	समुद्र	Ocean
५१८	समुवागम	संमुखागत	वि	सामने आया हुआ	Met, encountered
११	सम	सम	वि	समान	Equal, similar
४११	समोसिअ	सम्+आ+ वसित-समोसित	पु	पड़ोसी	Neighbour

१	सरोरुह	सरोरुह	न	कमल	Lotus
[illegible]	सलह	शलभ	पु	पतंगिया	Moth
१५	सलिल	सलिल	न	पानी	Water
८	सलिलरासि	सलिलराशि	पु	समुद्र	Ocean
१११	सलिलकीडण	सलिलक्रीडन	पु	जलक्रीडा	Sporting in the water
[illegible]	सवण	श्रवण	पु	कान	Ears
[illegible]	सव	शव	न	शव मुर्दा	Corpse
[illegible]	सवाग	श्वपाक	पु	चण्डाल	Outcast
११८	सविअ	शप्त	वि	शाप दिया हुआ	Cursed reviled
१११	सविह	सविध	न	निकट–पास	Near
१११	सव्वत्तो	सर्वतः	अ	चारों तरफ	All round
[illegible]	सव्वरी	शर्वरी	स्त्री	रात्री	Night
५	ससहर	शशधर	पु	चन्द्र	Moon
[illegible]	ससा	स्वसृ–स्वसा	स्त्री	बहिन	Sister
५	ससि	शशिन्	पु	चन्द्र	Moon
१ १	सहइ	राजते–राजत	क्रि	वह शोभता है	He shines
[illegible]	सहयर	सहचर	पु	सहायक	Companion
११५	सहयार	सहकार	पु	आम	Mango tree
१	सहर	शफर	पु	मछली	Fish
१	सहसत्ति	सहसेति	अ	शीघ्र एकाएक	Suddenly
१	सहसा	सहसा	अ	,,	Suddenly
५१	सह	सह	वि	समर्थ	Able
[illegible]	सहा	सभा	स्त्री	सभा	Assembly
१८	सहाअ(य)	सहाय	पु	सहायक	Companion
[illegible]	सहासय	सभासद	पु	सभासद	Assessor
११	सहिअ	सभिक	पु	जूआ खेलने वाला	Gambling-house keeper
१	सहि	सखि	पु	पुरुष मित्र	Friend
१११	सही	सखी	स्त्री	स्त्री मित्र	Femail friend

४८१	सासण	शासन	न	आज्ञा	Order
४१	सासय	शाश्वत	वि	नित्य	Constantly
१०४	सास	सस्य	न	घास	Crop
६१८	सासू	श्वश्रू	स्त्री	सासू	Mother-in-law
७१७	साहडिअ	संवृत	वि	समेटा हुआ	Covered, ibidem
७१७	साहरिअ	संवृत	वि	„	„
१११	साहा	शाखा	स्त्री	शाखा	Branch
९६	साहामय	शाखामृग	पु	बन्दर-वानर	Monkey
६६२	साहिज्ज	साहाय्य	न	सहायता	Help
१७५	साहिअस	शासितक	वि	कहा हुआ	Spoken
८	साहि	शाखिन्	पु	वृक्ष	Tree
५६१	साहीण	स्वाधीन	वि	स्वतंत्र	Independent
१११	साहुली*		स्त्री	शाखा	Branch
११७	साहुली*		स्त्री	कटीवस्त्र	Lower dress
७४	साहु	साधु	पु	साधु	Saint
१६३	सिएअर	सितेतर	वि	काला	Black
६८	सिहंडिआ*		स्त्री	चोटी	Toplock
६११	सिग्गु	शिग्रु	पु	सरगवा का पेड़	Hyperanthera moringa
४८१	सिग्घं	शीघ्रम्	अ	जल्दी	Quick
११२	सिंग	शृङ्ग	न	शिखर	Top
६११	सिंग	शृङ्ग	न	सींग	Horn
११	सिचय	सिचय	न	कटीवस्त्र	Lower(?)garment
११२	सिंजिर	शिञ्जिर	न	अव्यक्त शब्दायमाना	Noisy anklet
५५	सिण्हा*		स्त्री	कुहरा	Hoar-frost, fog
१७७	सिक्क	शैक्य	न	धनुष्य की डोरी	Rope, string
११	सित्थय	सिक्थक	न	मोम-मीण	Bees wax
१७५	सिट्ठ	शिष्ट	वि	कहा हुआ	Spoken
१९	सिद्धि	सिद्धि	स्त्री	मुक्ति	Final liberation
८७४	सिंदी		स्त्री	खजूरी	Date-palm
११८	सिंदोल*		न	खजूर	Date-fruit

सिहंड*	शिखण्ड	पु	चोटी	Toplock
सिहर	शिखर	न	शिखर	Top
सिहरि	शिखरिन्	पु	पहाड़	Mountain
सिहा	शिखा	स्त्री	चोटी	Toplock
सिहा	शिखा	स्त्री	दीपशिखा	Flame
सिहिण	शिखिण	पु	स्तन	Breast
सिहि	शिखिन्	पु	अग्नि	Fire
सिहि	शिखिन्	पु	मोर	Peacock
सीमा	सीमा	स्त्री	सीमा-हद	Boundary
सीमंतिणी	सीमन्तिनी	स्त्री	स्त्री	Woman
सीमंतिअ	सीमन्तित	वि	बराबर दो भाग किया हुआ	Parted divided
सीअत्त	शीयत	वि	सोता हुआ	Lying down, sleeping, falling, perishing
सीर	सीर	न	हल	Plough
सीरिअ	शीर्ण	वि	टूटा हुआ छिन्न-भेदा हुआ	Split torn
सीरि	सीरिन्	पु	बलराम	Balarama
सील	शील	न	स्वभाव	Character
सीसड़*		न	चीभड़	Cucumber
सीस	शीर्ष	न	सीस-माथा	Head
सीस	शिष्य	पु	शिष्य-चेला-शिक्षु	Pupil
सीहर	सीकर	पु	पानी की बूंदें	Spray
सीहासण	सिंहासन	न	सिंहासन	Throne
सीह	सिंह	पु	सिंह	Lion
सीहु	सीधु	पु	मद्य-दारू	Rum
सुइ	श्रुति	स्त्री	ऋग्वेदादि वेद	Veda
सुकय	सुकृत	न	अच्छा काम	Merit, fate
सुक्क	शुक्र	पु	शुक्र का ग्रह	Shukra
सुगय	सुगत	पु	बुद्ध	Shakyamuni
सुढिअ*		वि	थका हुआ-भार से दबा हुआ	Tired
सुणासीर	शुनासीर	पु	इन्द्र	Indra

७११	सुअंत	स्वपत्	वि	सोता हुआ	Sleeping
१४१	सुसिअ	शुष्क	वि	सूखा	Faded
१५६	सुहफंस	सुखस्पर्श	वि	जिसका स्पर्श सुखरूप हो नरम	Soft
४१७	सुह	सुख	न	सुख	Pleasure
१४	सुहय	सुभग	वि	सुंदर	Lovely
१८३	सुहा	सुधा	स्त्री	अमृत	Nectar
४२	सुहेल्ली	सुखकेली	स्त्री	सुहेल-सुख क्रीडा-आमोद	Pleasure
१४५	सूइअ	सूचित	वि	कहा हुआ–सूचित किया हुआ	Spoken
६११	सूअ	सूत	पु	रथ हांकने वाला	Charioteer
४१४	सूरत्थमण	सूरास्तमन	न	सूर्य का अस्त होना	Sunset
११	सूलि	शूलिन्	पु	महादेव	Shiva
१७०	सेअ	स्वेद	पु	पसीना	Sweat
४८	सेणा	सेना	स्त्री	लश्कर	Army
६११	सेण	श्येन	पु	बाज पक्षी	Falcon
११४	सेअ (य)	श्वेत	वि	सफेद	White
११३	सेयालअ*		पु	खेती करनेवाला	Husbandman
६	सेरिही	सैरिभी	स्त्री	भैंस	Buffalow-cow
१	सेलसुआ	शैलसुता	स्त्री	पार्वती	Parvati
७९	सेल	शैल	पु	पहाड	Mountain
११५	सेवअ	सेवक	पु	नौकर चाकर	Servant
१२५	सेवाल	शैवाल	न	सेवार–सेवाल	Duckweed
१३५	सेवल	शैवल	न		
१४९	सेहर	शेखर	पु	चोटी	Tufts, garland
७०१	सोज्झअ	शोधक	पु	धोबी	Washerman
१६६	सोण	शोण	वि	लाल	Red
८१५	सोंड	शौण्ड	न	दारूपीआ	Drunkard
१४२	सोणिअ	शोणित	न	लोहू-रक्त	Blood
१५६	सोमाल	सुकुमार	वि	नरम	Soft
१८१	सोआमणी	सौदामिनी	स्त्री	बिजली	Lightning

७३५ हरिआली	हरिताली	स्त्री	दूब हरियाली	Durva grass
७० हलबोल°		पु	कोलाहल	Noise, tumult
१०१ हल	हल	न	हल	Plough
८३० हलहलअ°		पु	त्वरा	Hurry
१११ हलिअ	हलिक	पु	खेती करने वाला—हल चलाने वाला	Husbandman
७२ हल्लीसअ	हल्लीसक	पु	गोपांगनाओं का चक्र में फिरते खेलन का रास-रासड़ा रास वगैरे	Circular dance
९ हव्ववाह	हव्यवाह	पु	अग्नि	Fire
११५ हस्स	ह्रस्व	वि	बौना	Dwarf
१५ हार	हार	पु	हार	Pearl-string
१०८ हाला	हाला	स्त्री	मद्य-दारू	Spirituous liquor
७१४ हालाहल	हालाहल	पु	एक प्रकारका विष-सामग्री	Halahala
१११ हाहा	हाहा	अ	विषाद सूचक	Alas !
११० हिज्जो	ह्यस्	अ	गत कल-बीती हुई कलका समय	Yesterday
४५८ हिरी	ह्रीण	वि	लज्जित	Shame
१११ हित्थ	त्रस्त	वि	भयभीत	Afraid
४१८ हिम	हिम	न	बरफ	Frost, snow
५ हिमयर	हिमकर	पु	चन्द्र	Moon
११० हियय	हृदय	न	हृदय	Heart
५५१ हिअ	हृत	वि	हरा हुआ—ले लिया हुआ	Taken away
५५३ हिरिबेर	ह्रीबेर	पु	पानी को सुगन्धी व ठंडा करने वाला एक प्रकार का घास	Kind of andropogon
११५ हुडुअ°		पु	ध्वजा	Banner
५१५ हुण्डी°	हुण्डी	स्त्री	थट	Troop, assemblage
९ हुअवह	हुतवह	पु	अग्नि	Fire

	शब्द	मूल	लिंग	अर्थ	
९	हुताशन	हुताशन	पु	,,	Fire
१११	हेमंत	हेमन्त	पु	मार्गशिर और पौष मास—हेमंत ऋतु	Winter
८	हेम	हेमन्	न	हेम सोना	Gold
१०३	हेरंब	हेरम्ब	पु	गणेश	Ganesha
१११	हेला	हेला	स्त्री	विलास	Sport, coquetry
४११	हेला	हेला	स्त्री	अनादर	Disrespect
११	हो	हो	अ	विस्मयसूचक	Ah !

★